आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
वर्ष : 69 ★ अंक : 03 ★ मूल्य : 10 रु.
10 मार्च, 2012 ★ चैत्र, 2068

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं।।

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

मंगल-मूल धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
महिमामयी यह 'जिनवाणी'।।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

दूध की धरती खून से लथपथ..!

गोमांस निर्यात का कड़वा सच

सन २००६-०७ में
4,94,505 मेट्रीक टन गोमांस निर्यात

सन २००७-०८ में
4,83,478 मेट्रीक टन गोमांस निर्यात

सन २००८-०९ में
4,62,750 मेट्रीक टन गोमांस निर्यात

सन २००९-१० में
3,11,305 मेट्रीक टन गोमांस निर्यात

व्हिएतनाम, मलेशिया, फिलिपाइल्स, कुवैत, अंगोला, ओमन, इराक, कोंगो, सिरिया; इरान, अर्मेनिया, कोटडआयवार, मॉरिशस, कोमोरोस, येमेन, इक्वतुलजिनिया, ब्रुनै, उझबेकिस्तान जैसे कई

इजिप्त, सौदी अरबिया, अरब अमिराती, जॉर्डन, जॉर्जिया, लेबनॉन गॅबॉन, सेनेगल, घाणा, कतार पाकिस्तान, बहीरन, अझवैजन, तजाकिस्तान, अल्बेनिया, नामिबिया, चीन, अफगाणिस्तान, देशो में यह मांस निर्यात हो रहा है।

पवित्र भारतभूमिपर कब तक चलेगा यह हिंसक दौर ?

अहिंसा तीर्थ
रतनलाल सी. बाफना गो सेवा अनुसंधान केंद्र
'अहिंसा तीर्थ', कुसुंबा, अजंता रोड, जलगाँव फोन : 0275-2270125, सुविधा केंद्र : 2220212

सौजन्य

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स

''नयनतारा'', सुभाष चौक, जलगाँव ✆ 0257-2223903

''स्वर्णतीर्थ'', आकाशवाणी चौक, जालना रोड, औरंगाबाद ✆ 0240-2244520

''नयनतारा इस्टेट'', उन्टवाडी रोड, संभाजी चौक, नासिक ✆ 0253-2315644

जहाँ विश्वास ही परंपरा है। *मानवीय आहार शाकाहार।*

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 संरक्षक
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 संस्थापक
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक
विरदराज सुराणा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 सम्पादक
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर-342005 (राज.), फोन-0291-2730081
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 सह-सम्पादक
नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-21/2012-14
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

तुलिया विसेसमादाय,
दयाधम्मस्स खंतिए।
विप्पसीएज्ज मेहावी,
तहाभूएण अप्पणा।।
-उत्तराध्ययन सूत्र, 5.30

उभय मरण की तुलना कर,
ले दया धर्म अरु क्षमा विशेष।
प्रसन्नता रखकर मेधावी हो,
तथाभूत मन जीवन-शेष।।

मार्च, 2012
वीर निर्वाण संवत्, 2538
चैत्र, 2068

वर्ष 69 अंक 3

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 120 रु.
आजीवन देश में : 500 रु.
आजीवन विदेश में : 12500 रु.
स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
संरक्षक सदस्यता : 11000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	जलगांव की महावीर जयन्ती	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	9
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	10
	वाग्वैभव(2)	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	11
प्रवचन-	दान का मन बनाएँ	-महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.	12
	सुपुण्य से मिलता है धर्म का पथ	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.	17
प्रासङ्गिक-	महावीर वाणी का वैशिष्ट्य	-श्री दुलीचन्द जैन 'साहित्यरत्न'	27
अंग्रेजी-स्तम्भ-	Religious Harmony and Fellowship of Faiths: A Jaina Perspective (5)	*-Prof. Sagarmal Jain*	32
संगोष्ठी आलेख -	आध्यात्मिकता और नैतिकता	-डॉ. पी.सी. जैन	35
	चारित्रिक पूर्णता ही भ्रष्टाचार की शून्यता	-डॉ. दिलीप सक्सेना	38
	Transgression of Vows	*-Prof. J.R. Bhattacharyya*	45
	Spirituality and Corruption	*-Sh. Shrikant Jain*	57
पत्र-स्तम्भ -	दीवार जब टूट जाती है(13)	-आचार्य विजयरत्नसुन्दरसूरिजी म.सा.	60
युवा-स्तम्भ-	क्षण-क्षण का उपयोग करें	-श्रीमती बीना जैन	72
नारी-स्तम्भ-	माइक्रोवेव : वरदान या अभिशाप?	-डॉ. ओ.पी. वर्मा	75
स्वास्थ्य-विज्ञान-	महावीर का स्वास्थ्य दर्शन	-डॉ. चंचलमल चोरडिया	82
बाल-स्तम्भ -	जीओ और जीने दो	-श्री धर्मचन्द लोढ़ा	88
आत्माभिव्यक्ति-	गुरु में पाए भगवान के दर्शन	-श्रीमती नीलू डागा	91
कविता/गीत-	चिता जलने से पहले	-श्रीमती सुशीला गोलेच्छा	16
	खुशहाल हो धरती का आंगन	-श्री सुनित कुमार जैन	34
	गुरु का सुमिरण	-श्री गजेन्द्र कुमार जैन	37
	मानव! तुमने चमन उजाड़ा	-प्रवर्तक श्री गणेशमुनि शास्त्री	65
	आज के जमाने का, यह हाल देखिए	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	68
	अब तो छेड़ो भाया जंग	-डॉ. दिलीप धींग	70
	हीरा गुरुवर प्यारा है	-श्री धर्मचन्द जैन	74
	सौहार्द से जीएँ सदा	-श्री देवेन्द्रनाथ मोदी	81
	आचार्य हीरा को नमन	-श्री नमन मेहता	101
विचार-	Difficulties and Problems	*-Ms. Minakshi Surana*	26
	'भटकती युवापीढ़ी' पर विचार	-श्री नरेन्द्र कक्कड़	69
	जिनवाणी का सच्चा उपासक	-श्री नितेश नागोता	96
	सामायिक का महत्त्व	-सौ. कमला सिंघवी	104
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	95
श्राविका-मण्डल-	मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (24)	-संकलित	97
परिणाम-	अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक बोर्ड का परिणाम	-संकलित	102
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन		107
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		118

सम्पादकीय

जलगाँव की महावीर जयन्ती

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

चैत्र शुक्ला त्रयोदशी 5 अप्रेल 2012 को महावीर जयन्ती उपस्थित हो रही है। प्रतिवर्ष हम महावीर जयन्ती मनाते हैं। अनेक ग्राम-नगरों में विशेष आयोजन होते हैं। गतवर्ष प्रभु महावीर की जन्म-जयन्ती पर जलगाँव नगर के सकल जैन समाज के संगठन जैन नवयुवक मण्डल के आमंत्रण पर जलगाँव जाना हुआ। वहाँ तीन दिनों तक उत्सव मनाए जाते हैं। चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को प्रातःकाल प्रभात फेरी एवं जुलूस का आयोजन होता है तथा फिर धर्मसभा में विभिन्न वक्ताओं के व्याख्यान होते हैं।

जलगाँव नगर एक धर्मनिष्ठ नगर है। यहाँ की अनेक विशेषताएँ हैं। यहाँ पर सभी जैन सम्प्रदायें मिलकर महावीर जयन्ती का आयोजन करती हैं एवं सबकी उसमें भागीदारी होती है। यही नहीं चातुर्मास का आयोजन हो अथवा किन्हीं भी संत-सतियों का आगमन, प्रायः सभी सम्प्रदायों के लोग वहां पहुँचते हैं एवं प्रवचन श्रवण करते हैं। जलगाँव में आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज, आचार्य श्री नानालाल जी महाराज, आचार्य श्री हीराचन्द्र जी महाराज, ज्ञानगच्छाधिपति श्री प्रकाशचन्द्र जी महाराज, आचार्य श्री ज्ञानमुनि जी महाराज, शासनप्रभाविका श्री मैनासुन्दरी जी महाराज, विदुषी श्री नानूकंवर जी महाराज, विदुषी श्री कंचनकंवरजी महाराज, मरुधर ज्योति महासती श्री मणिप्रभा जी महाराज आदि अनेक आचार्यों एवं प्रमुख संत-सतियों के चातुर्मास हुए हैं। विभिन्न संघों की भावात्मक एकता का यह नगर एक उदाहरण है। यह विशेषता तभी सम्भव है जब समाज के अग्रणी श्रावकों में सूझबूझ, उदारता, सहिष्णुता एवं व्यापक सोच हो।

दूसरी विशेषता यहाँ पर यह दिखाई दी कि यहाँ पुरुषों के साथ महिलाएँ भी कंधे से कंधा मिलाकर धर्मकार्य में सहयोग करती हैं। यही नहीं वे पुरुषों को भी धर्मकार्य से जोड़ती हैं एवं अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती हैं। यहाँ की अनेक महिलाएँ वरिष्ठ स्वाध्यायी हैं, जिन्हें थोकड़ों एवं आगमों का ज्ञान है तथा निरन्तर स्वाध्याय कर अपना ज्ञानवर्द्धन करती हैं। सुशील बहू मण्डल की

लगभग 400 बहनें इसका उदाहरण हैं जो प्रत्येक सोमवार एवं बुधवार को ज्ञानार्जन करती है। स्वाध्यायी महिला मण्डल मंगलवार एवं गुरुवार को विशेष अध्ययन में संलग्न है। आचार्य श्री हीराचन्द्र जी महाराज की प्रेरणा से भाऊ मण्डल द्वारा प्रत्येक रविवार को सामूहिक सामायिक का जो क्रम प्रारम्भ किया गया था, वह अनवरत रूप से आज भी चल रहा है। युवक भी इसमें सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं। जिन श्रावकों ने पौषध का क्रम प्रारम्भ किया था, वे आज भी पौषध करते हैं। भाऊ मण्डल के अन्तर्गत प्रति रविवार बालकों में धर्म संस्कार हेतु 20 पाठशालाएँ चल रही हैं। जलगाँव जिले में भी राजमल लखीचन्द की ओर से पाठशालाएँ संचालित हैं। संकल्प की दृढ़ता एवं उसकी क्रियान्विति के प्रति प्रतिबद्धता जलगाँववासियों की विशेषता है।

जलगाँव की यह भी विशेषता है कि यहाँ पर संतों अथवा सतियों का एक ही प्रमुख चातुर्मास होता है, जिसमें सभी सम्प्रदायों के श्रावक-श्राविका धर्माराधना का लाभ लेते हैं। एक अन्य विशेषता यह है कि युवकों के द्वारा आयोजित कार्यक्रमों को संघ का पूरा सहयोग एवं मार्गदर्शन रहता है।

एकता, सौहार्द एवं समन्वय के साथ जलगाँव में जो धार्मिक कार्यक्रम सम्पन्न होते हैं, उसमें प्रमुख रूप से श्री सुरेश दादा जैन, श्री ईश्वरलाल जी ललवानी, श्री भंवरलाल जी जैन, श्री रतनलाल जी बाफना एवं श्री दलीचन्द जी चोरडिया की महती भूमिका रहती है। श्री महावीर जैन स्वाध्याय विद्यापीठ के प्राचार्य श्री प्रकाशचन्द जी जैन यहाँ की धार्मिक एवं ज्ञानवर्द्धक प्रवृत्तियों की सजीवता में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं। महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ भी जलगाँव की एक उपलब्धि है जो सन् 1979 से कार्यरत है एवं सैकड़ों स्वाध्यायियों को पर्युषण में पर्वाराधन हेतु दूसरे ग्राम-नगरों में भेजता है। शासनसेवा समिति के संयोजक श्री रतनलालजी बाफना द्वारा स्थापित अहिंसा तीर्थ भी विशिष्ट है, जो अनेक अजैनों को भी शाकाहार एवं सेवा से जोड़ रहा है।

महावीर जयन्ती पर आयोजित जुलूस में तथा सभा में लगभग 4000 लोग थे। सभी पुरुष श्वेत वेशभूषा में एकरूपता का संदेश दे रहे थे। श्राविकाओं में भी प्रायः एक जैसी साड़ियाँ दिखाई दे रही थीं। सभा के मंच को विधायक श्री सुरेश दादा जैन, श्री रतनलाल जी बाफना, श्री दलीचन्द जी चोरडिया तथा जैन नवयुवक मण्डल के अध्यक्ष श्री प्रवीण जी पगारिया एवं अन्य पदाधिकारी सुशोभित कर रहे थे।

प्रभु महावीर पर प्रायः यह आक्षेप लगाया जाता है कि वे निवृत्तिवादी

हैं, उनके उपदेशों का सम्बन्ध व्यक्ति के मोक्ष से है, समाज के सुधार से नहीं। किन्तु गहनता से विचार किया जाए तो ज्ञात होगा कि महावीर को समाज की ही नहीं विश्व के प्राणिमात्र की चिन्ता है। उनका अहिंसा का संदेश परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व के सभी प्राणियों की जीवन-रक्षा के लिए उपयोगी है। वे व्यक्ति में अन्य प्राणियों के प्रति संवेदनशीलता जागृत करने के लिए अनेक तर्क देते हैं तथा सबके प्रति मैत्रीभाव उत्पन्न करने की प्रेरणा करते हैं। यह हमारी भूल है कि हम हिंसा का त्याग मात्र इसलिए करते हैं कि उससे हमारे कर्मों का बंध न हो। हिंसा-त्याग का यह एक पक्ष है। दूसरे जीवों को पीड़ित किए जाने पर उन्हें भी मेरे समान दुःख होता है, इसलिए मैं दूसरे को पीड़ित न करूँ, यह अहिंसा की प्रेरणा का दूसरा पक्ष है। जैसे मुझे शोषण प्रिय नहीं, अंगच्छेद पसंद नहीं, अपमान पसंद नहीं उसी प्रकार अन्य प्राणियों को भी यह सब प्रिय नहीं है। सबको अपना प्राण प्रिय है, जीवन प्रिय है, इसलिए हमें सभी प्राणियों के जीवन की रक्षा को अपना कर्त्तव्य समझना चाहिए। यह महावीर की सामाजिक दृष्टि है। इससे व्यक्ति को जहाँ कर्मबन्ध नहीं होता, वहाँ समाज के प्रति भी उसका व्यवहार प्रशस्त होता है। जो लोग धर्म को व्यक्तिगत मानते हैं तथा समाज के स्तर पर उसका कोई प्रभाव नहीं मानते हैं, वे महावीर के धर्म को ठीक से नहीं जानते हैं।

अहिंसा त्रस और स्थावर सभी प्राणियों के लिए कल्याणकारिणी है- **अहिंसा तस-थावर-सव्व भूयखेमंकरी**। अहिंसा का एक रूप है- किसी की हिंसा न करना तथा दूसरा रूप है- सबके प्रति मैत्रीभाव का व्यवहार करना। **मित्ती मे सव्वभूएसु** वाक्य प्रेरणा करता है कि समस्त जीवों के प्रति मेरा मैत्रीभाव हो।

भगवान् महावीर का कोई भी उपदेश क्यों न हो उसके दो आयाम हैं। एक आयाम व्यक्ति को अपनी निजी समस्याओं से छुटकारा दिलाता है तो दूसरा समाज और विश्व में मैत्री का संचार करता है। असत्य भाषण का त्याग जहाँ व्यक्ति को व्यक्तिगत दोषों से बचाता है वहाँ समाज में विश्वसनीयता का आधार बनता है। अचौर्य व्रत का आराधन जहाँ व्यक्ति की वृत्तियों को निर्मल करता है वहाँ समाज में ठगी एवं चोरी को रोकता है, जिससे एक सुन्दर समाज का निर्माण होता है। मैथुन परिमाण अथवा ब्रह्मचर्य के पालन से जहाँ व्यक्तिगत विकारों का नियन्त्रण होता है वहाँ समाज में सदाचार को बल मिलता है। परिग्रह परिमाण व्रत जहाँ व्यक्ति के लोभ और इच्छाओं पर नियन्त्रण करता है वहाँ सामाजिक और वैश्विक स्तर पर सबके लिए वस्तुओं की सुलभता को निर्धारित

करता है। इस प्रकार भगवान् महावीर के द्वारा उपदिष्ट सिद्धान्त आध्यात्मिक स्तर पर व्यक्ति को विशुद्धि प्रदान करते हैं वहाँ सामाजिक और वैश्विक स्तर पर सभी मनुष्यों और प्राणियों को सुखपूर्वक जीवनयापन का अवसर प्रदान करते हैं।

अनेकान्तवाद का सिद्धान्त यद्यपि वस्तु के स्वरूप की विवेचना करता है तथापि उसका उपयोग आचरण की पवित्रता के लिए भी उपयोगी है। यह सिद्धान्त जहाँ व्यक्ति को सम्यक् दृष्टि प्रदान करता है तथा व्यक्तिगत शांति को सुनिश्चित करता है वहाँ परिवार एवं समाज में सामंजस्य का साधन बनता है। संसार की वस्तुओं का उपयोग मानव के अधिकार में है, किन्तु उनका बेतहाशा उपभोग एवं शोषण उसकी भूल है। मनुष्य परस्पर सहयोगी बनें तो यह न्यायसंगत है, किन्तु एक-दूसरे का शोषण (Exploitation) करें तो यह अन्याय की कोटि में आता है। 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' सूत्र से यही प्रेरणा लेनी चाहिए कि हम अच्छे कार्य में एक-दूसरे के सहयोगी बनें। महावीर की सामाजिक दृष्टि है।

व्यक्ति और समाज के आधार पर ही धर्म का रथ आगे बढ़ता है। यदि कोई धर्म समाज के लिए अहितकर हो तो वह संसार में टिक नहीं सकता। इसी प्रकार धर्म से यदि व्यक्तिगत शांति और आनन्द की प्राप्ति न हो तो ऐसा धर्म धारण नहीं किया जाता। आदिनाथ तीर्थंकर ऋषभदेव ने समाज की चिन्ता करते हुए असि, मसी और कृषि का उपदेश दिया था। ब्राह्मी और सुन्दरी को शिक्षा से जोड़ा था, लिपि का प्रशिक्षण दिया था। तीर्थंकर महावीर ने धर्म का उपदेश देते समय कभी समाज की उपेक्षा नहीं की। व्यक्ति, समाज और उससे बढ़कर सम्पूर्ण विश्व के लिए हितकारी धर्म का उन्होंने उपदेश दिया। तीर्थंकर आदिनाथ की जन्म-जयन्ती चैत्र कृष्णा अष्टमी 15 मार्च को उपस्थित हो रही है, इसी दिन आचार्य श्री हीराचन्द्र जी महाराज का 74वाँ जन्म-दिवस है। वे भी धर्म को व्यक्ति और समाज दोनों के विकास का माध्यम बना रहे हैं। धर्म से व्यक्ति का विचार निर्मल होता है और फिर आचरण पवित्र बनता है, जो समाज के लिए भी उपयोगी होता है। धर्म के नाम पर द्वन्द्व धर्म के सच्चे स्वरूप को ग्रहण न करने पर ही होता है, अन्यथा धर्म विश्व में सर्वोत्कृष्ट मंगल है- *'धम्मो मंगलमुक्किट्ठं'*।

महावीर जयन्ती ही जैनों का ऐसा पर्व है जो सभी जैन सम्प्रदायों में प्रायः एक ही दिन मनाया जाता है। प्रभु महावीर के उपदेशों को भी सब स्वीकार करते हैं, किन्तु उन उपदेशों की महत्ता को स्वीकार कर आत्म-कल्याण और विश्व-कल्याण हेतु सर्वत्र प्रचारित-प्रसारित करने की महती आवश्यकता है।

★

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

समताधर्म उपदेश

सम अन्नयरम्मि संजमे, संसुद्धे समणे परिव्वए।
जे आवकहा समाहिए, दविए कालमकासि पंडिए।।
दूरं अणुपस्सिया मुणी, तीतं धम्ममणागयं तहा।
पुट्ठे फरुसेहिं माहणे, अवि हण्णू समयंसि रीयति।।
पण्णसमत्ते सदा जए, समिया धम्ममुदाहरे मुणी।
सुहुमे उ सदा अलूसए, णो कुज्झे णो माणि माहणे।।
बहुजणणमणम्मि संवुडे, सव्वट्ठेहिं णरे अणिस्सिते।
हरए व सया अणाविले, धम्मं पादुरकासि कासवं।।
बहवे पाणा पुढो सिया, पत्तेयं, समयं उवेहिया।
जे मोणपदं उवट्ठिते, विरतिं तत्थमकासि पंडिते।।

सम्यक् प्रकार से शुद्धता को प्राप्त साधु-साध्वी जीवनपर्यन्त (पाँच प्रकार के चारित्र संयम में से) किसी भी एक संयम स्थान में स्थित होकर समभाव के साथ प्रव्रज्या का पालन करे। वह पण्डित साधु-साध्वी ज्ञानादि समाधि से युक्त होकर मृत्यु काल तक संयम पालन करे।

मुनि दूर लक्ष्य 'मोक्ष' को तथा जीवों के अतीत एवं अनागतकालीन धर्म को देखकर जानकर कठोर वाक्यों या लाठी आदि के द्वारा स्पर्श किया जाता हुआ अथवा हनन किया (मारा) जाता हुआ भी संयम में विचरण करे।

प्रज्ञा में परिपूर्ण मुनि सदा कषायों पर विजय प्राप्त करे तथा समता धर्म का उपदेश दे एवं संयम का विराधक न हो। माहन (साधु) न तो क्रोध करे, न मान करे।

अनेक लोगों द्वारा वन्दनीय एवं धर्म में सावधान रहने वाला मुनि समस्त बाह्याभ्यन्तर पदार्थों या इन्द्रिय-विषयों में अप्रतिबद्ध होकर झील की तरह सदा निर्मल रहता हुआ काश्यप गोत्रीय भगवान् महावीर के समता धर्म को प्रकाशित करे।

बहुत से प्राणी पृथक्-पृथक् इस जगत् में निवास करते हैं। अतः प्रत्येक प्राणी को समभाव से सम्यक् जान-देखकर जो संयम में उपस्थित-पण्डित साधक है, वह उन प्राणियों की हिंसा से निवृत्ति करे।

-सूत्रकृतांग, द्वितीय अध्ययन, द्वितीय उद्देशक, गाथा-114-118

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

स्वाध्यायी

- प्रत्येक स्वाध्यायी कंधे से कंधा मिलाकर अग्रसर होता रहेगा तो वह अपने जीवन का, समाज का और राष्ट्र का नवनिर्माण करने में सफल होगा।
- मैं किसी भी स्वाध्यायी में कोई भी व्यसन देखना नहीं चाहूँगा। यदि किसी स्वाध्यायी में कोई व्यसन होगा तो वह उसके जीवन के साथ-साथ स्वाध्याय संघ जैसी पवित्र संस्था पर भी धब्बा होगा। प्रत्येक स्वाध्यायी का जीवन निर्व्यसनी होना चाहिए, कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ने वाला होना चाहिए।
- प्रत्येक स्वाध्यायी पूर्ण निष्ठा के साथ समाज-सेवा के कर्त्तव्य पथ पर अग्रसर होता रहे। कर्त्तव्यपरायणता के साथ कार्य करता रहे। अपने कार्य के फल की इच्छा नहीं करे। महिमा-पूजा और मान-सम्मान को विषवत् समझे। कम से कम स्वाध्याय संघ के, समाज सेवा के, जिनशासन की सेवा के अर्थात् स्व-पर कल्याण के इस पुनीत कार्य को तो किसी लौकिक फलप्राप्ति की इच्छा रखे बिना करता रहे।
- प्रत्येक स्वाध्यायी यही सोचे कि शासन-सेवा करना मेरा कर्त्तव्य है, मेरा अधिकार तो केवल निरन्तर कार्य करते रहने का ही है, न कि फल की कामना करने का। मेरा अभिनंदन नहीं किया गया, मैंने इतना कार्य किया, फिर भी मुझे कोई सम्मान या कोई पद आदि नहीं मिला। ऐसे किसी भी प्रकार के फल की इच्छा करना ज़हर है, अतः इससे बचते रहने का हर स्वाध्यायी ध्यान रखेगा।
- षडावश्यकों को अपने जीवन में ढालकर प्रत्येक स्वाध्यायी अपने आपको चमकाते हुए दृढ़ता से चलता रहा तो कल्याण मार्ग में आगे प्रगति कर सकेगा। उपर्युक्त बातों को चिन्तन के रूप में आप सोंचेगे, समझेंगे और कार्य रूप में परिणत करेंगे तो आपका, समाज का और विश्व का, सभी का कल्याण होगा।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

अमृत-चिन्तन

वाग्वैभव (2)

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

तप

- ज्ञान से जीव, अजीव आदि तत्त्वों को जानो। दर्शन से यह विश्वास करो कि तुम्हारा उद्धार-उत्थान करने वाला और कोई नहीं, तुम स्वयं हो।
- मंजिल का नाम लेने से मंजिल नहीं मिल जाती। चारित्रपूर्ण धर्माचरण से मंजिल प्राप्त होती है।
- रोग-निवारण के लिए दवा के साथ पथ्य का पालन जरूरी है।
- बाहरी तप शरीर को तपाता और शरीर-शुद्धि करता है। आभ्यन्तर तप मन को तपाता और मन के विकारों को घटाता है।
- जो अष्ट प्रकार के कर्मों की ग्रंथियों को तपाता है, उसका नाश करता है, उसे तप कहते हैं।
- आत्मा के साथ चिपके कर्मों के विकार को हटाने के लिए तपेले रूपी शरीर को तपाया जाता है।
- खाना प्रकृति है, अधिक खाना व विपरीत खाना विकृति है और तप करना संस्कृति है।
- मनुहार से खिलाना, गले की सौगंध देकर जरूरत से अधिक खिलाना उचित नहीं। इसका मतलब जिनको जरूरत है, उनको वंचित रखना है।
- क्या खाना, कब खाना और कितना खाना, यह विवेक होना चाहिये।
- एक अनशन उपवास में कम से कम 36 घण्टे तक आहार नहीं होता है।
- तप से काम-वासना पर विजय पाई जा सकती है।
- जो अनशन तप नहीं कर सकते, वे ऊणोदरी तप कर सकते हैं।
- खाने में कम खाइये, पेटियाँ कम भरिये, यह भी तप है।
- कभी गम खा जाओ तो वह भी ऊणोदरी तप है।
- क्रोध के समय क्रोध नहीं करके गम खाने वाला बड़ा होता है।
- कभी कोई प्रतिष्ठा में आँच आने वाले शब्द कह दे, फिर भी आप गम खा जाओ, यह भी तप है।

-हीरा प्रवचन-पीयूष भाग-1 से संकलित : श्री पी. शिखरमल सुराणा, चेन्नई

प्रवचन

दान का मन बनाएँ

महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के आज्ञानुवर्ती महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. द्वारा 29 अगस्त, 2011 को सामायिक स्वाध्याय भवन, पावटा, जोधपुर में फरमाए गए प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतन जी मेहता, जोधपुर ने किया है। पर्युषण में दान की महिमा पर प्रदत्त यह प्रवचन दान के पर्व 'अक्षयतृतीया' पर भी उपयोगी है। **-सम्पादक**

बन्धुओं!

ज्ञान का अर्जन, श्रद्धा का सर्जन, चारित्र का समाचरण, तप से पापों का प्रक्षालन करने का निनाद करते हुए पर्वाधिराज पर्युषण का 'पंचम दिवस' अर्जन के साथ विसर्जन की प्रेरणा दे रहा है। आपने सुन रखा है, अनुभव कर रखा है कि समुद्र का संचित जल खारा होता है। इसी प्रकार जो अर्जित करता है, संग्रह करता है और जोड़-जोड़ कर अन्दर धरता है वह खारा होता है। देता है वह मीठा होता है। कहते हैं कि एक बार समुद्र और बादल के बीच में झगड़ा हो गया। समुद्र ने गर्जना की कि मेरे पास अथाह जलराशि है, जिसका ओर-छोर नज़र नहीं आता है। समुद्र को गर्व है कि मेरे पास अपार जल है। उधर बादल घड़घड़ाने लगा। समुद्र पर आकर बादल कहने लगा- यह तुम्हारा अहंकार बोल रहा है। समुद्र कहने लगा-

म्हासूँ ही जल लियो, जल ले गगन चढ़न्त।
मैं थने पूछूँ बादला, मोय पर क्यूँ गरजन्त।।

समुद्र का जल वाष्प बनकर ऊपर जाता है। समुद्र और बादल के बीच का झगड़ा कहीं ऐसा तो नहीं कि मेरी बिल्ली मुझसे ही म्याऊँ।

आज के मानव का स्वभाव भी ऐसा हो गया है- जिस थाली में खा रहा है उसी में छेद किए जा रहा है। आज नमक हलाल कितने बन रहे हैं और नमक हराम कितने? जिनसे लिया जा रहा है उन्हीं को बदनाम किया जा रहा है। समुद्र कहने लगा- "मेरे से पानी लिया और मेरे ऊपर गर्जन?" बादल भी चुप रहने वाला कहाँ था।

गुरुदेव कहते हैं- "सुनने वाला बड़ा होता है।" आज सुनने वाले ज्यादा या सुनाने वाले? आज लोगों में ऐसी विकृति आ गई कि एक की चार सुनाते हैं। म्हें सगा बाप री सुणी कोनी, समाज वाला री कांई सुणूं। वे मने कांई नौकर समझियो है? अरे भाई! सुनने वाला बड़ा होता है, पर आज अधिकांश लोग ऐसे हैं जो सुनाना जानते हैं, सुनना नहीं। जब तक सुनना नहीं आयेगा तब तक समाधि हुई नहीं, होने वाली भी नहीं। आप होशियार हैं, जानते हैं- कहाँ सुनना, कहाँ सुनाना? आप दुकान पर बैठे हैं। कोई इन्सपेक्टर आ जाय, वह चाहे सेल्स टैक्स का है या इन्कम टैक्स का, और कहने लगे- बणिये नालायक होते हैं, अनीति करते हैं। वहाँ आप सुनते हैं या नहीं? सुनते ही नहीं, उस जगह हाथ जोड़कर मनुहार करते हैं- आपके चाय मगाऊँ या ठण्डो? आप हमारे घर के हैं जो कुछ भी लेना हो वही आ जाएगा।

समुद्र ने कहा तो बादल ने जबाब दिया-

थां सुं जल लियो, जल ले गगन चढ़न्त।
खारा सुं मीठो कीयो,इण कारण गर्जन्त।।

समुद्र! तेरी अथाह जलराशि खारी है, मैंने उसे मीठा बनाया, इसलिए मैं गर्ज रहा हूँ। मतलब क्या? संग्रह करने वाला खारा होता है, देने वाला मीठा।

हमारे देश में कैसे-कैसे दातार हो गये, जिन्होंने तन दिया, धन दिया, हड्डियाँ दान की, और यहाँ तक कि सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। एक तरह दातार हुए तो दूसरी तरफ-

छाछ घालतां छाती फाटे, दूध घालतां दौरा।

आज की यही स्थिति है। छाछ के लिए भी कोई आ जाय तो मना करने में संकोच नहीं होता। राम-कृष्ण के राज में पानी की जगह दूध-दही देने वाले थे।

रामराज में दूध-दही, कृष्ण राज में घी।
लोक राज में कालो पानी, फूँक-फूँक कर पी।।

एक भिखारी एक दुकान पर पहुँच गया। सुबह का समय था। सेठ साहब गादी पर बैठे थे। भिखारी बोला- सेठ साहब! मैं तीन दिन का भूखा हूँ। ठण्डी-बासी मिल जाय तो मैं अपनी भूख शांत कर सकता हूँ। सेठ साहब प्रकृति से मक्खीचूस थे। आप जानते हो मक्खीचूस कौन होता है? घी में कभी मक्खी गिर जाय तो जो उसे यों ही बाहर नहीं फेंकता, दबाकर घी निकाल लेना चाहता है वह है मक्खीचूस। कंजूस कौन होता है?

दातारों का मजा यही है खाने और खिलाने में।
कंजूसों का मजा यही, धन जोड़-जोड़ मर जाने में।।

दातार की देने की भावना मेहमान आने पर जगती है और मेहमान को जो यमराज माने, समझ लो वह एक नम्बर का कंजूस है। कंजूस खुद खाता नहीं, किसी दूसरे को खाने देता नहीं।

एक घर में सेठ सेठानी रहते थे। सेठ एक नम्बर का कंजूस था। एक दिन सेठ साहब उतरा हुआ चेहरा लेकर आए। सेठानी ने पूछा- "क्या बात है? क्या आज कोई व्यापार में घाटा लगा है या दुकान में चोरी हो गई है या जेब से रुपये पार हो गये हैं? सेठ बोला-

ना कुछ जेब से गया, देता देखिया और ने जिणसुं मुख मलिन।।

चाले बैल और थकेलो आवे कुत्ता ने। देने वाला देता है, लेने वाला लेता है, पर कोई-कोई ऐसा भी होता है जिसे सुहाता नहीं है। एक गाँव में पानड़ी लिखाने दो भाई आए। जिसके वहाँ गये, सोचा पहली बार समाज के भाई आए हैं, उसने आगत बन्धुओं को बैठाया और अच्छी टीप लिखा दी। आगे चल एक कंजूस से पाला पड़ गया। मैं पहले ही कह गया- कंजूस न खाता है, न खाने देता है। पानड़ी कैसे लिखाई जाती है वह जानता ही नहीं। क्यों तो उसने कभी दिया ही नहीं।

मैं भिखारी की बात कह रहा था। भिखारी सेठ साहब की दुकान पर पहुँच गया। बोला-तीन दिन का भूखा हूँ, कुछ खाने को मिल जाय। सेठ साहब कंजूस तो थे ही, बोलने में भी फूहड़ थे। कहा-"नालायक! सुबह-सुबह मांगने आ गया, अभी बोवणी री टेम है।" आज समाज की ओली लेने वाले भी विचार करते हैं, कब जाना चाहिये? समाज के लिए, परोपकार के लिए मांगने में संकोच नहीं होना चाहिये। अपने लिए वह उक्ति आपको याद होगी-

मर जाऊँ माँगू नहीं, अपने तन के काज।
परमारथ रे कारणे मुझे न आवत लाज।।

अपने लिए याचना नहीं करना। माँगण मरण समान है। परमार्थ के लिए, संघ-समाज के लिए, परोपकार के लिए माँगना पड़े उसमें कोई शर्म नहीं आनी चाहिये।

पंडित मदन मोहन मालवीय ने बनारस यूनिवर्सिटी की परिकल्पना की। धन की जरूरत थी। संघ-समाज हो, सेवा का काम हो, परोपकार की दृष्टि से संस्थाओं के काम हो उसके लिए माँगना ही पड़ेगा। सब नहीं देते हैं तो सब मना

भी नहीं करते हैं। **सारा नटे तो जावां कठे, और सारा देवे तो घालां कठे।** पं. मदनमोहन मालवीय रामपुरा के नवाब के वहाँ पहुँच गये। कहा- मैं यूनिवर्सिटी के लिए दान माँगने आया हूँ। रामपुरा के नवाब ने देखा, सोचा-यह कौन काफिर आ गया? नवाब को कुछ देना तो था नहीं, एक जूता निकाला और पंडितजी के सामने डाल दिया।

आप भी कभी समाज के लिए चंदे के वास्ते गए होंगे। आपके साथ ऐसा व्यवहार हो तो? भाई, समाज का कोई पद लिया है तो दिमाग गर्म रखने की जरूरत नहीं। पर आज तो सबका टेम्प्रेचर बढ़ा हुआ ही रहता है। सोचते हैं- मैं अध्यक्ष या मंत्री इसलिए नहीं बना कि दूसरों की सुनूँ। किन्तु पद लिया है तो सुनना पड़ेगा। आप आचार्य देव के जीवन को देख लो। यह पद हीरों का ताज नहीं, कांटों का ताज है। नीतिकार कहते हैं- कभी बड़ा नहीं होना। बड़े बनने में खतरा ज्यादा है, टेन्शन ज्यादा है। आचार्य देव को सत्रह तरह की बातें सुननी पड़ती हैं, पर आप सहनशीलता का आदर्श रखकर एक-एक समस्या का समाधान देते हैं। आप संघ के अधिकारी हैं, समाज के मुखिया हैं तो सहनशील बनिये, सुनना सीखें और समस्याओं का समाधान निकालें।

नबाब ने जूता दिया। एक जूते का करें तो क्या करें? दो होते तो फिर भी किसी के काम आ सकते थे। पर पं. मदनमोहन मालवीय तपे-तपाये थे, कहा- मैं इस जूते को नीलाम करूँगा। यह जूता यूनिवर्सिटी में रखा जायेगा जिस पर प्लेट लगी होगी कि यह जूता रामपुरा के नबाब ने दिया है। पंडित जी की सभा में नबाब का एक नौकर भी था, वह दौड़ा-दौड़ा नबाब के पास गया और बोला- आपका जूता नहीं, आपकी इज्जत नीलाम की जा रही है। नबाब की अक्ल ठिकाने आ गई और उसके एक लाख इक्यावन हजार रुपये लिखवाये।

वह भिखारी सेठ की दुकान पर खड़ा हुआ माँग रहा है। तीन दिन का भूखा हूँ, कुछ खाने को मिल जाय। खाने को देने के लिए कुछ नहीं है तो भिखारी ने कहा- सेठ साहब! कोई बात नहीं, आप तो मुझे चार-पाँच रुपये दे दो, मैं भूँगड़े लेकर पेट भर लूँगा।

सेठ साहब तो "चमड़ी जाय पर दमड़ी नहीं जानी चाहिये" प्रवृत्ति के थे। कहा- मैं तुझे एक पैसा तक नहीं दूँगा। भिखारी भी एक नम्बर का उस्ताद था। भिखारी को खाने के लिए कुछ भी नहीं मिला, रुपया-पैसा नहीं मिला, कुछ भी नहीं मिला तो सोचा मैं यहाँ से कुछ लेकर जाऊँगा और कुछ नहीं मिला तो सेठ को साथ लेकर जाऊँगा। भिखारी ने कहा- सेठ साहब! थोड़ा पानी तो मिल

जाएगा, आप पानी दे दें, मैं अपनी प्यास शांत करके चला जाऊँगा। सेठ साहब ने कह दिया यहाँ तुझे पानी भी नहीं मिलेगा, चला जा यहाँ से।

भिखारी भी 'माथे बांधे जेड़ो हो'। बोला- आपरे पास अन्न नहीं, रुपया-पैसा नहीं, पानी नहीं। आपके पास भी नहीं, मेरे पास भी नहीं इसलिए आप मेरे साथ चलें, अपन एक से दो हो जायेंगे तो मांगने में ठीक रहेगा। कहने का मतलब है- जो दातार होता है वह जरूरतमन्द को बिना कहे देता है। सूरज को कौन कहता है मुझे प्रकाश दो। सूरज बिना मांगे प्रकाश देता है इसी तरह दातार बिना मांगे सबको देता है।

दानों में ज्ञानदान है, सुपात्र दान है तो अभयदान भी है। अभयदान सर्वश्रेष्ठ दान है। आप अर्जन के साथ विसर्जन करना सीख जायें। इम्पोर्ट ही इम्पोर्ट करो और एक्सपोर्ट नहीं करो तो....? सुबह से लेकर शयन तक खाते ही खाते रहे तो.....? आप यहाँ साधना में बैठे हैं, दयाव्रत में हैं, एक टाइम भोजन करें वह तो ठीक, पर आज क्या हो रहा है? सुबह नाश्ता और चाय-दूध अलग, दोपहर में भोजन, फिर दिन में चाय और कई तो हैं जो शाम को भी....।

मैं ज्यादा कहूँ वह ठीक नहीं। आपको-हमको-सबको आचार्य भगवन्त से ज्ञान का दान प्राप्त करना है, दान का महत्त्व सुनकर हम आगे बढ़ें इसी भावना के साथ......।

चिता जलने से पहले

श्रीमती सुशीला गुलेच्छा

अन्तिम संस्कार की सब सामग्री तैयार है, कफन भी तैयार है
बस बाजार से लाने की देर है।
बांस और मुंज भी तैयार है, बस आर्डर देने की देर है।
उठाने व जलाने वाले भी तैयार हैं, बस खबर करने की देर है।
जलाने की जगह भी तैयार है, बस अर्थी उठाने की देर है।
रोने वाले भी तैयार हैं, बस 'चल बसे' की खबर सुनने की देर है।
मृत्यु की सामग्री तैयार है, बस श्वास बंद होने की देर है।

श्वास बंद होते ही आधा-घंटे में सब सामग्री जुट जायेगी और घंटे भर में तो अस्थियाँ बिखर जायेंगी। अतः **अस्थियाँ** बिखरने से पहले जीवन में **आस्था** पैदा कर लेना। **चिता** जलने से पहले अपनी **चेतना** को जगा लेना। बस जीवन सार्थक हो जायेगा।

-सिटी पुलिस, जोधपुर (राज.)

प्रवचन

सुपुण्य से मिलता है धर्म का पथ

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. द्वारा गुरुवार श्रावणी अमावस्या 28 जुलाई, 2011 को सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा, जोधपुर (राज.) में फरमाए गए प्रवचन का आशुलेखन श्री पुखराज मोहनोत ने किया है। यह प्रवचन यद्यपि तपस्वी मुनि श्री सागरमल जी म.सा. के पुण्यदिवस पर फरमाया गया है, किन्तु इसमें धर्म-साधना के विविध पक्षों की व्यापक प्रेरणा प्राप्त होती है। प्रवचन में मानो धर्म का अमृत झरता है। **-सम्पादक**

उदय में उदय करते हुए सर्वोदय की मंगल प्रेरणा प्रदान करने वाले अनन्त उपकारी वीतराग भगवन्त और उन्हीं के द्वारा प्ररूपित इस वीतराग वाणी के अवलम्बन से सबके कल्याण की, मंगल की पवित्र भावना के साथ अपने जीवन का कल्याण करते हुए संघ का नेतृत्व करने वाले आचार्य भगवन्तों के चरणों में वन्दन करते के पश्चात्.......!

जैनागमों में ग्यारह अंग प्रमुख हैं। इन ग्यारह में आचारांग प्रथम है और विपाक अन्तिम। इन्हीं के माध्यम से वीतराग वाणी आपके समक्ष रखी जा रही है। अन्तिम अंग विपाकसूत्र के पहले दुःखविपाक नामक श्रुतस्कन्ध में दस अध्ययन हैं। इन दस अध्ययनों में बंधे हुए कर्मों के दारुण विपाक का दर्शन कराया गया है। इसे सुनने के पश्चात् सुधर्मा स्वामीजी से जम्बूस्वामीजी पृच्छा करते हैं-''भगवन् ! ग्यारहवें अंग विपाकसूत्र के प्रथम श्रुतस्कन्ध दुःख विपाक में आपने जो भाव सुनाये, वह मैंने सुने। इसके दूसरे श्रुतस्कन्ध में प्रभु ने क्या भाव फरमाये हैं ?''

इस पर सुधर्मा स्वामी ने जो कुछ फरमाया, उस सबका विवेचन सुखविपाक के माध्यम से आपके सम्मुख किया जा रहा है। कभी-कभी नजदीक से देखा गया या सुना गया दृष्टान्त अथवा इन चर्मचक्षुओं के समक्ष घटित कोई प्रसंग हमारे लिए विशिष्ट प्रेरणादायी बन जाता है। वैसा ही एक प्रसंग आज उपस्थित है। लगभग 83 वर्ष व्यतीत हो चुके हैं उस प्रसंग को घटित हुए, फिर भी जिन महापुरुष के जीवन का यह प्रसंग है, आज उनका स्मरण किया जा रहा है।

सुखविपाक का सन्दर्भ जोड़कर जो कुछ कहना है, उसे कवि सूर्यभानुजी डांगी ने अपने शब्दों में कुछ इस तरह गूँथा है-

धन्य है पुण्य प्रभु जिससे शरण में आपकी आये।
चित्त में चार मंगल की अखण्डित भावना भाये।।
आज अच्छी तरह जीवन, मरण को खेल समझा है।
मिटी सब कामना, शुभ ध्यान सिद्धि स्थान पहुँचाए।।
भयंकर से भयंकर कष्ट की परवाह अब छूटी।
मेरुगिरी सम हुए दृढ़ हम, नहीं मन रंच घबराए।।

आज स्मरण कर रहे हैं, उस महापुरुष के समाधिमरण को। साधक को प्रतिपल समाधि में रहने का कहा गया है। दशाश्रुतस्कन्ध के पाँचवें अध्ययन में चित्तसमाधि का विवेचन आता है। संथारे सहित मरण को समाधिमरण का नाम दिया गया है। कभी ऐसी स्थिति भी आती है कि संथारा करने वाला साधक किन्हीं कारणों से असमाधि की स्थिति में चला जाता है। ऐसे समय में उसे समाधि में लाने के सर्वोत्तम साधन हैं-आत्मप्रेरणा, स्व-जागरण, समाधि के सूत्रों का स्वाध्याय।

विदर्भ प्रान्त के धामण गाँव की निवासिनी श्राविकारत्न उमरावबाईजी जो प्रज्ञाचक्षु हैं और इस समय आयु में लगभग अठ्ठत्तर (78) वर्ष की हैं, वे आज भी शास्त्रों का पठन, वाचन, स्वाध्याय करती हैं। उनको लगभग चौदह शास्त्र कंठस्थ हैं और आगे भी कठंस्थ करने में वे पुरुषार्थी बनी हुई हैं। वे नित्य पाँच हजार से सात हजार के लगभग गाथाओं का नियमित पाठ करती हैं। उन्होंने एक बार बताया कि जब संथारा करने वाले साधक को चलते हुए **संथारे के मध्य में कभी भी असमाधि का अनुभव हो तो उसे सूत्रकृतांग सूत्र के दसवें समाधि नामक अध्ययन का स्वाध्याय सुनाना चाहिये।** स्वाध्याय करने की स्थिति न हो तो 'चउसरणपइन्ना' का प्रयोग करते हुए अरिहन्त आदि चार की शरण को स्वीकार करता हुआ साधक सुकृत की अनुमोदना और दृष्कृत की गर्हा करे। चउसरण पइन्ना में प्रतिक्रमण के छह आवश्यक की सात गाथाएँ तीर्थंकर की माताश्री को दिखने वाले चौदह स्वप्न, चार मंगल, सुकृत अनुमोदना-दुष्कृत गर्हा का सुन्दर विवेचन है।

समाधि केवल सद्धर्म में है और सद्धर्म के लिए पुण्य का होना आवश्यक है, अनिवार्य है। उत्तराध्ययन सूत्र के चित्त-संभूइनामक अध्ययन की

21 वीं गाथा में धर्म को पुण्य का तथा पुण्य को धर्म का पर्याय कहा गया है। संवर-निर्जरा को ही यदि विशुद्ध धर्म रूप माना जाये तब भी पुण्य को धर्म में सहायक ही मानते हैं। यही तो कवि भी कह रहा है- धन्य है पुण्य, प्रभु! जिससे शरण में आप की आए-प्रभु शरण का यहाँ अर्थ है धर्म की शरण।

दशवैकालिक की चूलिका में भी सपुण्य को धर्म का उत्पत्ति स्थल बताते हुए कहा गया-**चूलियं तु पवक्खामि, सुयं केवलिभासियं। जं सुणेत्तु सुपुण्णाणं, धम्मे उप्पज्जइ मई।** अर्थात् मैं उस चूलिका को कहूँगा, जो केवलिभाषित है और मेरे द्वारा श्रुत अर्थात् सुनी गई है। जिसे सुनकर पुण्यशाली जीवों की धर्म में मति (श्रद्धा) उत्पन्न होती है।

स्पष्ट है धर्म में मति, धर्म में श्रद्धा के लिए पुण्य अनिवार्य रूप से होना ही चाहिये और वह भी सामान्य स्तर का नहीं 'सुपुण्णाणं' अर्थात् विशिष्ट पुण्य। सुखविपाकसूत्र में जिन महनीय पुरुषों का वर्णन है, उन्होंने अपना जीवन उसी सुपुण्य से प्रारम्भ किया। वही सुपुण्य जो सम्यग्दृष्टि जीवन में प्रारम्भ होकर जीव को धर्म के प्रशस्त पथ पर निरन्तर अग्रसर करता है। हमारी चर्चा भी इसी विषय पर है कि सुपुण्य से ही धर्म की निकटता प्राप्त होती है।

उत्तराध्ययनसूत्र के पंचम 'अकाममरणीय' नामक अध्ययन की 18 वीं गाथा उठाकर देख लीजिए। कहा है -

मरणं पि सुपुण्णाणं जहा मेयमणुस्सुयं।
विप्पसण्णमणाघायं संजयाणं वुसीमओ।।

तात्पर्य यह है कि संयम, जितेन्द्रिय तथा पुण्यशाली आत्माओं का मरण अति प्रसन्नतामय (अनाकुल चित्त) एवं आघात रहित होता है।

बात यही कहनी थी। पंडित-मरण अनन्त-अनन्त पुण्यपुञ्ज के एकत्र होने पर मिलता है। यहाँ आप सभी समझ लें कि पूर्व का सत्पुरुषार्थ ही वर्तमान का पुण्य है और उस पुण्य का सम्बन्ध जीव की भावनाओं से है, आत्मा से है। चूहे को रोटी देना तब पुण्य नहीं जब वह रोटी चूहे को पकड़ने के लिए पिंजरे में रखी जाती है और उसके पीछे भावना चूहे को पकड़कर कहीं दूर डालने की है। इससे पुण्य की प्राप्ति स्वप्न में भी सम्भव नहीं है। प्रायः हर घर में कुत्ते को रोटी डालने की प्रथा है, उसमें कैसा पुण्य ? भावना क्या है वहाँ ? भावना है-पहरा देगा कुत्ता। चौकीदारी करेगा घर-मौहल्ले की। चोरों का प्रवेश मुश्किल बनेगा इनके कारण। नागश्री ने मुनिवर को गोचरी में कड़वे तूम्बे की सब्जी देकर भयंकर

पाप का बोझ सिर पर लादा और नरकादिक दु:खों को भोगा। मुनि को प्रदत्त दान से नरक कहीं भी सुना है? ज्ञाताधर्मकथा में आता है वर्णन। यह नागश्री उस कड़वे तूम्बे को या उससे बनी सब्जी को बिना चखे अच्छी भावना से मुनि के पात्र में बहराती तो पुण्य की ही भागीदार बनती, क्योंकि पुण्य का सम्बन्ध अन्तर की भावना से है।

बात थी सुपुण्य की, सुपुण्य को देखा गया सुखविपाक के सन्दर्भ में। यह सुपुण्य श्री सागरमलमुनिजी के समाधिमरण का हेतु बना।

जन्म संवत् 1944 का, 15 वर्ष की लघुवय में वैराग्य उत्पन्न हुआ। संवत् 1958-59 से 1972 तक निरन्तर वैराग्य पुष्ट बनता रहा। दीक्षा के लिए कहा, पर घर-परिवार वाले अनुज्ञा देने के लिए तत्पर नहीं हुए। संसार की, आप सांसारिकजनों की यही विडम्बना है। आप सभी जानते हैं कि श्रमण का पथ आत्म-विकास का है, मुक्ति की तरफ ले जाता है, परमानन्द और अनन्त आत्मिक सुख देने वाला है, परन्तु घर के किसी सदस्य को कभी विरक्ति का भाव आ गया तो क्या करेंगे आप ? वैसे देखें तो आज के समय विरक्ति भाव का आना ही दुर्लभ, दुष्कर, अति मुश्किल है। आसक्ति हटे तो विरक्ति आए। कहाँ हटती है यह आसक्ति ? बाह्य-पदार्थों, धन-वैभव, घर-मकान-बंगला, माता-पिता, भाई-बहिन, पुत्र-पुत्री, पति-पत्नी, सत्ता, सभी में आसक्ति का बढ़ा-चढ़ा भाव रहता है। इतनी बढ़ी हुई है आसक्ति कि गुरुवचनों का, श्रुतवाणी-जिनवाणी का आप पर असर ही नहीं होता, होता भी है तो उस कच्चे रंग की तरह जो जरा-सा मोह-माया का पानी लगे और धुल जाता है। कभी वह प्रदर्शन की चीज बन जाता है कभी अहंभाव का कारण। प्रेरणा की कमी नहीं। आचार्य भगवन्त स्वयं महती प्रेरणा निरन्तर करते हैं। नित्य कहते हैं-तप, त्याग, व्रत-प्रत्याख्यान के लिए। पर होता कितना है ? इने गिने श्रावक ही करते हैं। अन्तर में दृढ़ निश्चय करें कि अब हमें आगे बढ़ना है।

बात चल रही थी विरक्ति की। विरक्ति आने पर खलबली मच जाएगी परिवार में। सभी चाहेंगे कि वह विरक्ति से पुन: आसक्ति में आ जाए। पाट पर जाने की जगह घर-परिवार संसार के प्रपञ्च में फंसा रहे। उसे तरह-तरह के प्रलोभन दिए जाएंगे। संसार के सुखों का आकर्षण दिखाया जाएगा, विवाह तक का दबाव भी बनाया जा सकता है। अन्तिम क्षण तक प्रयत्न यही होगा कि वह दीक्षा न ले। संसार में घर-परिवार में ही रहे। इसमें आप सभी का मोह भी है और

स्वार्थ भी।

संवत् 1972 तक 13 वर्ष पर्यन्त उन्हें रोके रखा। नहीं बनने दिया संयमी, साधु-महाव्रती। दीक्षानुमति देने से इन्कार करते रहे और उसे सांसारिक बनाने के दाव-पेंच चलाते रहे। पर उस पर इनका कोई प्रभाव नहीं हुआ। विरक्ति में, अपने संकल्प में, अपनी वैराग्य भावना में अत्यन्त दृढ़ बने रहे वे। भावनाओं में कहीं कमी नहीं आई।

इस अवधि में वे आचार्य श्री विनयचन्द्रजी म.सा. के चरणारविंद में रहकर निरन्तर अपने वैराग्य भाव को पुष्ट बनाते रहे। बन्धुओं! कुछ को दीक्षानुमति नहीं मिलती अन्त तक। कुछ दृढ़ रहते हैं तो पिघला देते हैं पारिवारिकजनों के हृदयों को और प्राप्त कर लेते हैं अनुमति। पाँचों अंगुलियाँ कहाँ बराबर होती हैं ? आप श्रावक-श्राविकाओं में भी अनेक हैं जो सुपुण्यवान हैं। भले ही ये अंगुलियों पर गिने जाने लायक ही हैं।

इन्हीं इने-गिने परिवारों में आज कुछ नाम बताऊँ आपको। रणसीगाँव के श्रावक पारसमलजी कोठारी जो चेन्नई में रहते हैं। प्रतिवर्ष चातुर्मास में भगवन्त की, संतों की सेवा में आते हैं और रहते हैं। लगभग दो माह व्यतीत करते हैं वे संतचरण सेवा में । कहते हैं-गुरुदेव हम चातुर्मास में आकर रहते हैं इसका विशेष प्रयोजन है। मैं चाहता हूँ कि मैं यहाँ रहूँ तब मेरे सभी पारिवारिकजन यहाँ आएं, मित्रगण आएं, पुत्र जो व्यवसायरत हैं वे भी क्रमवार आकर यहाँ रहें। आयेंगे वे तो गुरुदर्शनों का, संतचरण सेवा का लाभ प्राप्त करेंगे। इस तरह इन सभी संस्कारों में धर्म की विद्यमानता बनी रहेगी, ये सभी धर्म से जुड़े रहेंगे।

संवत् 1996 की बात है। अजमेर संघ के मंत्री श्री जीतमलजी चौपड़ा ने एक इसी तरह के विशिष्ट संघ व शासनसेवी से मेरा परिचय करवाया था। अटपड़ा (बिलाड़ा) के निवासी श्री केवलचन्दजी बरमेचा है उनका नाम। उस समय 86 वर्ष के थे वे। अनेकानेक व्रत-नियम ग्रहण कर रखे थे। दिन भर में 10-11 सामायिक करते थे। एक विचित्र नियम यह कि पहली सामायिक प्रात: 6 से 7 बजे के मध्य ही होनी चाहिये। नहीं हुई कभी तो उस दिन का चउविहार उपवास कर लेते हैं। कभी ट्रेन, बस आदि के सफर में नहीं होती प्रात: सामायिक तो चउविहार उपवास या फिर सफर बीच में छोड़ कर उतरते हैं, सामायिक करते हैं। फिर पुन: सफर प्रारम्भ होता है। अब चाहे टिकट दूसरा लेना पड़े, गाड़ी देरी से मिले अथवा स्वयं मंजिल पर देरी से पहुँचें। केवलचन्द जी के पुत्र धर्मचन्दजी

बरमेचा भी चातुर्मास में आते हैं, सेवा देते हैं। बरमेचा परिवार के मुखिया कह रहे हैं-"महाराज! चार पोतियाँ और एक दौहित्री आई हुई है यहाँ। मेरे घर से कम से कम एक दीक्षा तो होनी ही चाहिये।"

ये तो जो यहां विद्यमान हैं उनका जिक्र मैंने किया है। इनसे भी बढ़-चढ़ कर अनेक सुपुण्यशाली भाग्यवान धर्मशील श्रद्धावान और समर्पित सेवाभावी श्रावक हैं। बीकानेर का अगरचन्दजी सेठिया परिवार सम्पूर्ण जैन जगत में संघ व शासन सेवा के लिए जाना जाता है। सेठियाजी की स्वयं की जैन दर्शन में आगम व अन्य साहित्य की गहन और विशिष्ट जानकारी तो थी ही, उनका ग्रन्थालय भी जैन दर्शन के अनमोल ग्रन्थों का खजाना है। विद्वानों, जिज्ञासुओं आदि के लिए उनकी सेवाएं अद्भुत और पूर्ण व्यवस्थित हैं। जैन साहित्य में सर्वाधिक थोकड़े-संग्रहों की पुस्तकों का सम्पादन और प्रकाशन आपके द्वारा व आपकी संस्था द्वारा हुआ है। संस्था के प्रकाशन भी लगभग लागत मूल्य व उससे भी कम कीमत में यह परिवार जन-जन को उपलब्ध करवाता है। जैन संतों, जैन साध्वियों, जैन विरक्तों (वैरागी बन्धुओं) को यदि जैन दर्शन, इतिहास व साहित्य का, आगमों का, स्तोत्रों व थोकड़ों का अध्ययन करना है तो यह परिवार अपनी ओर से पंडितों की, आगम-ग्रन्थों, पुस्तकों की तुरन्त व्यवस्था करता है। बहुत बड़ा जैन स्थानक है बीकानेर में इस परिवार द्वारा निर्मित। स्थानक में आवश्यकता की सारी धर्माचरण के अनुकूल व्यवस्थाएँ धर्म करने वालों के लिए सहयोगी है। एक छोटी-सी बात ही लीजिए-विशाल स्थानक भवन के निर्माण के समय जितना भी पानी लगा, पानी को छानकर फिर उपयोग में लिया गया था।

उस परिवार के राजेश जी सेठिया जो अत्यन्त होनहार युवक थे, आज साधु हैं, संयमनिष्ठ हैं, महाव्रती हैं। इन्होंने आचार्य श्री नानालालजी म.सा. के श्रीमुख से संयम अंगीकार किया है। सुना है मैंने सेठिया, बरमेचा आदि धर्मनिष्ठ परिवारों की तरह अनेकों परिवारों के भक्त निकटवर्ती सम्प्रदायों में हैं, जो आचार्य भगवन्त, गुरुवर व गुरुणियों के चरणों में सपरिवार आते हैं, सेवा देते हैं और निवेदन करते हैं-चाहे जिसे संघ-सेवा में, शासन-सेवा में आगे बढ़ाएं। इनको व्रती-महाव्रती, संयमी, तपस्वी, त्यागी बनाएं।

बन्धुओं ! यह है सुपुण्यशाली बनने का पावन प्रशस्त-पथ, यह है उदय में उदय करने-कराने की राह। अनेक और भी हैं ऐसे, शायद इनसे भी अधिक बढ़-चढ़कर अतिधर्मशील, गुरुभक्त, समर्पित श्रावक। अधिक ज्ञानी,

गंभीर सेवा भक्ति वाले। यही तो है पुण्यवानी। बिना पुण्यवानी के जीव धर्म की शरण में नही आ सकता। निकटता भी प्राप्त नहीं कर सकता। यही तो कहा कवि ने- प्रभु की शरण अर्थात् धर्म की शरण, छत्र-छाया पुण्य से ही प्राप्त होती है। यहाँ आप बैठे जितने भी भाई-बहिन श्रुतवाणी का श्रवण कर रहे हैं, सभी को अपने सुपुण्यों का धन्यवाद करना चाहिये। इसके साथ ही चिन्तन करें कि पुण्य का सम्बन्ध बाह्य जगत से उतना नहीं है, वह तो आत्मिक भावों की आधारशिला पर ही टिकता है। आत्मिक परिणति से ही सुपुण्यार्जित होता है। पुण्य का अर्थ ही है-पुद्गल के सहकार से आत्मा की ऐसी परिणति जो पुद्गल को प्रभावित करते हुए उसे आत्मा के विकास में सहयोगी बनाती है।

वस्तुत: आत्मभाव से आत्मा को पवित्र करे वही पुण्य है- "**पुनाति आत्मानम् इति पुण्यम्।।**" पुण्य मन, वचन, काया की शुभ प्रवृत्ति है, जिससे आत्मा में शुभता बढ़ती जाती है। मुनि सागरमल जी विरक्त अवस्था में जयपुर में आचार्य श्री विनयचन्द्रजी म.सा. एवं मुनि श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. आदि की सेवा में ज्ञान-ध्यान सीखते हुए दीक्षानुज्ञा के लिए प्रतीक्षारत थे। उन्हीं दिनों संवत् 1972 की मार्गशीर्ष कृष्णा 12 के दिन आचार्यश्री का स्वर्गवास हो गया। संघप्रमुख रींया के श्री छगनमलजी मोहनोत आदि श्रावकों ने श्री चन्दनमलजी म.सा. को आचार्य पद का उत्तरदायित्व सौंपने का प्रस्ताव रखा। श्री चन्दनमुनि स्वभाव से अत्यन्त शान्त, गंभीर चन्दन की तरह शीतलता लिए हुए थे। उनका संयम आगमानुसार विशुद्ध था, पर वे वय में काफी बड़े थे, वयोवृद्ध थे। उनसे जब निवेदन किया गया तो बोले- बूढ़ा बैल गाड़ी को कैसे खींच सकता है? अपनी अवस्था को देख उन्होंने स्पष्ट कहा-"मुनि शोभाचन्द्र को आचार्य बनाएंगे, उन्होंने 14-14 वर्ष अग्लान भाव से आचार्य देव की सेवा भी की है। उनसे कह देना वे अजमेर पधार जाएं, मैं भी विहार करके उधर ही आने का भाव रखता हूँ। अपने हाथ से आचार्य-चादर उनको ओढ़ाऊँगा।"

मुनि श्री चन्दनमलजी म.सा. की यह पावन भावना क्या है ? यह है उदय में उदय। यही है सुपुण्य। यह भी उनका सुपुण्य था कि आचार्य श्री विनयचन्द्रजी म.सा. के जयपुर में स्वर्गवास के पश्चात् श्री सागरमलजी के परिवार वालों को विचार आया-इसका वैराग्य पक्का है। इतने लम्बे समय तक यह वैरागी बना रहा तो अब हमारा हठ करना व्यर्थ है। अत: दीक्षा की आज्ञा-अनुज्ञा-अनुमति दे दी उन्होंने। आचार्य श्री के देवलोकगमन के ठीक एक माह

पांच दिन पश्चात् मिली दीक्षानुमति। पौषशुक्ला द्वादशी संवत् 1972 का दिन था वह। आयु थी 28 वर्ष की, मनोनीत आचार्य भगवन्त श्री शोभाचन्द्रजी महाराज के मुखारविन्द से आपकी दीक्षा सम्पन्न हुई।

इसी स्थिरवास काल में आचार्यश्री शोभाचन्द्र जी ने साढ़े 15 वर्ष की लघुवय के मुनिश्री श्री हस्तीमलजी को अपना उत्तराधिकारी भावी संघनायक मनोनीत किया। इतिहास उठाकर देख लीजिए, संभवत: इतनी कम उम्र में संघनायक जैसे उत्तरदायित्व पूर्ण प्रतिष्ठित पद पर चयन का उदाहरण अन्यत्र कहीं नहीं मिलेगा।

विक्रम संवत् 1983 में श्रावणी अमावस्या के दिन आचार्य श्री शोभाचन्दजी म.सा. का महाप्रयाण हुआ। संघ के समक्ष तब दिवंगत आचार्य श्री की भावना एवं उनके लिखित मनोनयन पत्र के आधार पर आचार्य पद के लिए मुनिश्री हस्तीमलजी म.सा. का नाम रखा गया। वय में अभी छोटे थे, उत्तरदायित्व बड़ा था, अत: स्वामीजी श्री सुजानमलजी म.सा. को संघ-व्यवस्थापक की जिम्मेदारी संघ ने सौंपी। आचार्य हस्ती के मनोनयन के समक्ष संघ प्रमुखों ने जब कहा कि-''मुनि अभी बहुत छोटे हैं, कैसे इतने विशाल संघ का उत्तरदायित्व निभायेंगे।'' आचार्य श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. ने पत्र में संकेत किया था- ''जब भी कोई गंभीर समस्या हो या मनोनयन, नेतृत्व के सम्बन्ध में कोई प्रश्न खड़ा हो तो मुनि श्री सागरमलजी म.सा. से पूछ लेना। मैंने उन्हें इस विषय में सब कुछ समझा दिया है। जिन्हें भी पूछना हो पूछ लें।''

व्यवहारसूत्र के तीसरे उद्देशक में आचार्य पद के योग्य कौन? इस प्रश्न का समाधान देते हुए बताया गया है कि जिस गच्छ में अनेक साधु-साध्वियाँ हों, जिसके संघाटक (संघाड़े) अलग-अलग विचरते व चातुर्मास करते हों जिसमें नवदीक्षित, बाल या तरुण साधु-साध्वियाँ हों उसमें कम से कम आचार्य और उपाध्याय इन दो पदवीधरों का तो होना नितांत आवश्यक है। इसी उद्देशक के सूत्र चार में स्पष्ट कथन है- पांच वर्ष की दीक्षा पर्याय वाला श्रमण यदि आचार कुशल, संयम कुशल, प्रवचन कुशल, प्रज्ञप्ति कुशल, संग्रह कुशल (द्रव्य से शिष्यादि और भाव से श्रुत, श्रुतार्थ तथा गुणों का आत्मा में संग्रह करना) उपग्रह कुशल और अक्षत चारित्र वाला हो, बहुश्रुत एवं बहुआगमज्ञ हो एवं कम से कम दशाश्रुतस्कन्ध, बृहत्कल्प और व्यवहार सूत्र को धारण करने वाला हो तो उसे आचार्य या उपाध्याय का पद देना कल्पता है।

इसी उद्देशक में आगे 9 वें सूत्र में दर्शाया गया है कि निरुद्धपरियाए समणे निग्गंथे कप्पइ तद्दिवसं आयरिय-उवज्झायत्ताए उद्दिसित्तए। अत्थि णं थेराणं तहारूवाणि कुलाणि, कडाणि, पत्तियाणि, थेज्जाणि वेसासियाणि, सम्मयाणि, सम्मुइकराणि, अणुमयाणि भवंति।

कितना स्पष्ट समाधान है। आचार्य-पद पर प्रतिष्ठित किये जाने सम्बन्धी ही नहीं, अपितु जीवन के हर क्षेत्र से सम्बन्धित और मरण के हर पहलू से भी सम्बन्धित समस्याओं का समाधान आप और हम वीतराग वाणी में पा सकते हैं। निरुद्ध अर्थात् अल्प पर्याय वाला श्रमण निर्ग्रन्थ जिस दिन दीक्षित हो उसी दिन आचार्य या उपाध्याय पद देना कल्पता है यदि वह स्थविर संतों के द्वारा तथारूप से भक्ति, प्रीतियुक्त, स्थित, विश्वस्त, सम्मत, प्रमुदित, अनुमत और बहुमत कुल से दीक्षित हुआ है। आचार्यश्री ने यह सब बात पूर्व में ही मुनि श्री सागरमलजी म.सा. को बता दी होगी।

पूज्य श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. वृद्धावस्था में आ पहुँचे। संवत् 1979 में जब वे 65 वर्ष की दीर्घायु में प्रवेश कर चुके थे, व्याधियाँ भी आपको घेरने लगीं। अस्वस्थ रहने के कारण अशक्तता बढ़ने लगी। उस समय जोधपुर के प्रमुख श्रावक शाहजी श्री नवरतनमलजी, श्री चन्दनमलजी कोचर मूथा, श्री तपस्वीलालजी डागा, श्रावकरत्न श्री राजमलजी मुणोत, श्री छोटमलजी डोसी आदि ने आचार्यश्री से जोधपुर में ही स्थिरवास विराजने की विनति की। अपने शरीर की अस्वस्थता-अशक्तता देखते हुए आचार्यश्री ने विनति स्वीकार की। उन्होंने वि. सं. 1979 की माघ शुक्ला पूर्णिमा से जोधपुर में स्थिरवास कर लिया। सं. 1983 तक आप जोधपुर में नौ मुनियों के साथ स्थिरवास में विराजे। साथ विराजने का सौभाग्य श्री सागरमल जी महाराज को भी प्राप्त हुआ।

आचार्य श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. का संवत् 1983 की श्रावण कृष्णा अमावस्या के दिन जोधपुर में स्वर्गवास हुआ। गुरु की पार्थिव देह, शरीर की नश्वरता का चिन्तन कर मुनि श्री सागरमलजी ने उसी दिन से जीवन पर्यन्त के लिए किसी भी तरह की औषधि, विटामिन, च्यवनप्राश या टॉनिक आदि के त्याग का संकल्प ग्रहण कर लिया। शरीर ने जब भोजन पचाना बन्द-सा कर दिया तो पाचन-शक्ति की अक्षमता का बोध कर जान लिया कि मृत्यु सन्निकट है। किशनगढ़ में संथारे की भावना बनी। आचार्य श्री हस्ती रींया विराज रहे थे। आने में समय लग सकता था, अतः आपने अनशन तप का प्रारम्भ कर दिया।

आचार्य भगवन्त पधारे, भावना में दृढ़ता देख संथारा कराया। लम्बा चला संथारा। सुदीर्घ 59 दिन के संथारे के पश्चात् संवत् 1985 की श्रावण कृष्णा 13 के दिन आपको समाधिमरण की प्राप्ति हुई।

आज इस रत्न सम्प्रदाय में ही नहीं, अन्यान्य अनेक जैन सम्प्रदायों में भी सागरमलजी महाराज की अपने गुरु, आचार्य भगवन्तों, स्थविर संतों आदि के प्रति की गई उत्कृष्ट सेवा का स्मरण कर उनका वन्दन, अभिनन्दन किया जाता है। उन्होंने बाह्य जगत में भटकते मन पर नियन्त्रण कर, स्वच्छन्दता पर रोक लगा स्वयं को ऐसा विनम्र बनाया कि विनय के लिए आज भी उनका दृष्टान्त दिया जाता है। अपने गुरु के प्रति और आचार्य भगवन्तों के प्रति उनका विनय तो ऐसा था, जैसा गौतम गणधर का भगवान महावीर के प्रति। गुरुचरणों व आचार्यों के चरणों में अपने आपको पूर्णत: समर्पित करने का सुफल ही था कि आपको जीवन के अन्तिम समय में 59 दिन का संथारा आया और इस लम्बी अवधि के संथारे में भी पूर्ण समाधि रही। निश्चय ही इसमें उनकी अनन्त पुण्यवानी का हाथ रहा होगा।

धन्य उनकी वह पुण्यवानी।
धन्य उनका वह गुरु समर्पित जीवन।।
धन्य उनका वह दीर्घकालीन संथारा।।

अन्त में यही मंगलकामना है कि हमारा और आपका भी वह दिन धन्य बने, जिस दिन हम उन महनीय श्रद्धेय मुनिवर के जीवन से कुछ ग्रहण कर अपने जीवन में कुछ परिवर्तन लायें। ■

DIFFICULTIES & PROBLEMS

Ms. Minakshi Surana (Adv.)

Difficulties in your life do not come to destroy you, but to help you realize your hidden potential. Let difficulties know that you are DIFFICULT!

There are two ways of meeting difficulties, you alter the difficulties or you alter yourself to meet them.

Half of the problems of this life can be traced to saying yes too quickly and not saying no soon enough.

90% problems of life are due to tone of voice. It's not what you say, it's how you say that creates problem. So have soft spoken. *-Surana Ki Badi Pole, Nagaur-341001 (Raj.)*

प्रासङ्गिक

महावीर वाणी का वैशिष्ट्य

श्री दुलीचन्द जैन 'साहित्यरत्न'

भारतवर्ष में सहस्रों वर्षों से ज्ञान की धारा ऋषियों, मुनियों एवं तीर्थंकरों द्वारा अजस्र रूप से प्रवाहित होती आ रही है। इसी परम्परा के जाज्वल्यमान तेजपुंज थे जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर श्रमण भगवान् महावीर। ध्यान की गहन साधना एवं कठोर तपस्या द्वारा उन्होंने आत्मज्ञान प्राप्त किया था। उन्हें अहिंसा और करुणा का अवतार कहा जाता है। यद्यपि उनके उपदेशों को आज 2500 वर्षों से अधिक का समय हो गया है, किन्तु वे आज भी उतने ही स्फूर्तिदायक एवं प्रेरणाप्रद हैं। मनुष्य जीवन के आध्यात्मिक उत्कर्ष के लिए वे संजीवनी का कार्य कर सकते हैं।

इस संदर्भ में भगवान् महावीर की अनुपम वाणी पर अनेक महापुरुषों ने अपने विचार प्रस्तुत किये हैं उनमें से कुछ महत्त्वपूर्ण विचारों को यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

महावीरवाणी का असर

"मैं कबूल करता हूँ कि मुझ पर गीता का गहरा असर है। उस गीता को छोड़ कर महावीर से बढ़कर किसी का असर मेरे चित्त पर नहीं है। महावीर ने जो आज्ञा दी है, वह बाबा को पूर्ण मान्य है। आज्ञा यह है कि सत्यग्राही बनो। हर मानव के पास सत्य का अंश होता है, इसलिए मानव का जन्म सार्थक होता है। हमें सत्य-ग्राही बनना चाहिये, यह जो शिक्षा है भगवान महावीर की, बाबा पर गीता के बाद उसी का असर है। गीता के बाद कहा, लेकिन जब देखता हूँ तो मुझे दोनों में फरक ही नहीं दीखता है।"

-आचार्य विनोबा भावे, समणसुत्तं, पृष्ठ 8

सुभाषित वचनामृतों का अक्षय सिंधु

"जैन-साहित्य का सूक्ति भण्डार महासागर से भी गहरा है। उसमें एक से एक दिव्य असंख्य मणि-मुक्ताएँ छिपी पड़ी हैं। सुभाषित वचनामृतों का तो एक महान् अक्षयसिंधु है। अध्यात्म और वैराग्य के लिए ही उपादेय नहीं, किन्तु पारिवारिक, सामाजिक आदि अनेक जीवन-विद्याओं के विकास एवं निर्वाह के हेतु नीति, व्यवहार आदि के उत्कृष्ट सुपरीक्षित सिद्धांत-वचन उनमें यत्र-तत्र

बिखरे पड़े हैं। उन्हें पाने के लिए कुछ गहरी डुबकी लगानी पड़ती है। किनारे-किनारे घूमने से और दृष्टि को संकुचित रखने से वे दिखाई नहीं दे सकते हैं, पलक मारते सहसा उपलब्ध नहीं हो सकते हैं''

-उपाध्याय अमर मुनि, सूक्ति-त्रिवेणी (जैन धारा), पृष्ठ 11

आत्मा की महिमा

''महावीर ने आत्मा की महिमा का जैसा गुणगान किया है, किसी ने भी नहीं किया। महावीर ने सारे परमात्मा को आत्मा में उंडेल दिया है। महावीर ने मनुष्य को जैसी महिमा दी है, और किसी ने भी नहीं दी। महावीर ने मनुष्य को सर्वोत्तम, सबसे ऊपर रखा है।''

-आचार्य रजनीश, जिन-सूत्र भाग 2, पृष्ठ 143

महावीर का चरित्र

''महावीर का चरित्र महिमापूर्ण है, क्योंकि वह मनुष्य का चरित्र है। महावीर मनुष्य से भगवान हुए हैं, उन्हें मनुष्यों का रत्ती-रत्ती पता है; उनका दुःख, उनकी पीड़ा, उनका संकट, उनकी मूढ़ता, अज्ञान, भ्रांतियाँ, माया-मोह, उनका भटकना उन्हें पूरी तरह पता है। इसलिए महावीर के वचनों में एक वैज्ञानिकता है।

महावीर के पैर जमीन में अड़े हैं, पर उनका सिर आकाश में उठा है। बड़ा यथार्थ, गहन अनुभव-पूरित मार्ग है। इसलिए महावीर के वचनों में रहस्यवाद नहीं है। वे कोई मिस्टिक नहीं हैं। वे किसी धुंधले लोक की, किसी आकाश की बात नहीं कर रहे है।'' *-जिनसूत्र, भाग 1, पृष्ठ 85*

ह्रदय के करीब भाषा

''इसलिए अगर जैन तीर्थंकरों की भाषा मनुष्य के ह्रदय के बहुत करीब है और जैन तीर्थंकरों और मनुष्यों के बीच कोई खाई-खंदक नहीं है तो कारण साफ है। जैन तीर्थंकर उसी जगह से आए जहाँ से तुम गुजर रहे हो। तुम्हारे दुःख उन्होंने जाने हैं। तुम्हारे कष्ट उन्होंने जाने हैं। तुम्हारा अनुभव उनका अनुभव भी है।''

-जिनसूत्र भाग 1, पृष्ठ 84

संजीवनी महौषधि - अनेकांत

''भगवान महावीर ने यह देखा कि जितने भी मत, पक्ष या दर्शन हैं, वे अपना एक विशेष पक्ष स्थापित करते हैं और विपक्ष का निरास करते हैं। भगवान

ने उन सभी तत्कालीन दार्शनिकों की दृष्टियों को समझने का प्रयत्न किया और उनको प्रतीत हुआ कि नाना मनुष्यों के वस्तु दर्शन में जो भेद हो जाता है, उसका कारण केवल वस्तु की अनेकरूपता या अनेकान्तात्मकता ही नहीं, बल्कि नाना मनुष्यों के देखने के प्रकार की अनेकता या नानारूपता भी कारण है। इसीलिए उन्होंने सभी मतों को, दर्शनों को वस्तु रूप के दर्शन में योग्य स्थान दिया है। किसी मत विशेष का सर्वथा निरास नहीं किया है। निरास यदि किया है, तो इस अर्थ में कि जो एकांत आग्रह का विषय था, अपने ही पक्ष को, अपने ही मत या दर्शन को सत्य और दूसरों के मत, दर्शन या पक्ष को मिथ्या मानने का जो कदाग्रह था, उसको निरास करके उन मतों को एक नया रूप दिया है। प्रत्येक मतवादी कदाग्रही होकर दूसरे के मत को मिथ्या बताते थे, वे समन्वय न कर सकने के कारण एकान्तवाद में ही फंसते थे। भगवान महावीर ने उन्हीं के मतों को स्वीकार करके उसमें से कदाग्रह का विष निकालकर सभी का समन्वय करके अनेकान्तवादरूपी संजीवनी महौषधि का निर्माण किया है।''

-पंडित दलसुख भाई मालवणिया,
आगम युग का जैन दर्शन, पृष्ठ-114

तीर्थंकरों का उपदेश

''सभी तीर्थंकरों के उपदेश की एकता का उदाहरण शास्त्र में भी मिलता है। आचारांग सूत्र में कहा गया है कि जो अरिहंत हो गए, जो अभी वर्तमान में हैं और जो भविष्य में होंगे, उन सभी का एक ही उपदेश है, कि किसी भी प्राण, जीव, भूत और सत्त्व की हत्या मत करो, उनके ऊपर अपनी सत्ता मत जमाओ, उनको गुलाम मत बनाओ और उनको मत सताओ, यही धर्म ध्रुव है, नित्य है शाश्वत है और विवेकी पुरुषों ने बताया है।'' *-आचारांग सूत्र 4/126*

प्रमाणभूत आगम

''आगम की व्याख्या तो इतनी ही है आप्त का कथन आगम है। जैन सम्मत आप्त कौन है? इसकी व्याख्या में कहा गया है कि जिसने राग और द्वेष को जीत लिया है, वह जिन, तीर्थंकर एवं सर्वज्ञ भगवान आप्त हैं। जिनका उपेदश एवं वाणी ही जैनागम है। उसमें वक्ता के साक्षात् दर्शन और वीतरागता के कारण दोष की संभावना ही नहीं, पूर्वापर विरोध भी नहीं और युक्ति बाध भी नहीं। अतएव मुख्य रूप से जिनों का उपदेश एवं उनकी ही वाणी प्रमाणभूत जैनागम माना जाता है और गौण रूप से उससे अनुप्राणित अन्य शास्त्र भी प्रमाणभूत माने

जाते हैं।'' *-आगमयुग का जैन दर्शन, पृष्ठ 6*

आज की अपनी बात

''भगवान महावीर के उपदेशों से ऐसा लगता है, मानो आज ही कोई महापुरुष अपनी बात कह रहा हो। पाठक यह भी देखेंगे कि उनकी भाषा कितनी सरल थी। यद्यपि आज उस भाषा का प्रचलन नहीं है, तथापि थोड़ा सा ध्यान देने पर वह भाषा आज भी आसानी से समझ में आ जाती है।''

-श्री यशपाल जैन, तीर्थंकर वर्द्धमान,
लेखक श्री श्रीचन्द रामपुरिया की भूमिका में पृष्ठ-6

अनंत ज्ञान-सम्पदा

''ऐहिक जीवन के अभ्युदय और पारलौकिक जीवन में निश्रेयस की प्राप्ति के लिये भगवान महावीर की धर्म देशना में सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चारित्र का जो मार्ग सद्भाव, सद्विचार और सदाचार के माध्यम से प्ररूपित हुआ है, वह संसारी गृहस्थ और वीतरागी मुमुक्षु के लिए समान रूप से उपयोगी है। इस धर्म में हजारों ग्रंथ हैं, और इसकी ज्ञान-संपदा अनंत है।

भगवान महावीर तपःसिद्ध तीर्थंकर थे, विशुद्ध आत्मज्ञ महापुरुष थे, केवलज्ञानमयी आत्म-ज्योति के साक्षात् स्वरूप थे, उनके रोम-रोम से यदि दिव्यध्वनि निसृत होती हो, उनके दर्शन मात्र से यदि दिव्यातिदिव्य आत्म संदेश प्राप्त होता हो तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है।

भगवान महावीर की वाणी का मूल विषय आत्मज्ञान है, जिसमें भेद विज्ञान से लोक, अलोक, जीव, अजीव, कर्म, कर्मफल, कर्मबंध, धर्म, संवर, निर्जरा, मोक्ष आदि पर भी अत्यंत सूक्ष्म विचार किया गया है।''

-डॉ. भगवान दास तिवारी, महावीर वाणी, पृष्ठ-74

समर्थ एवं सम्पन्न भाषा

''महावीर की भाषा उस समय जन सामान्य में प्रचलित अर्धमागधी है। भगवान महावीर जीव मात्र के कल्याण के लिए स्वानुभूत सत्य को सहज, सरल, स्पष्ट और यथातथ्य रूप में प्रकट करना चाहते थे।

आत्मज्ञ महापुरुष होने पर भी भगवान महावीर का लोकज्ञान खूब समृद्ध था। वे लोकमानस के महान मनोविज्ञानवेत्ता, काव्य-प्रतिभा के धनी और अद्भुत प्रतिभासम्पन्न महाज्ञानी भाषाविद् पंडित थे। इसलिए सत्य उनका साथी और भाषा उनकी वशवर्तिनी थी। उनकी धर्म देशना में कथन शैली की

विविधता, उक्तिकौशल का चमत्कार, काव्यात्मक प्रतिभा और वचन-भंगिमाओं का प्रयोग इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

महावीर वाणी आत्मा की आवाज है, जो आत्मा से उठी है, आत्मा को छूती है, आत्मा में समाती है और उसे अपने स्वरूप का ज्ञान प्रदान कर अपने ही आत्मस्वरूप में लीन होने की प्रेरणा देती है। एक सर्वज्ञ केवली द्वारा अनुभूत अंतिम सत्य की अभिव्यक्ति होने के कारण वह मनुष्य मात्र को अंतिम सत्य तक पहुँचने की प्रेरणा देती है।''

-डॉ. भगवानदास तिवारी, महावीर वाणी, पृष्ठ 75 से 81 से उद्धृत

अनुकम्पा से सरोबार

''भगवान महावीर की वाणी विश्वमैत्री तथा अनुकंपा के अमृत से सरोबार थी तथा उसमें गुणानुराग और मध्यस्थता का अनाहद नाद पूर्णतया गुंजित था। भगवान की वाणी में सत्य की अनंत आभा से परिपूर्ण विमल प्रकाश झलक रहा था और अपने दीर्घ अनुभव का निचोड़ यथार्थ रूप में अवतरित हुआ था। इसीलिए उनकी वाणी शिव-सुंदर बनी थी और लाखों करोड़ों मानवों के हृदय में नव चेतना भरने में सफल हुई थी।''

-प्रस्तोता:- चेयरमेन, करुणा अन्तरराष्ट्रीय,
70, टी.टी.के.रोड़, अल्वारपेट, चेन्नई-600018 (तमिलनाडु)

जैन छात्रों के लिए चेन्नई में आवास-व्यवस्था

जो प्रतिभाशाली जैन छात्र चेन्नई में रहकर अपना अध्ययन करना चाहते हैं, उनके लिए चेन्नई महानगर में आवास-व्यवस्था की गई है। कमजोर वित्तीय स्थिति वाले उन धर्मनिष्ठ मेधावी छात्रों को आमंत्रित किया जाता है जो अपने जीवन में पढ़-लिखकर संघ-समाज, देश व जिनशासन की सेवा के साथ अपने जीवन को संवारना चाहते हैं। चयन में सामायिक, प्रतिक्रमण, पच्चीस बोल तथा अन्य धार्मिक जानकारी एवं योग्यता रखने वालों को प्राथमिकता दी जाएगी। पारिवारिक, शैक्षणिक, सह-शैक्षणिक और अन्य आवश्यक तथ्यों के साथ पूर्ण विवरण सहित निम्नांकित पते पर आवेदन करें। आधे-अधूरे आवेदन-पत्र पर विचार नहीं किया जा सकेगा।

Dr. Dileep Dhing
Surana & Surana International Attorneys
61-63, Dr. Radhakrishnan Salai, Mylapore, Chennai-600004
Phone: 044-28120000/28120002

English-Section

Religious Harmony and Fellowship of Faiths: A Jaina Perspective (5)

Prof. Sagarmal Jain

(Continued from the last issue.....)

Alongwith these literary evidences there are some epigraphical evidences of religious tolerance of the Jainas also. Some Jaina ācāryas such as Rāmkirti and Jaymaṅgalasuri wrote the hymns in the praise of Tokalji and goddess Cāmuṇḍa.[40] Jaina Kings such as Kumārpāla, Viṣṇuvardhana and others constructed the temples of Śiva and Viṣnu along with the temple of Jaina.[41]

Finally, I would like to mention that Jainism has a sound philosophical foundation for religious tolerance and throughout the age, it practically never indulged in aggressive wars in the name of religion nor did they invoke divine sanction for cruelities against the people of alien faiths. They have always believed in religious harmony and fellowship of faiths.

Though generally Jainas do classify religions in the heretic view (mithyā-dṛṣṭi) and non-heretic view (samyak-dṛṣṭi) yet, mithyā-dṛṣṭi, according to them, is one who possesses one-sided view and considers others as totally false, while samyak-dṛṣṭi is the one who is unprejudiced and sees the truth in his opponents views also. It is interesting to note here that Jainism calls itself a union of heretic views (micchādaṁsaṇa-samūha). Siddhasena (5th cent. A.D.) mentions "Be glorious the teachings of Jina which are the union of all the heretic views i.e. the organic synthesis of one sided and partial views, essence of spiritual nectar and easily graspable to the aspirants of emancipation.[42]

Ānandaghana, a mystic Jaina saint of the 17th cent. A.D. remarks that just as ocean includes all the rivers so does Jainism all other faiths. Further, he beautifully expounds that all the six heretic schools are the organs of Jina and one who worships Jina also worships them.[43] Historically we also find

that various deities of other sects are adopted in Jainism and woshipped by the Jainas. Ācārya Somadeva in his work Yaśastilak-campū remarks that where there is no distortion from right faith and accepted vows, one follow the tradition prevailing in the country.[44]

As we have already said that Jainas believe in the unity of world religions, but unity, according to them, does not imply omnivorous unity in which all the alien faiths will conjoin each other to form a organic whole without loosing their own independent existence. In other words it believes in a harmonious co-existence or a liberal synthesis in which all the organs have their individual existence, but work for a common goal i.e. the peace of mankind. To eradicate the religious conflicts and violence from the world, some may give a slogan of "one world religion" but it is neither possible nor practicable so far as the diversities in human thoughts are in existence. In the Niyamasara it is said that there are different persons, their different activities or karmas and different levels or capacities, so one should not engage himself in hot discussions neither with other sects not one's own sect.[45]

Haribhadra remarks that the diversity in the teachings of the Sages is due to the diversity in the levels of their disciples or the diversity in standpoints adopted by the sages or the diversity in the period of time when they preached, or it is only an apparent diversity. Just as a physician prescribes medicine according to the nature of patient, its illness and the climate, so the case of diversity of religious teachings.[46] So far as diversity in time, place, levels and understanding of disciples is inevitable, variety in religious conflicts is to develop a tolerant outlook and to establish harmony among them.

At last I would like to conclude my paper by quoting a beautiful verse of religious tolerance of Ācārya Amitagati--

Sattveṣu maitrīṁ guṇīṣu pramodaṁ
Kliṣṭeṣu jīveṣu kṛpāparatvaṁ
Mādhyasthyabhāvṁ viparīta vṛttau
Sadā mamātmā vidadhātu deva.[47]

Oh Lord! I should be friendly to all the creatures of world and feel delighted in meeting the virtuous people. I should always be helpful to those who are in miserable conditions and tolerant to my opponents.

References:-

40. Jaina Silālekha Saṁgraha, vol. III, Introduction by G.C. Chaudhari. See also epigraphs of above mentioned book vol. I, II and III, No. 181, 249, 315, 332, 333, 356, 507, 649, 710.
41. Jaina Silālekha Saṁgraha, Vol. III, 'Introduction' by G.C. Chaudhari. See also epigraphs of above mentioned book vol. I,II and III, No.181, 249, 315, 332, 333, 356, 507, 649, 710.
42. Sanmatitarka-Prakarañа, Jñānodaya Trust, Ahmedabad, 1963.3/69
43. Namijinastavam-Ānandaghana Granthāvalī, Śrī Jaina Śreyaskara Manḍal, Mehesanā (1957).
44. Yaśastilaka-campū, Somadevaśūri, Nirṇay Sāgar Press Bombay, p. 373.
45. Niyamasāra, Kundakunda, 155, The Central Jaina Publishing House, Lucknow, 1931.
46. Yogadṛṣṭisamuccaya, Haribhadra, L.D. Instt. Ahmedabad, 1970.
47. Sāmāyika Pātha 1- Amitagati, Published in Sāmāyikasūtra, Sanmati Jñānapiṭha, Agra.

खुशहाल हो धरती का आंगन

श्री सुनित कुमार जैन

घटते वन्य-जीव खतरे में जीवन,
बिगड़ रहा प्रकृति का संतुलन,
पोषण से नहीं कोई मतलब,
अपनी स्वार्थ-पूर्ति हेतु,
'इंसान' कर रहा निरंतर शोषण,
जितना लेते हैं कुदरत से,
उतना ही हम करें समर्पण,
तभी खुशहाल हो धरती का आंगन।।

-जैन विहार कॉलोनी, अलीगढ़, जिला-टोंक-304023 (राज.)

संगोष्ठी-आलेख

आध्यात्मिकता और नैतिकता

डॉ. पी.सी. जैन

आध्यात्मिक कौन?	**आध्यात्मिकता देती है-**
जो हमेशा आत्मा के पास रहता है	पवित्र विचार
जो अपनी भूलों का परिष्कार करता है	बुद्धि का परिष्कार
जो सबमें स्वयं को देखता है	प्रज्ञा का जागरण
जो कषायों को उपशमित करता है	भोग से विरक्ति
जो स्वयं को उत्तरदायी समझता है	सकारात्मक सोच
जो नैतिक और प्रामाणिक जीवन जीता है	क्रूरता का शमन
जो कषाय मुक्ति की साधना करता है	विकार पर विजय
जो विषय-भोगों में सलक्ष्य संयमित रहता है	वाणी का संयम
जो पदार्थ को पदार्थ बुद्धि से देखता है	जीवन का परिवर्तन
जो कथनी और करनी में समानता रखता है	सहिष्णुता, क्षमा आदि गुणों को प्रोत्साहन
जो भीतर की ही घटना को जानता है	आत्मा की विशुद्धि
जो अन्याय और शोषण से सदा बचता है	सत्य की उपलब्धि
जो न्याय और नीति के प्रति समर्पित रहता है	संयममय जीवन शैली
जो समझने में सम्यग दृष्टिकोण रखता है	दुःख में धैर्य, सुख में अनासक्ति
जो सदा अंतर्मुखी चेतना में जीता है	लोभ एवं लालच पर नियन्त्रण

अध्यात्म में बाधक तत्त्व-

मिथ्या मान्यता

भौतिकता के प्रति आकर्षण/भोगलिप्सा

अहंकार

ममत्व (मूर्च्छा)

* आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 5-6 नवम्बर 2011 को जोधपुर में आयोजित 'अध्यात्म, समाज और भ्रष्टाचार' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेख।

आध्यात्मिकता : जीवन दृष्टि

- जीवन में पवित्रता की दृष्टि से अध्यात्म और नैतिकता दोनों उपयोगी हैं।
- अध्यात्म कर्तृनिष्ठ है और नैतिकता कर्मनिष्ठ, पर हैं दोनों धर्म।
- नैतिकता के धरातल पर ही अध्यात्म का प्रासाद खड़ा हो सकता है।
- आंतरिक चैतन्य का विकास अध्यात्म है और व्यवहार शुद्धि का विकास नैतिकता।
- भीतर में जो है, वह जब तक व्यवहार में नहीं उतरता, तब तक उसका मूल्य कैसे जाना जा सकता है?
- कोई भी व्यक्ति व्यावहारिक सत्य को स्वीकार किए बिना अध्यात्म की गहराइयों तक नहीं पहुँच पाता।
- अध्यात्म-जागरण का अर्थ है- जो विकार और अशुद्ध प्रवृत्तियाँ आत्मा को मलिन बना रही हैं, उनसे छुटकारा पाना।
- अध्यात्म चेतना का जागरण हुए बिना समस्या-समाधान के हजारों प्रयत्न हजारों वर्षों में भी सफल नहीं होते।
- जिस व्यक्ति में आत्मचेतना जाग जाती है, वही अपनी गलती का अहसास कर सकता है।
- अध्यात्म भावना के जागरण के लिए आवश्यक है कि विचार की परिणति आचार में हो।
- अध्यात्मनिष्ठ व्यक्तियों का समाज अधिक शालीन, अधिक शांतिमय और अधिक सौजन्यपूर्ण होता है।
- पदार्थ-विकास का अनियंत्रित कदम मानवता के विनाश की दिशा में बढ़ता है, अध्यात्मवादी इसे अच्छी तरह जानता है।
- आंतरिक जागरण, अंतःशोधन या अंतरंग प्रेरणा का नाम ही अध्यात्मवाद है।
- जब तक व्यक्ति अध्यात्मवाद को स्वीकार नहीं करेगा, तब तक वह हिंसा करता रहेगा।
- अध्यात्मवाद के सिवाय लालसा को सीमित करने का कोई और समर्थ उपाय नहीं है।
- संन्यासी न बनकर भी अध्यात्मविद्या को समझने वाले व्यक्ति संसार में शांति से जी सकते हैं, सुख और आनंद का रसास्वादन हर पल कर सकते

हैं।

- चाहे खगोल विद्या हो, तंत्र-मंत्र की विद्या हो या अन्य कोई विद्या हो, उन सबमें आत्मविद्या सर्वोत्तम है।
- जब तक शिक्षण में अध्यात्मविद्या को नहीं जोड़ा जाएगा, तब तक शिक्षा सफल नहीं हो सकेगी।
- 1. प्रमादमुक्ति, 2. वासनामुक्ति, 3. कषायमुक्ति ये तीन अध्यात्म साधना के आयाम हैं।

-निदेशक, सरस्वती उच्चस्तरीय अध्ययन अनुसंधान संस्थान, बी-417, प्रधान मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)

गुरु का सुमिरण

श्री गजेन्द्र कुमार जैन

(तर्जः- थोड़ा सा प्यार हुआ है)

गुरु जो आज मिले हैं, दर्श करना है बाकी।
दर्श करके गुरु के धन्य हो जाऊँगा साथी।।
जहाँ हो आपदाएँ, कभी ना हम घबरायें,
करें गुरु का सुमिरण, कष्ट जो दूर भगाये।
आज एक राह मिली है, जिस पे चलना है बाकी।।1।।

गुरु की अमृतवाणी, सफल करती ज़िन्दगानी,
गुरु है ज्ञान सागर, कर दे जीवन उजागर।
इनकी ध्यान क्रिया से, महकता सारा जहाँ है....।।2।।

गुरु हैं त्यागी-तपसी, बनावें सम्यक्दृष्टी,
करें कर्मों की निर्जरा, अपनी और सबकी।
मुझे सद्बोध दिया है, ग्रहण करना है बाकी....।।3।।

हुई जो गलती हमसे, हमको माफ करना,
'गजेन्द्र' के सिर पर, सदा ही हाथ रखना
ध्याऊँगा आपको मैं, मिला जो आप सा ज्ञानी।।4।।

-आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.)

संगोष्ठी-आलेख

चारित्रिक पूर्णता ही भ्रष्टाचार की शून्यता

डॉ. दिलीप सक्सेना

चारित्रिक पूर्णता होने पर सच्चरित्रता स्वतः ही आ जाती है और स्वाभाविक रूप से तदनुरूप दुराचार या भ्रष्टाचार शून्य हो जाता है। आध्यात्मिक उन्नयन और चारित्रिक पूर्णता परस्पर सम्बन्धित हैं। ये दोनों कैसे हों इसका दार्शनिक विश्लेषण आवश्यक है। इस प्रकरण में चरित्र की पूर्णता भ्रष्टाचार की शून्यता है, इस पर विचार किया जा रहा है।

चरित्र एवं आचरण

चारित्रिक और आध्यात्मिक उन्नयन के अर्थ और स्वरूप आदि पर चर्चा करने से पूर्व 'चरित्र' एवं 'अध्यात्म' की अवधारणाओं पर चर्चा करना आवश्यक है। इस सन्दर्भ में एक तथ्य निर्विवाद लगता है कि चरित्र और अध्यात्म इन दोनों की बात केवल 'मनुष्य' के सन्दर्भ में ही सार्थक है। पशु वनस्पति या जड़ के सन्दर्भ में किसी भी रूप में इनकी सार्थकता नहीं मानी जा सकती। यहीं पर यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि ऐसा क्यों है; और क्या है कि सम्पूर्ण सृष्टि में केवल मनुष्य के सन्दर्भ में ही इन अवधारणाओं की सार्थकता मानी जाती है।

इस प्रश्न का विश्लेषण करने के उपरान्त मुझे लगता है कि निम्नलिखित तत्त्व घटक इस मान्यता के आधार हैं-

1. मनुष्य का बौद्धिक पक्ष,
2. मनुष्य का सामाजिक पक्ष,
3. मनुष्य का भावात्मक पक्ष,
4. मनुष्य का संकल्पात्मक पक्ष,
5. मनुष्य की क्रिया, व्यवहार व आचरण सम्बन्धी पक्ष,
6. मनुष्य में आत्मा या इसी तरह की कोई अन्य सत्ता,

---

* आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 5-6 नवम्बर 2012 को जोधपुर में आयोजित 'अध्यात्म, समाज और भ्रष्टाचार' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेख।

7. मनुष्य द्वारा किसी दैवीय, ईश्वरीय सत्ता की प्रत्यक्ष-परोक्ष स्वीकृति।

उपर्युक्त सूची में कुछ अन्य घटक जोड़े या घटाएँ जा सकते हैं; लेकिन उनसे हमारी चर्चा पर कोई अन्तर नहीं आएगा। दूसरे, इन घटकों में चारित्रिक और आध्यात्मिक दोनों के पृथक्-पृथक् और सम्मिलित कारकों को शामिल किया गया है। इस सूची को निम्नलिखित तीन वर्गों में भी वर्गीकृत किया जा सकता है-

1. केवल चरित्र सम्बन्धी घटक
2. केवल अध्यात्म सम्बन्धी घटक और
3. दोनों से सम्बन्धित घटक।

मूल विषय के सन्दर्भ में पहले मनुष्य के चारित्रिक पक्ष का विश्लेषण करना मैं उचित समझता हूँ, क्योंकि यह मनुष्य के बाह्य, क्रियात्मक, गत्यात्मक पक्ष से सम्बन्धित है, जबकि आध्यात्मिक पक्ष मनुष्य की 'आन्तरिकता' से अधिक सम्बन्ध रखता है। यद्यपि कहीं जाकर ये दोनों सम्बन्धित भी हो जाते हैं, इसीलिए चारित्रिक पक्ष की चर्चा करते हुए स्वतः ही आध्यात्मिक पक्ष की ओर जाना पड़ेगा और इसी प्रकार आध्यात्मिक पक्ष की चर्चा करने पर स्वतः ही उसके चारित्रिक पक्ष की ओर आना पड़ेगा। वस्तुतः इन दोनों पक्षों का 'अन्तःसम्बन्ध' विश्लेषण को सुलभ बना देता है।

सुविधा के लिए यदि 'चरित्र' से प्रारम्भ किया जाए तो अधिक उचित रहेगा। मनुष्य बौद्धिक प्राणी होने के साथ-साथ सामाजिक प्राणी भी है। सामाजिक प्राणी होने के कारण मनुष्य के स्वभाव में ही कुछ ऐसा है कि मनुष्य अनिवार्यतः प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अन्तःक्रिया करता है। अन्तःक्रिया के द्वारा परस्पर व्यवहार किया जाता है। यद्यपि मनुष्य अनेक क्रियाएँ, व्यवहार और कर्म करता है, लेकिन उसकी वे क्रियाएँ जिनका सम्बन्ध उसकी भावना, संवेग, इच्छा आदि से न होकर विशुद्ध विवेक या दूसरे शब्दों में 'संकल्प' से होता है तथा जो संकल्प से निगमित होती हैं, उसके नियन्त्रण में रहती हैं, दूसरी ओर कर्ता से इतर किसी अन्य व्यक्ति को प्रत्यक्ष-परोक्ष, तत्काल-तदुपरान्त, अच्छे या बुरे किसी न किसी रूप में प्रभावित करती हैं, 'आचरण' कहलाती हैं।

इस प्रकार मनुष्य का हर व्यवहार क्रिया व कर्म, आचरण नहीं है, वरन् जिसमें अग्रांकित दो अनिवार्य और पर्याप्त लक्षण हों वही आचरण है-

1. जो कि संकल्प से सम्बन्धित हो।

2. जिसके द्वारा अन्यों पर प्रत्यक्ष-परोक्ष, तत्काल-तदुपरान्त, अच्छा-बुरा कोई प्रभाव पड़ रहा हो।

इस प्रकार मनुष्य का आचरण, मनुष्य के 'बौद्धिक और सामाजिक' स्वरूप का स्वाभाविक परिणाम है। पशु, वनस्पति या जड़ की क्रियाओं में उपर्युक्त दोनों लक्षणों का एक साथ पूरा होना सम्भव नहीं है। प्रथम लक्षण 'संकल्पता' मनुष्य के कर्म को 'उत्तरदायित्व' से और द्वितीय लक्षण 'प्रभावशीलता' से जोड़ देता है और ये दोनों मिलकर मानवीय कर्म के 'मूल्यांकन' की पृष्ठभूमि तैयार कर देते हैं। मनुष्य 'संकल्पता' के कारण अपने द्वारा किए गए कर्म, जिसे अब 'आचरण' कहा जाएगा, के लिए उत्तरदायी माना जा सकता है, बल्कि दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि जिस क्रिया के लिए मनुष्य सम्पूर्ण उत्तरदायित्व को विशुद्ध रूप से वहन करने के लिए तैयार है, वही कर्म उसके संकल्प से सम्बन्धित समझा जाना चाहिए।

मनुष्य इस प्रकार के उत्तरदायित्व एवं प्रभावशीलता युक्त आचरण से सम्बन्धित अनेकानेक संकल्पों को अपने अन्तस् में समाहित किए रहता है। इस प्रकार के संकल्पों की समष्टि का नाम ही 'चरित्र' है। अतः संकल्प, चरित्र की इकाई है और चरित्र, संकल्पों की समष्टि है। ये दोनों ही आन्तरिक पक्ष हैं और चरित्र व संकल्प का बाह्य, गत्यात्मक पक्ष या अभिव्यक्ति ही 'आचरण' है। अतः 'संकल्प' व 'चरित्र' तथा 'आचरण' एक ही विषय के आन्तरिक और बाह्य पक्ष कहे जा सकते हैं।

मनुष्य की सामाजिकता, अर्थात् ''अन्यों के साथ, अन्यों से सम्बन्ध बनाकर रहने की प्राकृतिक, स्वाभाविक और स्वरूपात्मक बाध्यता'' मानवीय आचरण के लिए एक अपरिहार्य मांग करती है और वह मांग है, आचरण का मूल्यांकन जिसे कि तकनीकी रूप में 'नैतिक मूल्यांकन' कहा जा सकता है। यदि मनुष्य के आचरण में 'अन्यों पर प्रभाव' नामक घटक अनिवार्यतः नहीं होता तो उसके आचरण के मूल्यांकन की आवश्यकता ही नहीं रहती। दूसरी ओर यदि वह अपने आचरण के लिए स्वयं उत्तरदायित्व वहन करने की 'संकल्पता' को नहीं रखता तो किसी भी प्रकार का मूल्यांकन करना वस्तुतः निरर्थक ही होता है, क्योंकि आचरण या चरित्र का मूल्यांकन करके वस्तुतः हम कर क्या रहे हैं, करना क्या चाह रहे हैं? इसे यदि ध्यानपूर्वक देखा जाए तो स्पष्ट हो जाएगा कि हम यह कह रहे हैं कि 'किसी' भी मनुष्य द्वारा किए गए सभी आचरण का

प्रत्यक्ष-परोक्ष, तत्काल-तदुपरान्त, सामाजिक-स्वरूप, व्यवस्था, संगठन, प्रणाली एवं अन्ततः सामाजिक-शुभ और सामाजिक-कल्याण पर अनिवार्यतः प्रभाव पड़ता है। चूँकि 'समाज ' की 'व्यक्ति' से यह मांग है कि उसके द्वारा किया गया प्रत्येक आचरण सामाजिक शुभ और कल्याण के विपरीत कदापि नहीं होना चाहिए। इस विपरीतता को राज्य, विधि, दण्ड आदि 'बाह्य-बाध्यकारी व्यवस्थाओं' के द्वारा रोकने के वैकल्पिक उपाय भी समाज द्वारा यद्यपि अर्जित और स्थापित कर लिए गए हैं, लेकिन इनके उपरान्त भी यह मांग बनी रहती है कि इन बाह्य-बाध्यकारी व्यवस्थाओं के अतिरिक्त कोई 'आन्तरिक और स्वैच्छिक व्यवस्था' भी होनी चाहिए, जिससे मनुष्य स्वयं आन्तरिक और स्वैच्छिक रूप से इस प्रकार का चरित्र रखे और आचरण करे कि वह सामाजिक शुभ व कल्याण के अनुकूल हो, प्रतिकूल नहीं।

वस्तुतः सामाजिक-शुभ को तथा उसके संघटकों यथा सामाजिक-व्यवस्था, सामाजिक-स्वरूप, सामाजिक-सम्बन्ध इत्यादि को सुगठित रूप में बनाए रखने की सर्वोत्तम कारगर और अचूक यदि कोई विधि है तो वह केवल 'नैतिक व्यवस्था' ही हो सकती है। किसी भी प्रकार की बाह्य-बाध्यकारी व्यवस्था, राज्य, कानून आदि बहुत लम्बे समय तक इस सन्दर्भ में उपादेय नहीं हो सकते, ऐसी मेरी मान्यता है। इस मान्यता के फलस्वरूप चरित्र और आचरण के 'उन्नयन का सन्दर्भ' स्वतः ही महत्त्वपूर्ण हो जाता है। वस्तुतः चरित्र, आचरण एवं इनके नैतिक मूल्यांकन की उपादेयता सामाजिक शुभ और कल्याण के सन्दर्भ में ही की गई है, इसी सन्दर्भ में ही तो मूल्याकंन की सार्थकता है अन्यथा नितान्त व्यक्तिगत सन्दर्भों में व्यक्तिगत-शुभ के लिए चारित्रिक-उन्नयन की कोई सार्थकता समझ में नहीं आती। लेकिन दूसरी ओर व्यक्तिगत शुभ और सन्दर्भों में आध्यात्मिक-उन्नयन निश्चित रूप से सार्थक है और यही वह बिन्दु है जहाँ कि चारित्रिक-उन्नयन और आध्यात्मिक-उन्नयन के सम्बन्ध की गुत्थी की जिज्ञासा को उठाते हुए इसका समाधान कर लेना चाहिए। चूँकि आचरण का उन्नयन, चरित्र का उन्नयन है, लेकिन जहाँ आचरण का एक छोर अपने से इतर अन्यों से जुड़ जाता है, वहीं चरित्र का एक छोर यद्यपि इस आचरण के दूसरे बचे हुए छोर से जुड़ा हुआ है, लेकिन स्वयं चरित्र का दूसरा छोर जहाँ जुड़ता है वहीं से 'आध्यात्मिकता' का सन्दर्भ शुरु हो जाता है।

आध्यात्मिकता

मनुष्य में स्वरूपतः जहाँ बौद्धिकता है, सामान्यतया अन्यान्य पक्ष हैं, वहीं उसके मूल में उसका कोई 'सार तत्त्व' भी अवश्य है, चाहे उसे 'आत्मा' कहें, 'चेतना' कहें, 'परमात्मा का अंश' कहें या कोई और नाम दें, क्योंकि उसे आत्मा, परमात्मा आदि कहकर अनात्मवादियों, अनीश्वरवादियों से उलझना यहाँ मंतव्य नहीं है, परंतु चाहे आत्मवादी हों या अनात्मवादी, ईश्वरवादी हों या अनीश्वरवादी, उसे अपने में निहित चेतन तत्त्व को मानना ही होगा, क्योंकि इसका निषेध सम्भव नहीं है, इसीलिये इसे 'सार तत्त्व' कहा जा सकता है। वस्तुतः मनुष्य का अपने इस 'सार तत्त्व' से जुड़ना ही उसका आध्यात्मिक हो जाना है। कहा जा सकता है कि मनुष्य का अपने चैतन्य स्वरूप में आ जाना, अवस्थित हो जाना ही 'आध्यात्मिकता' है। मनुष्य का आध्यात्मिक होना ही पर्याप्त है। 'आध्यात्मिक' होना और 'आध्यात्मिक-उन्नयन' ये दो अलग-अलग बातें नहीं हो सकतीं, क्योंकि यह एक ऐसा सन्दर्भ है जहाँ ये दोनों एक साथ घटित होंगी। मनुष्य आध्यात्मिक होने के साथ ही आध्यात्मिक-उन्नयन को स्वतः ही प्राप्त हो जाएगा। और इस स्थिति में आने पर उसका जो अनिवार्य परिणाम होगा वह उसके चरित्र का प्रकाशवान होना है और आध्यात्मिकता के प्रकाश से प्रकाशित हो जाना चरित्र का वास्तविक उन्नयन है। जब तक ऐसा नहीं है, तब तक चारित्र होते हुए भी चारित्रिक-उन्नयन नहीं कहा जा सकता। इस प्रकार आध्यात्मिकता होते ही आध्यात्मिक-उन्नयन और चारित्रिक-उन्नयन ये दोनों फलित हो जाते हैं और चारित्रिक-उन्नयन का अनिवार्य प्रतिफल मानवीय आचरण का व्यक्तिगत-शुभ और सामाजिक-शुभ दोनों के लिए एक साथ अनुकूलन होना है, क्योंकि वस्तुतः व्यक्तिगत-शुभ और सामाजिक-शुभ में कोई वास्तविक विरोध नहीं है। यद्यपि एक स्तर पर ऐसा आभास होता है, लेकिन ये दोनों शुभ परस्पर प्रतिकूल नहीं हैं, वरन् पूरक ही हैं।

उन्नयन के मार्ग

व्यक्तिगत-शुभ, सामाजिक-शुभ, चारित्रिक-उन्नयन एवं आध्यात्मिकता या आध्यात्मिक-उन्नयन के लिए मनुष्य का अपने में स्थित मूल सार-तत्त्व से साक्षात्कार ही एकमात्र वास्तविक उपाय है। उपदेश आदि चरित्र और आचरण के उन्नयन के केवल सहायक उपाय हो सकते हैं।

विभिन्न मार्गों और योगों के द्वारा आत्म-साक्षात्कार की सिद्धि के उपरान्त आध्यात्मिक-उन्नयन के परिणाम स्वरूप चारित्रिक-उन्नयन की प्राप्ति निश्चित

है, लेकिन इनके अतिरिक्त यदि चारित्रिक-उन्नयन के अन्य उपायों की ओर विचार किया जाए तो इस सन्दर्भ में, मैं कुछ अन्य उपाय भी प्रस्तुत करने की आवश्यकता अनुभव करता हूँ। वस्तुतः चारित्रिक-उन्नयन का एक स्तर, सन्दर्भ या आयाम वह है जिसे कि आत्म-चिंतन या स्व-विवेक का स्तर कहा जा सकता है, जिसमें कि मनुष्य सत्य, शुभ आदि का स्वयं आविष्कार और साक्षात्कार कर लेता है और तदनुरूप सदाचरण करने लगता है। लेकिन चरित्र और नैतिकता का यह स्तर दुर्लभ है। सामान्यतः सामान्य लोगों में इसकी सिद्धि, प्रायः सम्भव नहीं हो पाती। अतः हमारा मूल प्रश्न सामान्य लोगों में चारित्रिक-उन्नयन को लेकर यदि है, तो ऊपर वर्णित आत्म-साक्षात्कार एवं आत्म-चिन्तन के विशिष्ट साधनों के अतिरिक्त इस सन्दर्भ में निम्न सूत्र दिए जा सकते हैं।

1. वर्तमान में चारित्रिक और नैतिक-व्यवस्था और मूल्यों के पतन के कारणों में यदि हम नहीं भी जाएँ तो भी मैं एक बात की ओर ध्यान आकृष्ट करना आवश्यक समझता हूँ कि वर्तमान सामाजिक मानसिकता कुछ ऐसी बन गई है कि हम एक साथ 'द्विनिषेध' कर रहे हैं। हम उचित, सत्य और शुभ आचरण का केवल समुचित सम्मान ही नहीं कर रहे हैं, वरन् उन्हें प्रत्यक्ष-परोक्ष प्रताड़ित और निन्दित भी कर रहे हैं। आज ईमानदार होने को प्रायः बेवकूफी या मूर्खता का पर्याय समझा जा रहा है; कर्त्तव्य-परायणता केवल मूर्खों का कार्य मान लिया गया है। दूसरी ओर असत्य, अनुचित, अशुभ, भ्रष्ट और दुराचार की हम भर्त्सना और निन्दा, जो होनी ही चाहिए, नहीं कर रहे हैं वरन् उनका सम्मान और भरपूर प्रशंसा भी प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से कर रहे हैं, जिसके कारण अवमूल्यों की मूल्यों के रूप में स्थापना हो रही है और मूल्यों का अवमूल्यन होता चला जा रहा है। अतः हममें से प्रत्येक को साहस करना होगा, प्रतिज्ञा करनी होगी किः-

(1) आज और अभी से मैं साहस करके अनुचित, असत्य, अशुभ, भ्रष्ट और दुराचार आदि जो मुझे लगता है, को न केवल प्रत्यक्ष-परोक्ष सम्मान और प्रतिष्ठा नहीं करूँगा वरन् उसका खुलकर विरोध भी करूँगा।

(2) जहाँ भी मुझे लगेगा कि कोई उचित, सत्य, शुभ और सदाचार आदि किसी भी रूप में कर रहा है तो मैं आगे बढ़कर उसकी प्रशंसा और सम्मान करूँगा, न कि निन्दा।

इन दो सूत्रों पर काम करने से समाज मैं चारित्रिक मूल्यों की प्रतिष्ठा स्वतः

होती चली जाएगी एवं अवमूल्यों का स्वतः ही ह्रास हो जाएगा।

2. यदि ध्यान से देखा जाए तो समाज या समुदाय में चरित्र या आचरण सम्बन्धी मूल्यों को प्रतिस्थापित करने वाले हमेशा कुछ ही लोग या वर्ग हुआ करते हैं, शेष समुदाय तो मात्र उनका अनुसरण करता है। उदाहरण के लिए शिक्षक, राजनेता, धार्मिक-नेता, चल-चित्रीय नायक-नायिकाएँ आदि ऐसे विशिष्ट व्यक्ति या वर्ग हैं जिनके द्वारा किए गए आचरण का अनुसरण शेष समुदाय सहज और स्वाभाविक रूप से करता है। ये जैसा भी आचरण करते हैं चाहे वह मूल्यात्मक हो या अवमूल्यात्मक, वह अनुसरित होता है। शेष समुदाय बिना सोचे-समझे, प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से इनके अनुसरण में लग जाता है। अतः ऐसे लोगों या वर्ग की चरित्र-सम्बन्धी मूल्यों की प्रतिस्थापना में बहुत अधिक भूमिका और जिम्मेदारी है। यदि सुविधा के लिए इन्हें "संवेदनशील समूह" (Sensitive Group) नामकरण से सम्बोधित किया जाए तो उचित रहेगा, क्योंकि इनके आचरण का प्रभाव इतना अधिक संवेदनशील है जिसका अनुमान लगाना सम्भव नहीं है। जब इस संवेदनशील-समूह के आचरण की प्रभावशीलता इतनी संवेदनशील और व्यापक है तो (अ) प्रथमतः तो स्वयं इस समूह को अपनी इस जिम्मेदारी को समझना चाहिए अन्यथा (ब) अन्य व्यावहारिक उपाय यह हो सकता है कि जहाँ किसी सामान्य व्यक्ति के चारित्रिक और आचरणीय अवमूल्यन को चाहे एक बार क्षमा कर दिया जाए वहीं इस संवेदनशील-समूह द्वारा किए गए किसी भी अवमूल्यात्मक आचरण व चरित्र को अक्षम्य माना जाए और इसके लिए सम्पूर्ण समुदाय उसकी निन्दा और भर्त्सना करे ताकि पुनरावृत्ति न हो सके। वस्तुतः 'शुभ की प्रशंसा और अशुभ की भर्त्सना या निन्दा', चाहे सामान्य-समुदाय के सन्दर्भ में हो या संवेदनशील-समूह के सन्दर्भ में, इन दोनों अर्थात् प्रशंसा और निन्दा को मैं अपने आप में इतना महत्त्वपूर्ण शस्त्र मानता हूँ कि मात्र इन दोनों से भी अधिकांश सामाजिक, चारित्रिक और नैतिक व्यवस्था स्वतः सुव्यवस्थित और सुगठित हो सकती है। इसमें यदि बाधाएँ आती हैं तो उनका भी मूल्य है।

-दर्शनशास्त्र-विभाग,
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)

संगोष्ठी-आलेख

Transgression of Vows

Prof. J.R. Bhattacharyya

Transgression is a simple term which means crossing the limit of a vow. Actually it is not as simple as it appears to be, because transgression is that state when a vow is forsaken. There can be many reasons of forsaking, but its impact is certain. Not only it has an impact on individual level but on the social level also. Religious scriptures have tried to focus on the different angles of transgression of a vow.

Violation of laws makes the observer of vow aware of the faults come with these violations and restrain over self from these all. So observing a vow is totally conditional, vow itself is nothing but in real sense restraining over self from the violation, is a vow. In the same manner violation of vow makes some room for questions. There can be infinite numbers of reasons of violating a vow. Personal difficulty alone can be strong enough to defend violation of a vow. But dubiety in the theory, unfulfilled expectations, and dissatisfactions are some the dangerous causes which blow off one's mind far from the vows.

Jainism advocates individual development when spirituality is referred to, it is only because Jain theory neither believes in the order of creation nor in its creator. When creation and creator is inter-related, every aspect of worldly life is dependent on these two factors, creation and creator. In the same order spirituality is also dependent on these two, and the result of spiritual practices is also affected by these two to a great extent. Means dependence are more prominent, and with this dependence, impediments or obligations are compulsory. But when we talk about Jain order of spirituality

* आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 5-6 नवम्बर 2011 को जोधपुर में आयोजित 'अध्यात्म, समाज और भ्रष्टाचार' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेख।

we talk about spontaneous emergence of universe and lines are in existence from the time immemorial. So there is no body to take the account of living beings, means they are born free to do anything and more importantly they are responsible for their own avidities. Here, the significance of responsibility does not stand good as because, responsibility is a deal between two parties, there must be one who takes the account of all deeds and also that one who gives the account of his deeds, means there must be one to whom other one responds. But in absence of such authority like a creator or the *Īśvara* in other word, the living beings are utterly free to do on their mind. But in this condition the whole structure of spiritual cum-ethical value stand pointless and primarily the mechanism of vice and virtue will fall or will remain of no use. So Jainism has given sole authority to such an element which is neither supreme-being nor the inflictor of predicative like *Īśvara*, but it is karma. It has that supreme power which can bring upheaval whenever it comes to play its role. In reference to authority there is no difference between a creator and *karma*, but *karma* as a non-living particle has the same potential and power. Both of them act as a supreme regulator. From the point of view of logic a primary need of any spiritual and philosophical order is a governing element which can regulate the avidities of the universe and especially the living being.

Now in primary analysis it has been seen that in the Vedic order the authority is a creator who himself is a subject, and in Jainism - karma to which such authority is an endowment, is an object due to being non living by nothing and devoid of consciousness. But which is most important here is both the order are in demand of such authoritative entity whether it is in the form of a subject or a conscious entity or an object, an unconscious non-living element.

In the world history of religious order and spiritual path on regulator, governing authority or a controller is must, though; creator of the universe is a matter of choice. This is a fact which deserves to have special attention of the academicians. Spirituality starts crawling with ethical practices. Vows penance arduous practices are all part of this

ethics. Ethics without restraint is completely useless. So restraint is that responsibility which is .responsible to the authority means either the supreme-being or *karma*. Here *karma* is mentioned due to being of much importance in Jain order of spirituality. *Karma* never leaves a soul alone and accompanies even at the time of transition from one birth to another. There is another relevance of *karma* what does a living being do? The answer is *karma*; next question - What does a living-being enjoy? The answer is the fruit or result of *karma*. Transgression of vows is directly related to *karma*, the process is there are two gross accounts of conduct such as righteous conduct and vicious conduct. Transgression of vows is vicious conduct, conduct is activity, therefore - *atīcāra* is vicious activity. Vicious activity is the generator of consequences and sufferings, here it is related *karma*. Thus *karma* is basically an instrumental cause of other sufferings and enjoyment. Then *atīcāra* or transgration never leads to the righteous conduct neither to the ethics, but it leads to sufferings. With this background the whole ethical part on transgression may be reviewed.

Jain ethics is a vital component in discussing the theory and practice of spirituality.

Jain scriptures prescribe that there should be pure contemplation (*bhāvanā*) behind all these vows. A *śrāvaka* shall have to pass through those processes. In this, there are five types of contemplation mentioned in the Jain scriptures to become firm and steady in vows.

tatsthairyārthaṁ bhāvanāḥ pañca pañca. (7.3)

Moreover, in this regard the *Tattvārthasūtra* advocates to be refrained from the transgressions of the vows, five types of contemplations are responsible for the reestablishment of the vows. These are control over speech and mind, careful movement, mindful attention in taking and putting of useful materials and careful inspection of food and water in daylight. These are the contemplations while observing the vow of non-violence. *Tattvārthasūtra* speaks thus

vāṅ-mano-gupt īryādāna-nikṣepaṇa-samityālokita-pāna-bhojanāni-pañca (7.4)

Five types of contemplations to hold the truth are to be free from anger, greed, fear, joking and to speak as per prescription of the canons. Here the *Tattvārthasūtra* mentions that

krodha-lobha-bhīrutva-hāsya-pratyākhyānānya-anuvīci-bhāṣaṇaṁ ca pañca. (7.5)

These are the reasons behind speaking lie. One generally tells lie in the situation being trapped into these passions and emotions, such as, anger, greed and fear. Sometimes even without any specific reason one tells lie out of joking. So to be free from such sinful acts one should follow the Āgama, that can save anybody from committing these acts.

Next comes five contemplations on non-stealing. In the *Tattvārthasūtra* we find the following dictum on this matter-

śūnyāgāra-vimocitāvāsa-paroparodhākaraṇa-bhaikṣya-śuddhi-sadharmāvisaṁvādāḥ pañca. (7.6)

For observing the non-stealing a monk should maintain certain rules and regulations in his life. The aphorism says that he may stay in a lonely place such as in a cave or any vacant house or so, may stay in a house abandoned by anybody, he should not forbid other monks to stay in that place where he himself performed religious sermons and spiritual practices, to beg alms as per prescription of the canons otherwise it may come under the periphery of stealing due to remissness, and he should not indulge in such activities that may cause misunderstanding with other ascetics. These activities may attract the sinful activities in terms of stealing.

For contemplation in observing the celibacy one should deal a life as mentioned in the scriptures, these are-

strīrāga kathāravaṇa-tanmanoharāṅga nirīkṣaṇa pūrvaratānusmaraṇa-vṛṣyeṣṭarasa-svaśarīrasaṁskāra-tyāgāḥ pañca. (7.7)

It means that a monk should be reluctant from any passionate talk of women, he should not gaze at those limbs

and organs of female body which may the cause of the ignition of his sexual urge, he should not remember to those lustful acts what he experienced and enjoyed in his household life, he should renounce those heavy foods that generate excitement in body and mind, and he must not clean and take any special care of his own body by which tendency in distinguishing other bodies may rise in his mind.

In the same way there are five types of contemplation in relation to the vow of non-possession. Here an ascetic maintains the following rules and regulations, the scripture says that-

manojñāmanojñendriya-viṣaya-rāga-dveṣa-varjanāni
pañca (7.8)

He should not indulge in likings and disliking in touch-sense, taste-sense, smell-sense, optical-sense and ocular-sense. He should be free from any sensual passions.

Apart from these contemplations directly related to the five great vows, there are other contemplations that are to be obeyed by an ascetic, such as-

hiṁsādiṣvihāmutrā pāyā vadya-darśanam (7.9)

To commit violence etc. five sinful acts one becomes ruined in both this world and the next and accumulates condemnation. One can be free from sinful acts only when he sees the consequences. So looking into the result one should be refrained from these evil activities.

In the dictum *duḥkhameva vā* (7.10) it indicated the result always be negative and harmful for the evildoer. Everyone should keep in mind that non-violence results happiness while violence gives only the result of distress and unhappiness.

The dictum is- *maitrī-pramoda-kāruṇya-mādhyasthyāni ca*
sattva-guṇādhika-kliśyamānā vinayesu. (7.11)

It says that the observer of the vows should cultivate amity towards all creatures, delight in the distinction and honour of others, compassion for the deprived and equanimity towards the vainglorious.

Amity denotes the fellow-feeling with all the creatures. Other three feelings are the offshoots of amity, because the amity manifests sometimes through delight, compassion and equanimity. Where there is the possibility of self attribution amity flourishes through delight, in the condition when in-depth feelings become overwhelmed with others melancholy, amity turns into the form of compassion and when there is the rise of malignity in revolt, amity comes in the form of equanimity to subdue this evil force. So the amity manifests in different forms in different situations.

The other dictum in this regard is- *jagat-kāyasvabhau-vā saṁvega-vairāgyārtham.* (7.12) The observer should contemplate on the nature of the world outside and inside his own body in order to quicken fear of and reluctant over the worldly affairs. For observation of the vows it is necessary to obey this form of understanding that brings quick fear and displeasure towards worldly matters. It gives the comprehension of the cause of rebirth in fourfold lives and the impurity of one's physical body and mundane existence.

Jain scriptures also delineate the sinful or transgressed activities that responsible for the degradation of human value. So contrary to the virtues like non-violence and etc., the vices like violence are counted five as major.

The first sin is violence which is performed with the influence of passions, attachment and aversion. Any kind of violence certainly is followed by remissness. Physical violence is considered to be the dravyahis where as remissness should be responsible to be called as *bhāvahiṁsā.*

Tattvārthasūtra says - pramattayogāt prāṇavyaropaṇaṁ hiṁsā (7.13)

It means that the violence caused through remissness that goes up to the extent of killing living beings is called *hiṁsā*. Here a vital question may be raised whether the remissness be responsible for *hiṁsā*. It is not always certain that remissness becomes only responsible of death of a living being. There are natural calamities, such as, earthquake, flood, draught and so on that cause of death does not come

under *hiṁsā*. Sometimes even in a case of a mendicant while perfectly performing īryāsamiti (being careful in movement) may cause of killing living beings those deliberately come under certain situation. So the scriptures emphasize on the remissness which takes birth in the feelings is only responsible for *hiṁsā*. The cause behind the death of other living being is its lifespan-determining *karma*. Ācārya Amṛtacandra in his *Puruṣārthasiddhyupāya* says that when the passion, such as, attachment and aversion etc associate with the soul it becomes the cause of *hiṁsā*. And absence of those in the soul is a*hiṁsā*. It is the essence of *Jināgama*. In a subtle sense the violence (*hiṁsā*) is synonymous of the distortion (*vikāra*) of faith etc. It causes the gradual deterioration of the quality of the soul. It works both in internal and external mode. When the passions, such as, anger, pride, deceit and greed etc being dormant in human nature act internally, it is internal *hiṁsā* and when they come out in human behavior it is external *hiṁsā*. These are, on the other way called as *dravya hiṁsā* and *bhāva hiṁsā*.

The second vice is untruth. In the *Tattvārthasūtra* it is said that - asad *abhidhānam anṛtaṁ*. (7.14) Here again remissness is the cause of this vice. So when remissness becomes, the cause behind the untruth it becomes lie.

The third is the vice of stealing. For this it is said *adattādnaṁ steyam* (7.15). This is to say that without consent or permission of the owner one should not own any object. Even those things having no proprietor and which are not in his/her right should not own. That will also come under the vice of stealing. In practice in the present day society any type of exploitation would be considered as stealing.

The fourth vice is non-celibacy. It is said for that is *maithunam abrahma* (7.16). This means that indulging any sexual activities is non-celibacy. The conjugal relation of any kind comes under these vices. Although literary meaning of *maithuna* is a couple with male and female, but any activities with any tools that ignite the sexual passions come under this category.

Possessiveness is counted as one of the vices. Here it

is to be noted that both celibacy and non-possession was counted as a common vow at the time of 22 Tīrthaṅkaras except the first Lord Ṛṣabha and Lord Mahāvīra, and it was coined with the term *vahiddhādāna*. The meaning conjoins both accumulation and non-celibacy. In that period wife was considered to be one kind of possessions. But at the time of Lord Mahvīra celibacy got its special value for the upliftment of the status of the soul.

Vices in Possession - Accumulating anything with greed and passion is the cause of Possession. It is said that the seed of all sufferings lies in possessiveness. This tendency leads to the soul downgrading its own nature. Many Ācāryas in different passages of time in their treatises have defined the nature of *parigraha* in many ways, such as, in the *Samayasāra* (verse 207) it is said that desire itself is the possession; In the *Sarvārthasiddhi* (6/15) on possessiveness it is said that the mentality in resolution of owning certain things is possession; This is mine, I am the owner of this thing this type of attachment also leads to possession (*Tattvārthavārtika*, 7/17); Ācārya Pujyapāda in his *Sarvārthasiddhi* (4/21) says that through the fruition of the greed, the aggregation of the objects is called possession.

The term *parigraha* etymologically stands for accumulation from all directions. This is again classified by external and internal modes. The *Tattvārthasūtra* specifically mentions that *mūrchā parigrahaḥ* (7.17) which simply indicates that remissness is the cause or the other name of *parigraha*. The source of the remissness is attachment. So when attachment emerges it lasts long for more accumulation, hoarding and preservation. Without the origination of remissness in internal level one does not urge for possession of worldly matters. When these are not achieved or received infatuation naturally originates. When the term remissness comes, Jainism considers the internal situation. It emphasizes on emotional states because without having the external matters one can fix a solemn vow on those. On the other hand, having endowed with physical matters if one has no attachment towards them it may be considered as non-

possessiveness. There are certain points which raise debates in monastic life. The question generally sprouts whether the clothing, utensils of a monk are a mark of possession, whether the broom and kamaṇḍulu etc are mark of possessions. It is also to taken into account that without renunciation of external matters one cannot purify the emotional states. Even then for the necessity of external purification certain commodities are required. Ever since one's initiation, an ascetic with all effort to maintain monastic life becomes cautious about inclination of attachment towards worldly affairs.

In case of a householder Lord Mahāvīra propounded the discipline aṇuvrata. It is said in the *Tattvārthasūtra* that aṇuvrato'gārī (7.20). It means that householders are the holders of aṇuvrata.

Apart from the Śvetmbara canonical texts, other Jain Ācāryas, such as, Umāsvāti in the *Tattvārthasūtra* and Ācārya Samantabhadra in the *Ratnakaraṇḍaka śrāvakācāra* and many other cryas throughout the ages have defined the code of conduct of a householder in many ways.

Tattvārthasūtra says -

dig-deśā-narthadaṇḍavirati-sāmāyika-pausadhopavāso-
pabhoga-paribhoga-parimāṇā-tithi-saṁvibhāga-vrata-
sampannaśca(7.21)

A *śravaka* has to observe 12 vows, under which 5 *aṇuvratas* (small vows) that corresponds with the 5 great vows of the mendicants in a relaxed form, 7 *śīlavratas* in which 3 *guṇavratas* and 4 *śikṣāvratas* are merged. So these 12 vows are categorized as 5 *aṇuvratas* based on - *ahiṁsā* (non-violence), *satya* (truth), *acaurya* (non-stealing), *brahmacarya* (celibacy) and *aparigraha* (non-possession); 3 *guṇavratas* - *digvrata, deśavrata*, and *anarthadaṇḍavrata*, and 4 śikṣāvratas - *sāmāyikavrata*, pauṣadhovāsavrata, *bhogopabhoga-parimāṇavrata* and *atithi-saṁvibhāgavrata*.

Ahiṁsāṇuvrata (non-violence) - To be refrain from violence is the non-violence and it is rather in relaxed form than that of an ascetic. In dealing with the house-holdings to

keep one free from violence is impossible. In this situation a *śrāvaka* can minimize his sinful activities with a vow to not to commit any such act deliberately. He should be very mindful in his actions that neither he commits wrong deed through mind, speech and body, nor he will do himself nor allow other to do that and never he approves such deed of others. In the Śvetāmbara canon, *Uvāsagadasāo*, there are mentions of five gross violence from where an ideal *śrāvaka* can make himself free. These are *baṁdhe* (tying animals), *vahe* (killing), *chavicchede* (piercing the organs and limbs), *atibhāre* (overloading on animal), *bhattapāṇavocchede* (to give insufficient food and water to the animals and servants). An ideal *śrāvaka* should know these sinful acts properly but should not commit. This lesson we find in the canonical texts.

Satyāṇuvrata (truth) - After *ahiṁsā* comes satya, the truth. These two human values reciprocally compensate each other. It is difficult even to imagine one's existence without the other. Non-violence can only be observed with the support of the truth. Ascetics are avowed to perform this vow in its true nature, but for the house-holders this is observed partially. He may be refrained from telling such truth that can cause harm for him and others. He should not tell a lie with resolution, being a judge he should not allow non-truth, being a preacher he should not knowingly mean the truth other way, he should not tell a lie after wining the faith of others and not to speak any objectionable truth. This scriptural prescription of partial truth of a house-holder has been precisely mentioned in the *Uvāsagadasāo*. It says, a *śrāvaka* should know five kinds of violation of partial truth but should not act upon these, such as, *sahasābhakkhāṇe* (unthoughtful comments), *rahassa-bbhakkhāṇe* (revealing the secrecy), *sadāramaṁtabhee* (disclose the personal speech of wife to others), *mosovaese* (misguiding others) and *kuḍalehakaraṇe* (forgery).

acauryāṇuvrata (non-stealing) - A *śrāvaka*, unlike an ascetic should observe the small vow of the non-stealing. He should not take any object that has not been given to him. Without renunciation of stealing one cannot observe non-violence and other vows properly. In the canonical texts it has

been defined in the way that a *śrāvaka* should know the demerits of violation of such laws but should not perform these, such as, *teṇāhaḍe* (accumulation of such objects which are already stolen), *takkarappaoge* (send thief out of revenge or jealousy to others), *viruddharajjātikkame* (encroachment to other's territory), *kuḍatula-kuḍamāṇe* (misappropriation in size-weighing) and *tappaḍirūvaga-vavahāre* (adulteration). An ideal *śrāvaka* should always be cautious to be free from at least the gross violation of these non-stealing vows.

In the life of a *śrāvaka*, celibacy is a vital part in small vows. Again it is not possible for a house-holder to maintain celibacy as an ascetic does. So for a house-holder the vow is maintained in satisfaction with own spouse. With the violation of this, human society cannot maintain its sanctity. A self restraint life of individual can make a viable society with peaceful coexistence. The scripture prescribes that a man should not indulge in such activities that attract adultery in one's own family in particular and the society at large. So certain rules are there to be followed by the house-holders.

Aparigragāṇuvrata (non-possession) In the same way a *śrāvaka* should not transgress the vow of non-possession. Again, it cannot be compared with them who observe this vow at a greatest length as a great vow. For a monk, there is no question to keep anything as his own. For a house-holder this vow comes as limitation of desire. The life of Ānanda śrāvaka, in the *Uvāsagsadasāo*, we find the description of huge material property and on the other, we see how that great śrāvaka, gradually renouncing all these, minimizing physical properties and controlling his desire overcome the obstacles of the spiritual path. So limiting desire is more important than heaping up material property.

Apart from these gross vows the scriptures describe elaborately the other vows known as *śīkṣāvratas* and *guṇavratas*. Both the Śvetāmbara canons and Digambara texts deal with this ethical part of the ascetics and house-holders at a great length. There is every scope to know the demerit of undoing virtue. There are ample examples in the scriptures that teach us about merit of virtue and the demerits of the

vices. Ethical values are performed and manifested accordingly in human life that purifies the gross body through austerity and penance. And gradually this impression (*saṁskāra*) is embossed in the subtle life that subsequently leads to the spiritual path, the ultimate goal of a living being.

Books consulted:

1. Amitagati-śrāvakācāra of Ācārya Amitagati, śrāvakācāra-saṁgraha, part-1, edited and translated by Hiralal Shastri, Jain Samskriti Samrakshak Sangha, Sholapur, 2001.
2. Aṁgasuttāṇi (part - 3). Jain Vishva Bharati, Ladnun, VS 2031(=1974)
3. Āvayśakasūtra.ed by Nemichand Banthia and Parasmal Chandalia, Shri Akhil Bharatiya sudharma Jain sanskriti rakshak sangha, Jodhpur, Branch, Beawar.
4. Paramātmaprakāśa of Joindudeva. Param śrut Prabhāvak Maṇḍal, Agas, 2000.
5. Puruṣārthasiddhyupāya of Amṛtacandra, swadhin granthamala, Santosh Bhawan, Katra Bazar, Sagar, 1969
6. Ratnakaraṇḍakaśrvakācāra of Samantabhadra. Shri Vitaraga vigyan swadhyay Mandir trust, Ajmer, 2003
7. Samayasāra of Kundakunda, Ahimsa Vidya Mandir Prakashan, Dariyaganj, Delhi, 1997
8. Sarvārthasiddhi of Pujyapāda, ed by Phool Chand Shastri, Bhratiya Jñānapīṭh, 1991
9. Śrāvakācārasaṁgraha, Jain Sanskriti Sanrakshaka Sangha, Jivaraj jain Granthamala, Sholapur, 1978.
10. Tattvārthasūtra (That Which Is). Translated with Introduction, Nathmal Tatia, Harpar Collins Publisher, 1994.
11. Tattvārthavārtika (part 1,2) of Akalaka. Ed. By Mahendra kumar Nyāyācārya, Bharatiya Jñānapīṭh, Delhi, 1990.
12. Uttarādhyāyana. Jain Vishva Bharati Publication.

-Professor, Department of Sanskrit and Prakrit
Jain Vishva Bharati University
Ladnun - 341 306, Rajasthan

संगोष्ठी-आलेख

Spirituality and Corruption

Sh. Shrikant Jain

Spirituality has been defined in numerous ways. These include: a belief to achieve liberation through self realization of an inner soul, a sense of interconnectedness with all living creatures; and an awareness of the purpose and meaning of life and the development of personal absolute values.

In other words: Spirituality means try to be who you really are. Honesty, kindness, unconditional love with positive regards and belongingness all these positive traits are the nature of mankind and to sustain it is spirituality.

While corruption means lack of integrity or honesty and use of a position or power for dishonest gain.

In other words corruption means try to be who you are not. Dishonesty, cruelty, hate, jealousy and greed all these negative traits are not the nature of mankind, but to live with these negative traits is corruption.

Lack of spirituality is leading to corruption and scams in the country. Corruption is happening because there is no sense of unconditional love. We need to create that belonging through spiritual practices like meditation, reading good literature and listen to spiritual Gurus.

I believe spirituality or corruption develops in the background of our thought process. Thought is a very powerful tool. Positive thoughts build the person, people, society, community and the country while negative thoughts knock down the person, people, society, community and the country.

Our thoughts create our destiny. If the thoughts are positive then the action will be positive and produce the positive result while the negative thoughts will lead to negative action and

---

* आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 5-6 नवम्बर 2011 को जोधपुर में आयोजित 'अध्यात्म, समाज और भ्रष्टाचार' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेख।

the result will be negative as well.

There is a beautiful saying: **"Watch your thoughts they become your words, watch your words they become your actions, watch your actions they become your habits, watch your habits they become your character and watch your character that become your destiny."**

Abraham Maslow's hierarchy of needs model is a crucial theory to understand the starting place of spirituality and corruption in a better way. Though he developed the Hierarchy of Needs model in 1940-50s in USA, and the Hierarchy of Needs theory remains valid today for understanding human motivation, management training, and personal development. Indeed, Maslow's ideas surrounding the Hierarchy of Needs concerning the responsibility of employers to provide a workplace environment that encourages and enables employees to fulfill their own unique potential (self-actualization) are today more relevant than ever..

There have been many interpretations of Maslow's Hierarchy of Needs but to relate this with spirituality and corruption are my own interpretations and are not offered as Maslow's original work.

1. **Biological and Physiological needs** - air, food, drink, shelter, clothe, sleepd etc.

   The spiritual people are content people who fulfill their basic life needs with honesty while the corrupted people are greedy to gain more and more by untruthfulness.

2. **Safety needs**- protection, financial security. Spiritual people if they gain financially, they have courage to contribute to society while corrupted people have fear to lose.

3. **Belongingness and Love needs**- work group, family, affection, relationships etc.

   Where the spirituality resides there will be unconditional love and positive regards for the people while in corruption there will be an attachment and selfishness.

4. **Esteem needs**- self-esteem, achievement, mastery, independence, status, dominance, prestige etc.

   At this stage the spirituality leads the people to gratitude

while corruption shows the way of Ego.

I firmly believe that spirituality starts with gratitude because gratitude is the foundation of spirituality. There is a nice saying:

Out of gratitude the love is born.
Out of love the devotion is born.
Out of devotion the faith is born.
And out of faith the miracle happens.

Miracle is self actualization and self actualization means, to know who am I and what is the true purpose of my life.

5. **Self-Actualization needs**- realizing personal potential, self-fulfillment.

Self actualization or self realization is the stage where spirituality exists. At this stage, there is no corruption but the interesting fact is the most of the people die to fulfill their basic life needs and they rarely reach to the stage of self actualization.

Few people, who realize, who they are and what the purpose of their life, live with spirituality.

These people are spontaneous, natural and authentic.

-Director, SWASH PD Pvt. Ltd.,
Dasapa House, Loco Shade Road, Jodhpur (Raj.)

अभिमत

श्री सुनील बैद

जोधपुर में 5-6 नवम्बर, 2011 को परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के सान्निध्य में 'अध्यात्म, समाज और भ्रष्टाचार' विषय पर सम्पन्न संगोष्ठी में जो विचार अभिव्यक्त हुए हैं और उनका प्रकाशन जिनवाणी पत्रिका में करने से जन-जन लाभान्वित हुआ है। यह समाज और देश के लिए हितकारी कार्य है। अध्यात्म और भ्रष्टाचार, भ्रष्टाचार उन्मूलन में अध्यात्म की भूमिका, भ्रष्टाचार का दर्शन, भ्रष्टाचार पर सामाजिक नियंत्रण, नैतिकतापूर्ण जीविकोपार्जन, भ्रष्टाचार-विषयक गांधी-चिन्तन, बौद्धदर्शन में भ्रष्टाचार-उन्मूलन के तत्त्व, चिकित्सा में भ्रष्टाचार आदि लेखों के माध्यम से बहुत सारी महत्त्वपूर्ण जानकारी मिली।

-भीनासर, बीकानेर (राज.)

पत्र-स्तम्भ

दीवार जब टूट जाती है (13)

आचार्य विजयरत्नसुंदरसूरि जी

दो भाइयों में परस्पर किसी भी बात को लेकर अनबन हो सकती है एवं वे एक-दूसरे के प्रति घृणा तथा द्वेष से आविष्ट होकर कलह कर सकते हैं। ऐसे भाइयों में सुलह होना कितना कठिन है, यह तथ्य जानें यहाँ भाई यश एवं महाराज के पारस्परिक पत्रों के संवाद से।**-सम्पादक**

महाराज साहब,

आपका गत पत्र पढ़कर मैं उत्साहित हो गया।

मार्ग यदि सम्यक् ही है,

निष्ठा यदि शुभ ही है,

प्रवृत्ति यदि सदाचरणयुक्त ही है, तो फिर विपरीत प्रतिभाव

अथवा विरोध की आवाज की बहुत परवाह नहीं करनी चाहिए-

आपकी इस बात से मन पूर्णतया सहमत हो गया है।

फिर भी एक बात आपसे पूछूँ?

मेरे मन में बैठी हुई यह बात यदि

मेरे परिवारजनों के मन में भी बैठ जाती है तो

कोई दिक्कत नहीं आती, परंतु जब परिवारजनों को

यह बात नहीं जमती तब उसको अमल में लाने में अपार

परेशानियाँ आती हैं, घर का वातावरण बोझिल बन जाता है।

एकदम छोटी-सी बात बताऊँ?

मुझे टी.वी.नहीं देखना है और पत्नी को देखना है।

मुझे घर में व्यापार की बातें नहीं करनी हैं और बड़े भैया को करनी हैं।

मुझे होटल में नहीं जाना है और मेरी बेटी को होटल में जाना है।

मैं अपने बेटे को मातृभाषा में पढ़ाना चाहता हूँ

और पत्नी का आग्रह कॉन्वेन्ट में पढ़ाने का है।

परमात्मा की पूजा दो घण्टे तक किये बिना मुझे चैन नहीं पड़ता

और बड़े भैया का आग्रह है कि आधे घण्टे में ही पूजा समाप्त करके
मैं दुकान में हाज़िर हो जाऊँ।
भाभी चाहती हैं कि प्रतिदिन घर में संध्याभजन होने ही चाहिए
और पत्नी को इसमें कोई रुचि ही नहीं है।
ऐसे सब प्रसंगों में मन सचमुच परेशान हो जाता है।
हृदय की सुनने पर परिवारजन नाराज़ हो जाते हैं
और परिवारजनों के अभिप्राय के अनुसार व्यवहार करने के लिए
हृदय की आवाज को गौण करना पड़ता है। करना क्या?

यश,

मान लो कि तुम गाड़ी लेकर ऑफिस जा रहे हो,
तुम्हारी ड्राइविंग अच्छी है, तुम्हारी गाड़ी भी अच्छी है, परंतु
तुम जिस रास्ते पर गाड़ी चला रहे हो, वह रास्ता खराब है।
तुम्हें गाड़ी की गति कम करनी ही पड़ेगी।
यदि रास्ता एकदम अच्छा है, परंतु उस पर
अन्य गाड़ियों की भी अतिशय चहल-पहल है
तुम्हें उसको ध्यान में रखकर ही गाड़ी चलानी पड़ेगी ना?
और मान लो
गाड़ियों की चहल-पहल भी बहुत नहीं है, परंतु सिग्नल लाल-लाइट
दिखा रहा है।
तुम्हें गाड़ी को खड़ा कर ही देना पड़ेगा ना?
संक्षिप्त में, तुम्हें दो बातों में सावधान रहना पड़ेगा।
तुम्हारी गाड़ी किसी के साथ टकरा न जाए और
कोई तुम्हारी गाड़ी को टक्कर न मार दे।
बस, तुमने जो वेदना और समस्या व्यक्त की है
उसके समाधान के रूप में मैं तुम्हें यही बताना चाहता हूँ।
अनेकों के बीच रहकर तुम्हें और मुझे, हम सभी को जीवन जीना है।
सबकी सोच अलग है।
सबकी रुचि अलग है।
सबके संस्कार अलग हैं।
मुझे जो महत्त्वपूर्ण लगता है,

सामने वाले को भी वह महत्त्वपूर्ण ही लगे ऐसा नहीं होता।
सामने वाले को जो महत्वपूर्ण लगता है
मुझे वह बिल्कुल मूल्यहीन लगे यह भी संभावित है।
ऐसी स्थिति में यदि हम आवेश में आ जाएँ,
तकरार कर बैठें,
तो संभव है लाभ के बदले हमें बहुत बड़ी हानि हो जाए।
संक्षिप्त में कहूँ तो लाभ और हानि के बीच में किसी एक को पसंद करने का
अवसर आए तब 'लाभ' को ही पसंद करना,
परंतु अल्प हानि और अधिक हानि के बीच में किसी एक को पसंद करने की
नौबत आए तब 'अधिक हानि' से अपने आपको बचाते रहना।
मैं क्या कहना चाहता हूँ तुम समझ गए होंगे।

महाराज साहब,

कैसी करुण वास्तविकता है इस संसार की कि जहाँ हमेशा
लाभ और हानि के बीच ही एक को पसंद करने का विकल्प
सुलभ नहीं होता, बल्कि कभी अल्प हानि और
अधिक हानि के बीच में से भी किसी एक को पसंद करना पड़ता है।
क्या कहूँ आपको?

हम–जैसे संसारियों की किस्मत में
लाभ–हानि के बीच में से किसी एक को पसंद करने के
जितने अवसर आते हैं
उनसे कई गुना अधिक अवसर तो अल्प हानि–अधिक हानि के
बीच में से
किसी एक को पसंद करने के ही आते हैं।

क्या पूरा जीवन हमें इसी तरह बिताना होगा?
क्या इसमें से बाहर निकल जाने का कोई मार्ग ही नहीं है?

यश,

जीवन को पवित्र और प्रसन्न रखने के लिए चार सोपानों में से
प्रथम सोपान 'सत्यनिष्ठ बनिए' यह है तो दूसरा सोपान
'सावधान बनिए' यह है।

तुमने जो आशंका प्रस्तुत की है उसका समाधान यही है।
'हानि' को ही पसंद करना पड़े ऐसी परिस्थिति से
बचते रहने का श्रेष्ठ उपाय है, 'सावधान बनिए।'
किसमें सावधान रहना है?
किस बात में सावधान रहना है?
यदि तुम यह पूछते हो तो उसका जवाब यह है कि
निमित्तों को पसंद करने में अत्यंत सावधान रहना चाहिए।
टी.वी. पर आने वाली सीरियलें यदि तुम ऐसी पसंद करते हो कि
जिसमें अत्यंत कामुक दृश्य आते हैं
तो तुम्हारा मन विकारग्रस्त बना रहेगा यह बात निश्चित ही है।
बिलकुल तुच्छ बातों को लेकर भी यदि
परिवारजनों के साथ तुम झगड़ा करते रहते हो
तो तुम्हारा मन क्लेशग्रस्त बना रहेगा यह निश्चित ही है।
व्यावहारिक सत्य पर ही यदि तुम अपने मन की बाज़ी लगा देने के लिए
तैयार हो तो तुम्हारे जीवन में दुर्घटना का होना निश्चित ही है।
याद रखना।
सुवासनिष्ठ बनने के बाद
अनजाने में भी कचरे के ढ़ेर की ओर कदम न बढ़ जाए इस विषय में
सावधान रहना ही पड़ता है।
संपत्तिनिष्ठ बनने के बाद
बदमाशों की गली में प्रवेश करने की ग़लती अनजाने में भी न हो जाए
यह सावधानी रखनी ही पड़ती है।
स्वास्थनिष्ठ बनने के बाद
ठेले-खोमचे और पान के गल्ले के पास खड़े रहकर
पानी-पूरी अथवा गुटके की पुड़िया पेट में डालने की ग़लती से
अपने आपको बचाना ही पड़ता है।
बस, इसी प्रकार सत्यनिष्ठ बनने के बाद
उस सत्य के लिए बाधक, जोखिमी
और भयंकर सिद्ध होने वाले सभी प्रकार के निमित्तों से

अपने आपको दूर रखने की सावधानी बरतनी ही पड़ती है।
क्या कहूँ तुम्हें ?
सत्यनिष्ठ बनने के बाद जो भी इस मामले में लापरवाह रहे हैं,
"इसमें क्या हो गया ?" ऐसी विचारधारा के शिकार बन गए हैं,
"हमारा मन दृढ़ है" ऐसी गलतफहमी के शिकार बनकर
अनुचित निमित्तों का सेवन करने लगे हैं,
उन्होंने अपनी सत्यनिष्ठा तो गँवा ही दी है,
साथ-साथ अपने जीवन और मन को अनेक प्रकार के ग़लत आचरण और
ग़लत मान्यताओं से ग्रस्त और व्याप्त भी बना दिया है।
जलने से बचना चाहने वाले को
आग से दूर रहना ही पड़ता है यह जैसे वास्तविकता है वैसे ही
जीवन को ग़लत आचरण और
मन को ग़लत विचार धारा से बचाना है ऐसा चाहने वाले को
ग़लत, कमजोर और हानिकारक निमित्तों से बचना ही पड़ता है।
यह दीवार पर लिखा हुआ सत्य है। इस सत्य को पढ़ने में कभी अंधे मत बनना।

अभिमत

श्री मनोहरलाल जैन

जनवरी अंक के सम्पादकीय 'भ्रष्टाचार पर विचार' की द्वितीय श्रृंखला में एक विचारोत्तेजक प्रश्न उठाया गया है। भ्रष्टाचार से प्राप्त धन को पुण्य से जोड़ दिया गया है। इससे भ्रष्टाचार की अभिवृद्धि हुई है। आपश्री का यह कथन विचार योग्य है कि चोरी जब पाप है तो उसके द्वारा कमाया गया धन 'पुण्य' कैसे हो सकता है? मेरा आपश्री से विनम्र निवेदन है कि इस विषय पर अधिकारी विद्वानों के अभिमत आमंत्रित करें। समापन लेख आपश्री द्वारा दिया जाए। इससे फैल रही भ्रांति का समाधान हो सकेगा तथा प्रबुद्ध पाठक वर्ग भी लाभान्वित होगा। जहाँ तक मेरी मान्यता है, अभी तक मैं भी किसी भी तरह से प्राप्त धन को पुण्य का ही फल मानता था, किन्तु सम्प्रति सम्पादकीय से मेरी मान्यता को प्रश्नचिह्न लग गया है। आशा है आप इस विषय की गम्भीरता समझते हुए अधिकृत विद्वानों के विचारों को प्रकाशित करेंगे जिससे पाठक वर्ग एक तर्क संगत निर्णय पर पहुँच सके।

-74, महावीर मार्ग, धार (मध्यप्रदेश)

कविता

मानव! तुमने चमन उजाड़ा

प्रवर्तक श्री गणेशमुनि शास्त्री

जहाँ जरूरत थी पत्ते की, तुमने पूरा वृक्ष उखाड़ा।
पर्यावरण प्रदूषित करके, मानव तुमने चमन उजाड़ा।।
केवल की है स्वार्थ साधना,
बाहर नज़र नहीं दौड़ाई।
ओरों पर नहीं ध्यान दिया है,
देखी बस निज की परछाई।
सम का भाव भूलकर जग में, सारा मौसम यहाँ बिगाड़ा।
पर्यावरण प्रदूषित करके, मानव तुमने चमन उजाड़ा।।
भौतिकता की अन्धी दौड़ में,
भागा परछाई के पीछे।
ठोकर कभी नहीं लग पाती,
अगर देखता झुक कर नीचे।
वृक्ष नहीं जंगल को काटा, किया इकट्ठा खूब कबाड़ा।
पर्यावरण प्रदूषित करके, मानव तुमने चमन उजाड़ा।।
आज हवा में दम घुटता है,
अब लेना मुश्किल सांसें।
यह जीवन चौसर की बाजी,
उल्टे आज पड़े हैं पाशे।
सिर्फ आज की खुशियाँ खातिर, कल की पीड़ा को कब ताड़ा।
पर्यावरण प्रदूषित करके, मानव तुमने चमन उजाड़ा।।
धूप-धूप व धुआँ देखकर,
दुःखी धरा यह होती है।
विकृति बढ़ी प्रकृति में तो,
आज बहारें रोती हैं।
'गणेशमुनि' की सीख मान ले, दूर फेंक दे आज कुल्हाड़ा।
पर्यावरण प्रदूषित करके, मानव तुमने चमन उजाड़ा।।

पूज्य कुशलगणी की जय ।। श्री महावीराय नमः ।। श्री कुशलरत्न गजेन्द्रगणिभ्यो नमः

।। जय गुरू हस्ती ।।

परमश्रद्धेय जैनाचार्य श्री १००८ श्री हस्तीमलजी म. सा. के सुशिष्य

आचार्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्रजी म. सा. एवं उपाध्याय श्री मानचन्द्रजी म. सा. की जय

श्री श्वे. स्था. जैन चतुर्विध संघ के हितार्थ प्रमुख मुनियों द्वारा स्वीकृत

पाक्षिक पत्र विक्रम सम्वत् २०६९

वीर सम्वत् २५३८-३९ (निर्णय सागर पंचाग से सम्पादित) सन् २०१२-२०१३

क्र. सं.	मास-पक्ष	तिथिवार	पक्खी दिनांक	घड़ी पल	क्षय तिथि	वृद्धि तिथि	रोहिणी नक्षत्र	पुष्य नक्षत्र
१	चैत्र सुदि	१५ शुक्र	६.४.२०१२	४५-५३	१४ गुरू	५ बुध	द्वि.५ बुध	१० सोम
२	वैशाख वदि	१४ शुक्र	२०.४.२०१२	१०-२८	६ बुध	१२ बुध	-	-
३	वैशाख सुदि	१४ शनि	५.५.२०१२	१७-१०	-	-	४ बुध	८ रवि
४	ज्येष्ठ वदि	३० रवि	२०.५.२०१२	५८-२८	१ रवि	-	-	-
५	ज्येष्ठ सुदि	१४ रवि	३.६.२०१२	३६-१०	१२ शुक्र	१ मंगल	द्वि.१मंगल	५ शनि
६	आषाढ़ वदि	१४ सोम	१८.६.२०१२	३१-४८	४ गुरू	६ बुध	१४ सोम	-
७	आषाढ़ सुदि	१५ मंगल	३.७.२०१२	४६-०८	१४ सोम	-	-	३ शुक्र
८	श्रावण वदि	१४ बुध	१८.७.२०१२	७-४८	-	१३ मंगल	१२ रवि	-
९	श्रावण सुदि	१४ बुध	१.८.२०१२	१२-०८	६ मंगल	-	-	१ शुक्र
१०	प्र.भाद्रपद वदि	१४ गुरू	१६.८.२०१२	३६-३३	३ शनि	५ सोम	१० रवि	१५ गुरू
११	प्र.भाद्रपद सदि	१५ शुक्र	३१.८.२०१२	३२-४५	६ शनि	-	-	-

विशेष विवरण

-आयंबिल ओली प्रारम्भ चैत्र सुदि ६ गुरूवार २९.३.२०१२।

-भगवान महावीर जन्म कल्याणक चैत्र सुदि १३ गुरूवार ५.४.२०१२।

-आयंबिल ओली पूर्ण चैत्र सुदि १५ शुक्रवार ६.४.२०१२।

-अक्षय तृतीया वैशाख सुदि ३ मंगलवार २४.४.२०१२।

-आचार्य भगवन्त पूज्य गुरूदेव १००८ श्री हस्तीमलजी म. सा. की २१वीं पुण्य तिथि वैशाख सुदि ८ रविवार २९.४.२०१२ ।

-भगवान महावीर केवल कल्याणक एवम् संघ स्थापना दिवस वैशाख सुदि १० मंगलवार १.५.२०१२ ।

-आचार्य प्रवर १००८ श्री हीराचन्द्रजी म. सा. का २२ वां आचार्य पद दिवस ज्येष्ठ वदि ५ गुरूवार १०.५.२०१२ ।

-परम्परा के मूल पुरूष पूज्य श्री कुशल चन्द्रजी म. सा. की २२९वीं पुण्य तिथि ज्येष्ठ वदि ६ शुक्रवार ११.५.२०१२ ।

-क्रियोद्धारक पूज्य आचार्य श्रीरतन चन्द जी म. सा. की १६७वीं पुण्य तिथि ज्येष्ठ सुदि १४ रविवार ३.६.२०१२ ।

-२१६वां क्रियोद्धारक दिवस आषाढ वदि २ बुधवार ६.६.२०१२ ।

-आर्द्रा नक्षत्र प्रारम्भः आषाढ़ सुदि २ गुरूवार २१.६.२०१२, इसके पश्चात् गाज-बीज होने पर सूत्र की असज्झाय नहीं रहेगी ।

-चातुर्मास प्रारम्भ (चातुर्मासी पक्खी) आषाढ़ सुदि १५ मंगलवार ३.७.२०१२ ।

९	श्रावण सुदि	१४ बुध	१.८.२०१२	१२-०८	६ मंगल	-	-	१ शुक्र
१०	प्र.भाद्रपद वदि	१४ गुरु	१६.८.२०१२	३६-३३	३ शनि	४ सोम	१० रवि	१४ गुरु
११	प्र.भाद्रपद सुदि	१५ शुक्र	३१.८.२०१२	३२-४५	६ शनि	-	-	-
१२	द्वि.भाद्रपद वदि	१४ शनि	१५.९.२०१२	८-०३	-	८ रवि	प्र.८शनि	११ बुध
१३	द्वि.भाद्रपद सुदि	१४ शनि	२९.९.२०१२	३-४५	१ रवि	-	-	-
१४	आश्विन वदि	१४ रवि	१४.१०.२०१२	३४-४०	-	-	५ शुक्र	१० बुध
१५	आश्विन सुदि	१५ सोम	२९.१०.२०१२	४६-१५	४ गुरु	-	-	-
१६	कार्तिक वदि	१४ मंगल	१३.११.२०१२	०-३५	३०मंगल	३ शुक्र	द्वि.३शुक्र	७ मंगल
१७	कार्तिक सुदि	१५ बुध	२८.११.२०१२	३२-४३	-	-	-	-
१८	मार्गशीर्ष वदि	१४ बुध	१२.१२.२०१२	२६-२८	१० शनि	५ मंगल	१ गुरु	प्र.५ सोम
१९	मार्गशीर्ष सुदि	१४ गुरु	२७.१२.२०१२	१४-५५	२ शुक्र	१२मंगल	१३ बुध	-
२०	पौष वदि	३० शुक्र	११.१.२०१३	४४-१५	१४ गुरु	-	-	३ सोम
२१	पौष सुदि	१४ शनि	२६.१.२०१३	३-१५	-	१४ शनि	११ मंगल	१५ रवि
२२	माघ वदि	१४ शनि	९.२.२०१३	१६-५३	८ रवि	-	-	-
२३	माघ सुदि	१४ रवि	२४.२.२०१३	४७-०३	-	-	९ मंगल	१३ शनि
२४	फाल्गुन वदि	३० सोम	११.३.२०१३	४६-०३	१२ शुक्र	-	-	-
२५	फाल्गुन सुदि	१४ मंगल	२६.३.२०१३	२४-२३	-	६ सोम	द्वि.६सोम	११ शनि
२६	चैत्र वदि	३० बुध	१०.४.२०१३	२१-४३	४ शनि	-	-	-

ज्येष्ठ सुदि १४ रविवार ३.६.२०१२ ।

-२१६वां क्रियोद्धारक दिवस आषाढ वदि २ बुधवार ६.६.२०१२ ।

-आर्द्रा नक्षत्र प्रारम्भः आषाढ़ सुदि २ गुरुवार २१.६[illegible], इसके पश्चात्गाज-बीज होने पर सूत्र की असज्झाय नहीं रहेगी ।

-चातुर्मास प्रारम्भ (चातुर्मासी पक्खी) आषाढ सुदि १५ मंगलवार ३.७.२०१२ ।

-पूज्य आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म. सा. की ८६वीं पुण्यतिथि श्रावण वदि ३० गुरुवार १९.७.२०१२ ।

-पर्युषण महापर्व प्रारंभ प्र.भाद्रपद वदि १२ मंगलवार १४.८.२०१२ ।

-संवत्सरी महापर्व प्र.भाद्रपद सुदि ४ मंगलवार २१.८.२०१२ ।

-आयंबिल ओली प्रारम्भ, आसोज सुदि ७ रविवार २१.१०.२०१२ ।

-स्वाति नक्षत्र प्रारम्भ आसोज सुदि ९ मंगलवार २३.१०.२०१२, इसके पश्चात् गाजबीज होने पर सूत्र की असज्झाय रहेगी।

-पूज्य आचार्य श्री भूधरजी म. सा. की पुण्य तिथि आसोज सुदि १० बुधवार २४.१०.२०१२ ।

-आयंबिल ओली पूर्ण आसोज सुदि १५ सोमवार २९.१०.२०१२ ।

-भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक कार्तिक वदि १४/३० मंगलवार १३.११.२०१२ ।

-वीर संवत् २५३९ प्रारम्भ एवं गौतम प्रतिपदा कार्तिक सुदि १ बुधवार १४.११.२०१२ ।

-ज्ञान पंचमी कार्तिक सुदि ५ रविवार १८.११.२०१२ ।

-आचार्य प्रवर १००८ श्री हीराचन्द्रजी म. सा. का ५०वां दीक्षा दिवस कार्तिक सुदि ६ सोमवार १९.११.२०१२ ।

-चातुर्मासिक पक्खी (चातुर्मास पूर्ण) एवं वीर लोंकाशाह जयन्ती कार्तिक सुदि १५ बुधवार २८.११.२०१२ ।

-मौन एकादशी एवं आचार्य पूज्य श्री विनयचन्द्र जी म.सा. की ९७वीं पुण्य तिथि मार्गशीर्ष सुदि ११ रविवार २३.१२.२०१२ ।

-भगवान पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक पौष वदि १० सोमवार ७.१.२०१३ ।

-फाल्गुनी चातुर्मासी पर्व (चातुर्मासिक पक्खी) फाल्गुन सुदि १४ मंगलवार २६.३.२०१३ ।

-भगवान आदिनाथ जन्म कल्याणक एवं आचार्य प्रवर १००८ श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का ७५वां जन्म दिवस चैत्र वदि ८ बुधवार ३.४.२०१३ ।

कविता

आज के जमाने का, यह हाल देखिए

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

आज के जमाने का, यह हाल देखिए,
नई-नई फैशन की, चाल देखिए।
बॉब कट बाल है, पतलून शर्ट है,
लड़की बनी लड़का, यह कमाल देखिए।
आज के जमाने का.....।।टेर।।

शर्म लाज छोड़ के, ये कहाँ जा रहीं,
अपने किये पे नहीं पछता रही।
वक्त यह बेढंगा देखो, कैसा आया है,
शालीनता पे देखो, कैसा ग्रहण छाया है।
धर्म की न देखी, कोई ढाल देखिए,
आज के जमाने का.....।।1।।

छोकरों के साथ, देखो घूम रही हैं,
अपनी मर्यादाओं को भूल रही हैं।
माता और पिता को बदनाम कर दिया,
अपनी सभ्यता को, बर्बाद कर दिया।
वेलेन्टाइन डे पर, परवान देखिए,
आज के जमाने का.....।।2।।

लड़कों में भी देखो, क्या धमाल मचा है,
फैशन का इनको भी, जुनून चढ़ा है।
नव जवां पीढ़ी का, बुरा हाल हो रहा,
व्यसनों के जाल में, है युवा खो रहा।
गुटखा, बीड़ी, तम्बाखू, अंदाज देखिये,
आज के जमाने का.....।।3।।

फर्राटे से दौड़ती हैं, इनकी गाड़ियां,
मोबाइल पे गूंजती हैं, इनकी बोलियां।

मर्यादा का भान इन्हें, बिल्कुल नहीं है,
नैतिकता की बातें, सारी खो गई हैं।
देश के जवानों का, उबाल देखिये,
आज के जमाने का.....।।4।।

-जनता साड़ी सेण्टर, स्टेशन रोड़, दुर्ग-491001 (छत्तीसगढ़)

'भटकती युवापीढ़ी' पर विचार

श्री नरेन्द्र कक्कड़

आपने सम्पादकीय में अन्तरजातीय विवाह का मुद्दा उठाकर समाज की दुखती रग पर हाथ रखा है। आप बधाई के पात्र हैं। मोबाइल, मेल, नेट, टी.वी. ने हमारे सामाजिक विश्वास, पुरानी मान्यता, परम्परा, संस्कार, अनुशासन एवं ख्याति को तार-तार कर दिया है। इसका मुख्य कारण है-

1. समाज का एवं बड़ों का भय समाप्त होना। 2. सहशिक्षा। 3. संस्कारों का गिरता हुआ ग्राफ। 4. युवाओं की धर्म-स्थानकों में कम उपस्थिति। 5. शिक्षा का भार एवं व्यस्तता। 6. माता-पिता द्वारा बच्चों पर कम ध्यान देना। 7. समय पर विवाह नहीं करना। 8. पाश्चात्त्य संस्कृति का प्रभाव। 9. बच्चों को अधिक लाड़-प्यार से जिद्दी बनाना। 10. फैशन एवं छोटे कपड़ों का पहनावा।

इस सबको रोकने हेतु समय-समय पर इन विषयों पर लेख प्रकाशित किए जाएं। शिविरों में भी अप्रत्यक्ष रूप से इसके दुष्परिणामों के बारे में हमारी युवा पीढ़ी को अवगत कराया जाए। माता-पिता पूरा-पूरा ध्यान रखें। बच्चे नेट, मेल, मोबाइल पर क्या देख रहे हैं एवं क्या कर रहे हैं, इस पर नियन्त्रण रखें।

अन्तरजातीय विवाह की सफलता का अनुपात तय विवाहों से काफी कम है। परम्परा, खान-पान, मान्यता, रहन-सहन, बोली व्यवहार में काफी असमानता से अन्तरजातीय विवाह की सफलता सदा सन्देह के घेरे में ही रहती है। हमारा भी फर्ज है कि ऐसे आयोजनों को यह कह कर प्रोत्साहन न दें कि आजकल तो यह साधारण बात हो गई है, चलता है खास बात नहीं है, आदि न कहें, प्रोत्साहन न दें। समाज की जब सभा हो, हल्के-फुल्के माहौल में इस बढ़ते चलन की भी बात हो एवं दुष्परिणामों की चर्चा भी की जा सकती है।

-अध्यक्ष, श्री महारानी फार्म (दुर्गापुरा), जैन स्थानक संघ, जयपुर (राज.)

राजस्थानी गीत

अब तो छेड़ो भाया जंग

डॉ. दिलीप धींग

वगड़्यो रेण-सेण रो ढंग।
बोली खाण-पाण रो रंग।
भूल्या धरम-ध्यान सत्संग।
अब तो छेड़ो भाया जंग।
घर-घर वगड़िग्या टूटिग्या अपणा क्लेश में।
डोपर दंगा दादागिरी आखा देश में।।ध्रुव।।

फैशन में थे वेण्डा वणग्या लाज शरम ने छोड़्या।
अक्कल नी गाबा पेरण री मेकप करतीं छोर्‌या।
पाउडर क्रीम लिपिस्टिक सैण्ट।
छावे शैम्पू परमानैण्ट।
हुगली पिक्चर भी अर्जेण्ट।
आँख्याँ करती एग्रीमेण्ट।
राखो शील स्वाभिमान अपणा वेस में।
डोपर दंगा दादागिरी आखा देश में।।1।।

खाण-पाण तो असा वगड़ग्या केता धूजे छाती।
अण्डा मछली मांस मुर्गा खावे लपालप पापी।
दारू बीयर री मनवार।
बरथ-डे केक री बहार।
झपटे गीदड़ ने हियार।
फेर या पापी सरकार।
कत्तल-खाना कुक्कुट-शाला खुलग्या देश में।
डोपर दंगा दादागिरी आखा देश में।।2।।

शिक्षा नी दीदी टाबर ने निकल्या ठालाभूला।
गारा देवे माँय-बाप ने मरो परा खोड़ीला।

हउ-वउ भस्से चोटी ताण।
भई-भई लड़े घमासाण।
भूल्या आण-बाण और साण।
यो कई वइग्यो रे भगवान।
हत्या, आत्म-हत्या वइरी भावावेश में।
डोपर दंगा दादागिरी आखा देश में।।3।।

घी में चर्बी, नकली दवयाँ, स्वारथ रिश्वतखोरी।
पग-पग पर बेइमानी वइगी, अनैतिकता चोरी।
आतम संयम नी अपनावे।
भ्रूण-हत्या भी करवावे।
नीतर छाने गोर्‌या खावे।
मरया नीच गति में जावे।
इज्जत लुट री माँ-बहिना री म्हारा देश में।
डोपर दंगा दादागिरी आखा देश में।।4।।

धरम ध्यान रो मिल्यो संजोगो पुनवानी हउ कीदी।
मनख जमारो मल्यो अणीने सफल वणाओ जल्दी।
राखो प्राणिमात्र सुँ प्यार।
जाणो निश्चय ने व्यवहार।
पालो ब्रह्मचर्य नरनार।
होवे जीवन रो उद्धार।
'दिलीप' केवे हंगरा चालो सिद्ध प्रदेश में।
डोपर दंगा दादागिरी आखा देश में।।5।।

वगड़्यो रेण-सेण रो ढंग।
बोली खाण-पाण रो रंग।
भूल्या धरम-ध्यान सत्संग।
अब तो छेड़ो भाया जंग.....।।

-उमराव सदन, 53, डोरे नगर, उदयपुर-313002 (राज.)

युवा-स्तम्भ

क्षण-क्षण का उपयोग करें

श्रीमती बीना जैन

आज की नई पीढ़ी ने अपने चारों ओर एक भ्रमजाल बुन रखा है। "जीवन एक पाठशाला है" "हमें समय का सदुपयोग करना चाहिए" सदृश वाक्य आजकल लोगों को विशेष रूप से युवा-पीढ़ी को उबाऊ और उपदेशात्मक लगते हैं। युवा केवल वही बातें सुनना पसंद करते हैं जो उन्हें अच्छी लगती हैं। यानी आप केवल उनके मन की बात कहिए। वे देर रात घूमकर लौटें आप कुछ न कहें। किसी कॉम्पीटिशन में वे अनुत्तीर्ण हो जाएं तो आप सहानुभूति दिखाते हुए कहें कि देखो तो बेचारा रात-दिन एक करके पढ़ा, फिर भी भाग्य ने साथ नहीं दिया। मजे की बात तो यही है कि उसका अपना विश्वास भी यही है कि उसने तो पढ़ाई की थी। जरूर कॉपी जांचने में घपला हुआ होगा, इंटरव्यू के मामले में कहेंगे- अजी किसी ऊँची सिफारिश वाले को ले लिया होगा।

नई पीढ़ी अपने द्वारा निर्मित भ्रमजाल में फँसी हुई है जिसे तोड़कर वह बाहर नहीं आना चाहती, वरन् वह चाहती है कि लोग उसका समर्थन दें। लेकिन जब युवा का भ्रमजाल टूटता है, तब वह न घर का रहता है न घाट का। अवसर समाप्त हो चुके होते हैं, आयु बढ़ चुकी होती है। पारिवारिक जिम्मेदारियाँ मुँह बाएँ खड़ी होती हैं। सारी कल्पनाएँ एवं हसीन सपने टूट चुके होते हैं। तब उसे अपनी असलियत समझ में आती है। पहले उसने तो अब तक अपनी सोच को ही सही समझा था। आज हमारे साथ जो भी घटित होता है, हम जो भी करते हैं जो भी फल मिलता है, वह सब इस जीवन की पाठशाला के हिस्से हैं। आवश्यकता इस बात की है कि आप इस ओर कितना ध्यान देते हैं और उनसे कितना सीखते हैं। प्रसिद्ध विचारक फ्रैंकलिन का कहना है कि "आप अपने प्रतिदिन किए गए क्रियाकलापों का लेखा-जोखा रखिए कि आपने पूरे दिन को किस तरह व्यतीत किया। दो तीन दिन बाद उसे पढ़िए कि आपने कितने उपयोगी कार्य किए? आपको स्वयं आभास हो जाएगा कि कितना समय आपने व्यर्थ गंवाया।"

प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में चौबीस घंटे ही मिलते हैं, बीता हुआ दिन कभी वापस नहीं आता। महान् और परिश्रमी लोग समय के महत्त्व को समझ कर

नए आविष्कार करते हैं, अपनी प्रतिभा को विकसित करते हैं, वहीं कुछ लोग अपनी मौज मस्ती व जीवन की रंगीनियों को जीवन का ध्येय बना लेते हैं, और अपनी सोच को सही समझते हैं। वे अभिभावकों तथा मां-बाप का कहना न मानकर अपना जीवन बरबाद कर लेते हैं। आज आवश्यकता है कि युवा-पीढ़ी अपने भ्रमजाल को तोड़ समय के महत्त्व को समझे। सोना, चाँदी नष्ट होने पर पुनः खरीदे जा सकते हैं, पर जो समय पंख लगाकर उड़ गया, वह वापस नहीं मिल सकता। इसीलिए जो क्षण हमारे पास हैं, उन्हें जीवन का सही अर्थ समझने में लगाएँ। सार्थक काम करना ही जीवन जीने की कला है। इसीलिए कहा गया है-

सम्यक् नियोजन करो समय का, क्षण-क्षण का उपयोग करो।
भ्रामक माया जाल को तोड़ो, सत्पथ से जीवन-प्रकाश करो।।

-के / 15, ज्ञानसरोवर कॉलोनी, रामघाट रोड़, अलीगढ़-202001 (उ.प्र.)

जिनवाणी हिन्दी मासिक पत्रिका का विवरण

(फार्म 2 नियम 8 देखिए)

1. प्रकाशन स्थान	:	जयपुर
2. प्रकाशन अवधि	:	मासिक
3. मुद्रक का नाम	:	डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, जयपुर
4. प्रकाशक का नाम	:	विरदराज सुराणा
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार जयपुर-302003 (राज.)
5. सम्पादक का नाम	:	डॉ. धर्मचन्द जैन
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	3 के 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर-342005 (राज.)
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जिनका पत्र पर स्वामित्व है	:	सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार जयपुर-302003 (राज.)

मैं विरदराज सुराणा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिया गया विवरण सत्य है।

मार्च 2012

हस्ताक्षर-विरदराज सुराणा
प्रकाशक

स्तवन

हीरा गुरुवर प्यारा है

श्री धर्मचन्द जैन

रत्नसंघ शिरोमणि, संघनायक, परमाराध्य आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 74 वें जन्म-दिवस (चैत्र कृष्णा अष्टमी, गुरुवार 15 मार्च, 2012) के उपलक्ष्य में सादर समर्पित......।

(तर्जः- जीया बेकरार है.....)

हीरा गुरुवर प्यारा है, जन-जन का उजियारा है।
जो भी सुमिरे हीरा गुरु को, उसका भव निस्तारा है।।टेर।।
मोतीलाल जी पिता आपके, माँ मोहिनी के लाल जी-2,
भर यौवन में संयम लेके, अद्भुत किया कमाल जी-2,
विनय भाव को धारा है, निर्मल संयम सारा है।
जो भी सुमिरे हीरा गुरु को......।।1।।
'गज' गुरु की आज्ञा में रहकर, सेवा भाव धराया जी-2,
शास्त्र ज्ञान में रत रहकर के, जीवन सरस बनाया जी-2,
समता गुण आराधा है, तन-मन-वच को साधा है।
जो भी सुमिरे हीरा गुरु को......।।2।।
मुख मण्डल की छटा निराली, सौम्यभाव सरसाया जी-2,
ज्ञान-क्रिया का अद्भुत संगम, तीजे पद को पाया जी-2,
जीवन को संवारा है, धीरजता को धारा है।
जो भी सुमिरे हीरा गुरु को......।।3।।
व्यसन मुक्ति अभियान जगत में, खूब बना हितकारा जी-2,
जिनशासन के उज्ज्वल मोती, गुण-गरिमा को धारा जी-2,
हीरा गुरु सहारा है, जीवन धन्य हमारा है।
जो भी सुमिरे हीरा गुरु को......।।4।।
प्रवचन देखो हीरा गुरु का, जन-जन के मन भाया जी-2,
वाणी में है तेज गजब का, सुनकर हर्ष भराया जी-2,
'धर्म' ही सहारा है, भव-जल पार उतारा है।
जो भी सुमिरे हीरा गुरु को......।।5।।

-रजिस्ट्रार, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मि शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

नारी-स्तम्भ

माइक्रोवेव : वरदान या अभिशाप?

डॉ. ओ.पी. वर्मा

आज हर समृद्ध और आधुनिक स्त्री की रसोई में आपको माइक्रोवेव ओवन जरूर मिलेगा। जिन स्त्रियों के पास नहीं है वे खरीदने को लालायित बैठी हैं। माइक्रोवेव के आने से गृहिणियों को कितनी सहूलियत हो गई है। रात को ही बच्चों का टिफिन तैयार कर दो, सुबह बस माइक्रोवेव में गर्म किया और बच्चों को स्कूल भेज दिया। पति का कोई पसन्दीदा व्यंजन बनाना हो, बस ओवन में रखा, टाइमर सेट किया, स्टार्ट बटन दबाया और निश्चिन्त होकर टी.वी. देखने बैठ गये। दो मिनट में पोपकोर्न बन जाते हैं। रात को पति लेट आये तो भी माइक्रोवेव दो तीन मिनट में खाना गर्म कर देता है। न गंदगी, न बार-बार हिलाने का चक्कर है। बिजली भी कम खर्च होती है और खाना भी फटाफट बन जाता है। माइक्रोवेव से खाना बनाना सचमुच कितना आरामदायक हो गया है। लेकिन क्या इस सहूलियत की हम कोई भारी कीमत तो नहीं चुका रहे हैं? क्या माइक्रोवेव सचमुच खाना बनाने का प्राकृतिक और स्वस्थ तरीका है? जी नहीं, अब यह सिद्ध हो चुका है कि माइक्रोवेव हमारे भोजन और स्वास्थ्य को कितना नुकसान पहुँचाता है। मेरा यह लेख पढ़ कर माइक्रोवेव ओवन के बारे में आपके विचार हमेशा के लिए बदल जायेंगे। आज मैं आपको बतला दूँगा कि यह मानवता का कितना बड़ा दुश्मन है, मनुष्य के लिए एक अभिशाप है। बड़े अचरज की बात यह है कि अधिकतर लोग इस बात से अनजान हैं, बेफिक्र हैं। यह बहुराष्ट्रीय संस्थानों की सफल व्यावसायिक नीतियों का कमाल है। आजकल तो वैज्ञानिक यह तक कहने लगे हैं कि यदि आपके घर में माइक्रोवेव ओवन है तो उसे अपने सबसे बड़े दुश्मन को तोहफे में दे दीजिये।

स्पेंसर भाई ने किया माइक्रोवेव ओवन का आविष्कार

सन् 1946 में अमेरिका के नौसिखिये और स्वशिक्षित (अर्थात् ये महोदय कॉलेज नहीं गये और घर पर किताबें पढ़ कर ही अभियंता बने थे) अभियंता पर्सी लेबरोन स्पेंसर रेथियोन कॉर्पोरेशन में राडार पर शोध कर रहे थे। एक दिन जब उन्होंने मेग्नेट्रोन नाम की एक वेक्यूम ट्यूब में विद्युत प्रवाहित की

तो उनके कोट की जेब में पड़ी चॉकलेट पिघल गई थी। वे बड़े अचरज में पड़ गये। इससे प्रेरित होकर दूसरे दिन उन्होंने ट्यूब के पास पोपकोर्न बनाने वाली मक्का के थोड़े दाने रख दिये और ट्यूब में बिजली चालू की तो उन्होंने देखा कि मक्का के दाने पक कर फूटने लगे और तड़तड़ाहट की आवाज के साथ उचट कर पूरे कमरे में बिखर गये। स्पेंसर अचानक गर्व से मुस्कुराये, उनके चेहरे की मुद्रा से ऐसा लग रहा था जैसे उन्होंने कुछ जीत लिया हो, कुछ पा लिया हो। शायद वे समझ चुके थे कि यह ट्यूब से निकली विद्युत-चुम्बकीय तरंगों की ऊर्जा का कमाल है। उन्होंने पल भर में सोच लिया कि यदि इस ऊर्जा से चॉकलेट पिघल सकती है, पोपकोर्न बन सकते हैं तो इससे खाना भी पकाया जा सकता है। बस फिर क्या था उन्होंने एक धातु का बक्सा बनवाया, जिसमें एक ढक्कन लगवाया और उसके एक कोने में मेग्नेट्रोन वेक्यूम ट्यूब कस दी। बक्से में पकने के लिए एक कांच की प्लेट में खाना रखा जो ट्यूब में बिजली प्रवाहित करने के थोड़ी देर में अच्छी तरह पक गया। थोड़ी और जद्दोजहद करके आखिर इस मुन्नाभाई टाइप के इंजीनियर ने माइक्रोवेव का सरकिट बना ही दिया। 1947 में उन्होंने बड़े फ्रीज के आकार की दुनिया की पहली माइक्रोवेव ओवन बनाई जिसका उन्होंने राडार-रेंज नाम रखा था। इस तरह हुआ माइक्रोवेव ओवन का आविष्कार, जो आज बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के लिए अरबों डालर का व्यवसाय बन चुकी है।

माइक्रोवेव का ओवन कैसे काम करता है ?

इन चूल्हों में भोजन माइक्रोवेव तरंगों द्वारा पकाया जाता है। माइक्रोवेव तरंगें विद्युत-चुम्बकीय तरंगें होती है। जब भी किसी चालक धातु में विद्युत धारा प्रवाहित की जाती है तो उससे विद्युत चुम्बकीय तरंगें निकलती हैं। माइक्रोवेव तरंगें बहुत सूक्ष्म तरंगें होती हैं, जो प्रकाश की गति (186,282 मील प्रति सैकण्ड की) से चलती हैं। आधुनिक युग में टेलीविजन, इंटरनेट या टेलीफोन संदेशों के प्रसारण में माइक्रोवेव तरंगों की मदद ली जाती है। माइक्रोवेव ओवन में मेग्नेट्रोन नाम की एक वेक्यूम ट्यूब होती है। इस ट्यूब में 3-4 हजार वोल्टेज पर 60Hz आवृत्ति की DC विद्युत धारा प्रवाहित की जाती है जिससे ट्यूब से 2450 Mega Hertz (MHz) or w.ya Giga Hertz (GHz) की विद्युत-चुम्बकीय तरंगें निकलती हैं। 3-4 हजार वोल्टेज एक स्टेप-अप ट्रांसफोर्मर रेक्टिफायर की मदद से तैयार किया जाता है।

माइक्रोवेव एकांतर विद्युत-धारा AC (Alternating current) के सिद्धांत पर काम करती है। किसी भी तरंग-ऊर्जा के हर चक्र में ध्रुव परिवर्तन होता है, अर्थात नकारात्मक ध्रुव सकारात्मक हो जाता है और सकारात्मक ध्रुव नकारात्मक हो जाता है। 2.45 Giga Hertz (GHz) की माइक्रोवेव तरंगों में यह ध्रुव परिवर्तन एक सेकण्ड में लाखों करोड़ों बार होता है। भोजन और पानी के अणुओं में भी नकारात्मक और सकारात्मक ध्रुव होते हैं। इसलिए जब माइक्रोवेव तरंगें भोजन के संपर्क में आती हैं तो भोजन के अणुओं में इस ध्रुव परिवर्तन के कारण प्रचण्ड और विध्वंसक कंपन या स्पंदन होता है, और वह भी एक सैकण्ड में लाखों-करोड़ों बार। इस कंपन के कारण भोजन और पानी के अणुओं में तेज घर्षण होता है, जिससे ऊष्मा पैदा होती है और भोजन तेजी से गर्म होता है। लेकिन इस तेज घर्षण से भोजन के अणु बिखरने व टूटने लगते हैं, म्यूटेशन हो जाता है और कोशिका की भित्तियां फट जाती हैं।

परमाणु या अणुओं के नाभिकीय विघटन (Nuclear Decay) के फलस्वरूप निकलने वाली विद्युत-चुम्बकीय तरंगों को विकिरण (Radiation) कहते हैं। माइक्रोवेव ओवन में भी नाभिकीय विघटन होता है। इसलिए वास्तव में इस उपकरण का नाम विकिरण चूल्हा या रेडियेशन ओवन ही होना चाहिये। लेकिन आप ही सोचिये कि क्या इस नाम से ये बहुराष्ट्रीय संस्थान एक भी ओवन बेच पाते?

तरंगों का तकनीकी तराना

आयाम (amplitude):- तरंग (Waves) के उच्चतम व निम्नतम भागों को क्रमशः शीर्ष (crest) व गर्त (trough) कहते हैं। शीर्ष (Crest) व गर्त (trough) के बीच की दूरी 'A' को तरंग का आयाम (amplitude) कहते हैं।

तरंग दैर्घ्य (wavelength):- तरंग दैर्घ्य (wavelength) तरंगों की निकटवर्ती दो शीर्षों (अथवा गर्तों) के मध्य की दूरी को व्यक्त करती है।

आवृत्ति V (frequency):- तरंग की आवृत्ति V (frequencey) उन तरंगों की संख्या है जो किसी बिंदु से प्रति सेकेण्ड गुजरती है। आवृत्ति का मात्रक कंपन/सेकेण्ड अथवा हर्टज (Hz) है।

विद्युत-चुम्बकीय विकिरण एवं विद्युत-चुम्बकीय तरंगों के संचरण के लिए किसी माध्यम की आवश्यकता नहीं होती तथा ये तरंगें निर्वात (space) में भी संचरित हो सकती हैं। प्रकाश तरंगें, ऊष्मीय विकिरण, एक्स

किरणें, रेडियो तरंगें आदि विद्युत-चुम्बकीय तरंगों के उदाहरण हैं। इन तरंगों का तरंग दैर्घ्य (wave length) काफी विस्तृत होता है। इनका तरंग दैर्घ्य 10-14 मी. से लेकर 104 मी. तक होता है।

डॉ. हर्टेल ने माइक्रोवेव के सच को दुनिया के सामने रखा

स्विट्ज़रलैंड के खाद्य-पदार्थ बनाने वाले एक संस्थान में डॉ. हन्स अलरिच हर्टेल भोजन वैज्ञानिक के पद पर काम करते थे। कुछ वर्षों पहले उन्होंने भोजन पर प्रतिकूल और हानिकारक प्रभाव डालने वाले कुछ गलत तौर-तरीके बदलने और माइक्रोवेव का प्रयोग बंद करने के लिए संस्थान के उच्चाधिकारियों पर जोर डाला तो संस्थान ने उन्हें नौकरी से ही निकाल दिया। सन् 1991 में उन्होंने.लौसेन विश्वविद्यालय के एक प्रोफेसर के साथ मिलकर अपने शोध-पत्र और आलेख फ्रेंज वेबर जरनल के 19 वें अंक में प्रकाशित किये। उन्होंने बतलाया कि माइक्रोवेव में पका खाना खाने से कैंसर जैसी बीमारी भी हो सकती है।

हर्टेल ने स्विस फेडरल इन्स्टिट्यूट ऑफ बायोकेमिस्ट्री और यूनिवर्सिटी इन्स्टिट्यूट फोर बायोकेमिस्ट्री के बरनार्ड एच.व्लैंक के साथ मिलकर इस विषय पर शोध कार्य को आगे बढ़ाया। इन्होंने आठ व्यक्तियों पर प्रयोग किये। इन व्यक्तियों को कुछ समय तक माइक्रोवेव से पकाया हुआ भोजन खिलाया गया। भोजन खिलाने के पहले और कुछ समय बाद उनके रक्त के कई नमूने लिये गये। जांच करने पर पता चला कि माइक्रोवेव में पका भोजन खाने वाले लोगों का हीमोग्लोबिन कम हो गया था। दूसरे महीने स्थिति और बिगड़ी। यदि इन व्यक्तियों को माइक्रोवेव में पका हुआ भोजन एक साल या उससे भी ज्यादा समय तक दिया जाता तो पता नहीं क्या स्थिति होती। माइक्रोवेव के प्रभाव से उनके श्वेत रक्त कण (Lymphocytes) और HDL (अच्छा कॉलेस्ट्रोल) कम हुआ और LDL (खराब कॉलेस्ट्रोल) बढ़ा। यह भी अच्छे संकेत नहीं है और शरीर में रोग और अपकर्षण (Degeneration) को दर्शाते हैं।

बदले में हर्टेल को मिली प्रताड़ना

हर्टेल और ब्लैंक ने अपने शोध-पत्रों को सर्च फोर हैल्थ 1992 के बसंत ऋतु अंक में प्रकाशित कर दिया। इसके बाद तो भूचाल आ गया। स्विटजरलैंड के घरेलू विद्युत-उपकरण बेचने और बनाने वाले व्यापारी और

उद्योगपतियों की तो जैसे वाट ही लग गई। बौखलाहट में इस अमीर लॉबी ने इन दोनों पर झूठा मुकदमा ठोका और सेफ्टिगन अदालत के न्यायाधीश को मोटी रिश्वत देकर इनके खिलाफ फैसला भी करवा दिया। न्यायाधीश ने इन पर माइक्रोवेव ओवन बेचने और बनाने वाले उद्योगपतियों को आर्थिक नुकसान पहुँचाने का आरोप लगाया और इन्हें सख्त आदेश दिये कि वे अपने शोध-पत्र कहीं भी प्रकाशित नहीं करेंगे वर्ना उन्हें भारी जुर्माना भरना पड़ेगा या एक साल के लिए कैद की सजा भुगतनी होगी। ब्लैंक तो बेचारा डर गया लेकिन हर्टेल शहर-शहर घूमने निकल पड़ा और वह लोगों को अपनी शोध के बारे में बतलाता, व्याख्यान देता और न्याय के लिए गुहार लगाता।

सन् 1989 में मिनेसोटा विश्वविद्यालय ने भी चेतावनी जारी की थी कि शिशुओं के दूध की बोतलें माइक्रोवेव ओवन में गर्म नहीं करनी चाहिये क्योंकि इससे दूध के विटामिन नष्ट हो जाते हैं, पोषक तत्त्व विकृत हो जाते हैं जो शिशु की रक्षा-प्रणाली को कमजोर करते हैं और मस्तिष्क व गुर्दे को क्षति पहुँचाते हैं। माइक्रोवेव में गर्म करने से बोतल बाहर से तो ठंडी लगती है, परंतु अंदर का दूध बहुत गर्म रहता है जिससे शिशु का मुंह जल भी सकता है।

अंत में हुई सत्य की विजय

लंबी लड़ाई लड़ने के बाद आखिर 25 अगस्त, 1988 को स्ट्रॉसबर्ग, फ्रांस की मानवाधिकार अदालत से हर्टेल को न्याय मिला। न्यायाधीश ने हर्टेल पर स्विस अदालत द्वारा लगाये गये सारे प्रतिबंध हटा दिये, स्विस अदालत को कड़ी फटकार लगाई और तुरन्त हर्टेल को हरजाने के रूप में 40,000 फ्रेंक भुगतान करने के आदेश दिये। ये सारी बातें इतिहास के पन्नों में दर्ज हैं।

रूस ने क्यों और कैसे किया माइक्रोवेव को प्रतिबंधित

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद रूस में भी रेडियो टेक्नोलोजी संस्थान, क्लिंस्क बाईलोरशिया ने माइक्रोवेव ओवन के कुप्रभावों पर काफी प्रयोग और शोध-कार्य किये। अमेरिका के शोधकर्ता विलियम कोप ने रूस और जर्मनी में माइक्रोवेव से संबंधित शोध कार्यों की व्याख्या की और लोगों के सामने रखा। इसके लिए इस बेचारे को अमरीकी सरकार ने व्यर्थ परेशान किया और उस पर मुकदमा (J.Nat. Sci, 1988, 1: 42-3) भी दायर किया। रूस में हुई शोध से ये बातें सामने आई थीं।

1. माइक्रोवेव के प्रभाव से आणविक विघटन होता है जिससे भोजन में भारी

मात्रा में अप्राकृतिक रेडियोलाइटिक यौगिक बन जाते हैं। ये रक्त को नुकसान पहुँचाते हैं और शरीर की रक्षा-प्रणाली को कमजोर बनाते हैं। वैसे तो सामान्य तरीके से भोजन पकाने पर भी थोड़े बहुत रेडियोलाइटिक यौगिक बनते हैं, लेकिन मात्रा नगण्य होने की वजह से शरीर को नुकसान नहीं पहुँचा पाते हैं। शायद इसलिए भी आहारशास्त्री अपक्व आहार की अभिशंसा करते हैं।

2. माइक्रोवेव ओवन में खाना पकाने से उसमें कैंसर पैदा करने वाले खतरनाक तत्त्व डी-नाइट्रोडाइथेनोलेमीन बन जाते हैं।

3. प्रोटीन के अणु अस्थिर और निष्क्रिय हो जाते हैं। दूध और अनाज में विद्यमान प्रोटीन-हाइड्रोसाइलेट यौगिक में भी कैंसरकारी कण बन जाते हैं।

4. माइक्रोवेव में पकाने से फलों में विद्यमान ग्लूकोसाइड और गेलेक्टोसाइड का पाचन और चयापचय भी बुरी तरह प्रभावित होता है। सब्जियों में मौजूद अल्केलोइड भी निष्क्रिय हो जाते हैं।

5. माइक्रोवेव में पकाने से कंदमूल सब्जियों जैसे आलू, अरबी, मूली आदि में कैंसरकारी मुक्तकण बन जाते हैं।

6. माइक्रोवेव में बना खाना खाने से रक्त में कैंसर कोशिकाओं और मुक्तकणों का प्रतिशत बढ़ जाता है।

7. माइक्रोवेव में पका खाना खाने से स्मरणशक्ति, एकाग्रता, बुद्धिमत्ता और भावनात्मक स्थिरता कमजोर पड़ती है। लंबे समय तक नियमित माइक्रोवेव का खाना खाने से मस्तिष्क की कोशिकाओं में शोर्ट सर्किट होने लगता है और मस्तिष्क स्थाई रूप से क्षतिग्रस्त होने लगता है।

8. माइक्रोवेव में पका खाना खाने से पुरुष और स्त्री हारमोन्स का स्राव कम होता है।

9. माइक्रोवेव भोजन की रासायनिक बनावट बिगड़ जाती है जिससे शरीर का लिम्फेटिक सिस्टम भी ठीक से काम नहीं कर पाता और रक्षा प्रणाली (Immunity) कमजोर पड़ जाती है।

10. माइक्रोवेव में पकाने से भोजन में आई अस्थिरता और विकृति के कारण पाचनतंत्र संबंधी रोग हो जाते हैं। यहाँ तक कि आमाशय और आँतों का कैंसर भी हो सकता है और पाचन तथा उत्सर्जन तंत्र भी कमजोर पड़

जाता है।

11. माइक्रोवेव में पकने से भोजन की गुणवत्ता और पौष्टिकता पर बहुत बुरा असर पड़ता है। विटामिन बी-कॉम्प्लेक्स, विटामिन-सी, विटामिन-ई, खनिज, वसा, अम्ल नष्ट हो जाते हैं, भोजन में विद्यमान न्युक्लियोप्रोटीन्स निष्क्रिय हो जाते हैं और सभी खाद्य तत्त्वों का थोड़ा-बहुत संरचनात्मक विघटन होता ही है।

इन कारणों से रूस ने 1976 में माइक्रोवेव को पूरी तरह प्रतिबंध कर दिया था, लेकिन रूस के राजनीतिक संक्रमण के बाद की सरकार ने यह प्रतिबंधित खत्म कर दिया।

1991 में ओक्लाहोमा में एक नोर्मा लेवित नामक स्त्री के कूल्हे की शल्य-क्रिया हुई थी। उसकी खून चढ़ाने से मृत्यु हो गई थी और मृत्यु का कारण यह था कि नर्स ने ठंडी खून की बोतल को माइक्रोवेव ओवन में हल्का सा गर्म कर लिया था। इतनी घातक होती है माइक्रोवेव तरंगें।

-श्रमणोपासक, 5 जनवरी, 2012 से संकलित

सौहार्द से जीएँ सदा

श्री देवेन्द्रनाथ मोदी

वृक्ष हरे-भरे, फूल-फलों से लदे,
झुके-झुके विनम्र भाव से,
माँ धरती को करते नमन सदा।
जीवन भर सदा देते ही रहते,
बदले में कभी नहीं कुछ लेते।
पशु बोझा ढ़ोते, कोड़े खाते,
दूध देते, चौकीदारी करते, मन बहलाते,
बहुत कुछ सबको देते सदा ही रहते।
आदमी सबका दोहन करते, बस सदा लेते ही रहते।
हम चिन्तन करें, मनन करें सदा,
इस धरती को हरियाली से रखें आच्छादित सदा।
प्रकृति, पशु-पक्षी, मानवता से प्यार करते सदा,
हिल-मिलकर, शांति से, सौहार्द से जीएँ सदा।

-"हुक्म", 5 ए/1, सुभाषनगर, पाल रोड़, जोधपुर-342008 (राज.)

स्वास्थ्य-विज्ञान

महावीर का स्वास्थ्य दर्शन

डॉ. चंचलमल चोरडिया

सम्यक् जीवन शैली : स्वास्थ्य का मूलाधार

महावीर का दर्शन मौलिक रूप से स्वास्थ्य और चिकित्सा का दर्शन नहीं है, वह तो आत्मा से आत्मा का दर्शन है। परन्तु जब तक आत्मा मोक्ष को प्राप्त नहीं हो जाती तब तक आत्मा शरीर के बिना रह नहीं सकती। शरीर की उपेक्षा कर आत्म-शुद्धि हेतु साधना भी नहीं की जा सकती। महावीर की दृष्टि में शरीर का आत्म-साधना हेतु महत्त्व होता है, इन्द्रियों के विषय भोगों के लिए नहीं। प्रभु महावीर का अधिकांश चिन्तन आत्मा को केन्द्र में रख कर हुआ, परन्तु उन्होंने शरीर के निर्वाह हेतु केवल ज्ञान के आलोक में, जिस सम्यक् जीवन शैली का कथन किया, वह स्वत: मानव जाति के स्वास्थ्य का मौलिक शास्त्र बन गया।

जीवन हेतु प्राण आवश्यक

जिस शक्ति विशेष द्वारा जीव जीवित रहता है, उसे प्राण कहते हैं। संसार में दो तत्त्व मुख्य होते हैं। प्रथम- जीव या आत्मा अथवा चेतना और दूसरा-अजीव अथवा जड़ या अचेतन। इन तत्त्वों से ही सम्पूर्ण विश्व की संरचना होती है। इसी आधार पर ऊर्जा को भी मोटे रूप में दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। पहली चैतन्य अथवा प्राण ऊर्जा और दूसरी भौतिक ऊर्जा। जिस ऊर्जा के निर्माण, वितरण, संचालन और नियन्त्रण हेतु चेतना की उपस्थिति आवश्यक होती है, उस ऊर्जा को प्राण ऊर्जा और बाकी सभी ऊर्जाओं को जड़ अथवा भौतिक ऊर्जा कहते हैं। जब तक शरीर में आत्मा अथवा चेतना का अस्तित्व रहता है, प्राण ऊर्जा क्रियाशील होती है। मानव जीवन का महत्त्व होता है, परन्तु उसकी अनुपस्थिति में अर्थात् मृत्यु के पश्चात् प्राण ऊर्जा के अभाव में मानव शरीर का कोई महत्त्व नहीं। अत: उसको जला अथवा, दफना कर नष्ट कर दिया जाता है। भौतिक विज्ञान प्राय: जड़ पर ही आधारित होता है। अत: उसकी सारी शोध एवं चिन्तन जड़ पदार्थों तक ही सीमित रहती है। फलत: विज्ञान के इतने विकास के बावजूद आज के स्वास्थ्य

वैज्ञानिक शरीर के किसी भी अवयव जैसे बाल, नाखून, कोशिकाएँ, रक्त, वीर्य जैसे किसी भी अवयव का निर्माण करने में अपने आपको असमर्थ पा रहे हैं, जिसका चेतना युक्त शरीर में स्वयं निर्माण होता है।

प्राण ऊर्जा और उसके मूल स्रोत : पर्याप्तियाँ (Bio Potential Energy Source)

भगवान महावीर के सिद्धान्तानुसार जब मानव का जीव गर्भ में आता है तो, उसे अपने कर्मों के अनुसार आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास, भाषा और मन रूपी छः पर्याप्तियाँ मूल ऊर्जा के स्रोत (Bio Potential Energy Source) रूप में प्राप्त होते हैं। प्रत्येक पर्याप्ति अपने-अपने गुणों के अनुसार पुद्गलों को आकर्षित कर मानव शरीर का विकास करती है। जिन्हें ये शक्तियाँ पूर्ण रूप से प्राप्त होती हैं, उनका सम्पूर्ण एवं संतुलित विकास होता है तथा जिन्हें ये पर्याप्तियाँ आंशिक रूप में प्राप्त होती हैं उनका विकास आंशिक ही होता है।

महावीर ने चेतना के विकास में इन्द्रियों के स्वतंत्र अस्तित्व का कथन किया। जबकि अन्य दर्शनों एवं चिकित्सा वैज्ञानिकों ने उनकी शरीर के एक अवयव तक ही कल्पना की। उनका सम्बन्ध पंच तत्त्वों में से किसी तत्त्व अथवा अंग तक ही सीमित कर दिया।

श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति से ही वायुमण्डल से श्वसन योग्य पुद्गलों को ग्रहण कर जीव शरीर के लिये उन्हें आवश्यक ऊर्जा में परिणत करता है। भाषा पर्याप्ति के कारण ही जीव भाषा योग्य पुद्गलों को ग्रहण कर बोलने की योग्यता प्राप्त करता है। जिन जीवों में भाषा पर्याप्ति का अभाव होता है, वे मुंह होते हुए भी बोल नहीं सकते। मनःपर्याप्ति के प्रभाव से जीव में मनोवर्गणा के पुद्गलों को ग्रहण कर द्रव्य मन की सहायता से चिन्तन-मनन करने की क्षमता प्राप्त होती है। जिन जीवों को मनःपर्याप्ति प्राप्त नहीं होती, वे मनुष्य की भांति मनन, चिन्तन, अध्ययन आदि नहीं कर सकते। उपचार करते समय जब तक चेतना के विकास के इस क्रम की उपेक्षा होगी, निदान अपूर्ण और उपचार अस्थायी होगा।

ये जीवनी शक्तियाँ कार्य के अनुसार मुख्य रूप से दस भागों में रूपान्तरित हो मानव की समस्त गतिविधियों का संचालन करती हैं, जिन्हें प्राण भी कहते हैं। प्राण जीवन शैली को शक्ति प्रदान करता है। प्रत्येक प्राण अपने लिये आवश्यक पुद्गलों को आसपास के वातावरण से ग्रहण कर अपना-अपना कार्य कर सकता है।

कानों के द्वारा शब्दों को ग्रहण करने अथवा सुनने की शक्ति विशेष को श्रोत्र इन्द्रिय बल प्राण, आंखों के द्वारा देखने की शक्ति विशेष को चक्षु इन्द्रिय बल प्राण, नासिका द्वारा गंध ग्रहण करने की शक्ति विशेष को घ्राणेन्द्रिय बल प्राण, जीभ द्वारा स्वाद का अनुभव कराने की शक्ति विशेष को रसनेन्द्रिय बल प्राण, शरीर द्वारा ठण्डा-गरम, कोमल-कठोर, हल्का-भारी आदि स्पर्श का ज्ञान कराने वाली शक्ति विशेष को स्पर्शेन्द्रिय बल प्राण, मन से चिंतन-मनन करने की शक्ति को मनोबल प्राण, भाषा वर्गणा के पुद्गलों की सहायता से वाणी की अभिव्यक्ति हेतु विशेष ऊर्जा वचन बल प्राण, शरीर के माध्यम से उठने-बैठने, हलन-चलन करने की विशेष शक्ति काय बल प्राण, श्वासोच्छ्वास वर्गणा के पुद्गलों की सहायता से श्वास लेने और बाहर निकालने की शक्ति विशेष श्वासोच्छ्वास बल प्राण तथा निश्चित समय तक निश्चित योनि में जीवित रहने की शक्ति विशेष आयुष्य बल प्राण कहलाती है। आयुष्य बल प्राण के अभाव में अन्य प्राणों का कोई अस्तित्व नहीं होता। आयुष्य बल प्राण का प्रमुख सहयोगी श्वासोच्छ्वास बल प्राण होता है। प्रत्येक व्यक्ति की एक निश्चित आयुष्य होती है जिसका निर्धारण उसके पूर्व भव में ही हो जाता है। अन्य प्राणों की स्थिति बदल सकती है। क्षय के साथ-साथ उन प्राणों का निर्माण भी हो सकता है। प्राणों की विविधता के कारण ही प्रत्येक व्यक्ति के सुनने, देखने, चखने, सूंघने, चिंतन-मनन करने, वाणी की अभिव्यक्ति आदि अलग-अलग होती है। कभी-कभी भौतिक उपचारों से कान, नाक, चक्षु, जीभ आदि इन्द्रियों के द्रव्य उपकरणों में उत्पन्न खराबी को तो दूर किया जा सकता है, परन्तु उनमें प्राण ऊर्जा न होने से भौतिक उपचार सदैव सम नहीं होते। इसी कारण सभी नेत्रहीनों को नेत्र प्रत्यारोपण द्वारा रोशनी नहीं दिलाई जा सकती। सभी बहरे मनुष्य उपकरण लगाने के बाद भी सुन नहीं सकते। मूर्ति में मानव की आंख लगाने के बाद उसमें देखने की शक्ति नहीं आ जाती।

सारी प्राण शक्तियाँ आपसी सहयोग और समन्वय से कार्य करती हैं, परन्तु एक दूसरे का कार्य नहीं कर सकती। आंख सुन नहीं सकती, कान बोल नहीं सकता, नाक देख नहीं सकती इत्यादि। प्राण ऊर्जा का जितना सूक्ष्म एवं तर्क संगत विश्लेषण महावीर दर्शन में है उतना, आधुनिक चिकित्सा पद्धति में भी नहीं किया गया।

संयम ही स्वस्थ जीवन की कुंजी

प्राण और पर्याप्तियों पर ही हमारा स्वास्थ्य निर्भर करता है। शरीर एवं प्राण का परस्पर संबंध न जानने पर कोई भी व्यक्ति न तो प्राणों का अपव्यय अथवा दुरुपयोग ही रोक सकता है और न अपने आपको नीरोग ही रख सकता है। आत्मिक आनन्द और सच्ची शांति तो प्राण ऊर्जा के सदुपयोग से ही प्राप्त होती है। यही प्रत्येक मानव के जीवन का सही लक्ष्य होता है। प्रतिक्षण हमारे प्राणों का क्षय हो रहा है। अतः हमारी सारी प्रवृत्तियां यथा संभव सम्यक् होनी चाहिये। पाँचों इन्द्रियों, मन, वचन का संयम स्वास्थ्य में सहायक होता है तथा उनका असंयम रोगों को आमन्त्रित करता है। हवा, भोजन और पानी से ऊर्जा मिलती है, परन्तु उनका उपयोग कब, कैसे, कितना व कहाँ करना इसका सम्यक् ज्ञान और उसके अनुरूप आचरण आवश्यक होता है। स्वाध्याय, ध्यान, कायोत्सर्ग भी ऊर्जा के स्रोत होते हैं, जिनका ज़ीवन में आचरण आवश्यक होता है। प्राण ऊर्जा के सदुपयोग से शरीर स्वस्थ, मन संयमित, आत्मा जागृत और प्रज्ञा विकसित होती है।

स्वास्थ्य की दृष्टि से पर्याप्तियों और प्राणों का बहुत महत्त्व होता है। अतः महावीर ने प्राण और पर्याप्तियों के संयम एवं सदुपयोग को सर्वाधिक महत्त्व दिया। जहाँ जीवन है वहाँ प्रवृत्ति तो निश्चित रूप से होती ही है। अतः पर्याप्तियों और प्राणों के संयम का मतलब हम उनका अनावश्यक दुरुपयोग अथवा अपव्यय न करें, अपितु अनादिकाल से आत्मा के साथ लगे कर्मों से छुटकारा पाने हेतु सदुपयोग द्वारा सम्यक् पुरुषार्थ करें।

आहार संयम– जीवन चलाने के लिये जितना आवश्यक हो भक्ष्य-अभक्ष्य का विवेक रख कर आहार-पानी आदि ग्रहण करना।

शरीर का संयम– शरीर की अनावश्यक प्रवृत्तियों से बचना एवं सम्यक् पुरुषार्थ करना।

इन्द्रियों का संयम– इन्द्रियों की क्षमता से अधिक तथा अनावश्यक कार्य न लेना। वीर्य का नियन्त्रण रखना अर्थात् ब्रह्मचर्य का पालन करना। इन्द्रिय विषयों को उत्तेजित करने वाली प्रवृत्तियों एवं वातावरण से यथा संभव दूर रहना।

भाषा का संयम– वाणी का विवेक एवं यथासंभव मौन रखना, परन्तु आवश्यकता पड़ने पर सत्य एवं मधुर बोलना। अनावश्यक बोलने से जीवनी शक्ति क्षीण होती है। वाणी के प्रकम्पन हमारे स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं।

ध्वनि और मंत्र चिकित्सा का यही आधार होता है। वाणी शरीर और मन दोनों को प्रभावित करती है।

मन का संयम– मन से अनावश्यक मनन, चिन्तन, स्मृति और कल्पनाएँ न करना अर्थात् मन की सम्यक् प्रवृत्ति करना। मनोबल कमजोर करने वाले दृश्यों को न तो देखना और न सुनना मन का संयम होता है। हिंसा, क्रूरता, घृणा, कामुकता, भय इत्यादि मनोबल कमजोर करने वाले वातावरण में रहना, मन का असंयम होता है।

संयम ही स्वास्थ्य की कुंजी है

जो चिकित्सा पद्धतियाँ कर्म बन्धन में सहयोगी होती हैं, महावीर ने उनका पूर्ण निषेध किया। रोग का मूल कारण अप्राकृतिक जीवन शैली, अनियन्त्रित, स्वछन्द, असयंमित-मन, वचन, काया की प्रवृत्तियाँ ही होती हैं। अतः महावीर ने प्राकृतिक स्वावलम्बी जीवन शैली और मन, वचन तथा काया के संयम को सर्वोच्च्य प्राथमिकता दी। जितनी ईमानदारी से उनका पालन किया जाता है, उतना ही व्यक्ति स्वस्थ होता है तथा पूर्व संचित असातावेदनीय कर्म के कारण रोग की स्थिति बन भी जाती है तो भी वह परेशान नहीं होता। वह शरीर को आत्मा से अलग, नष्ट और विध्वंसन होने वाला मानता है। अतः उसकी प्राथमिकता शरीर पर नहीं रहती। शरीर से ध्यान हटाते ही शरीर के दर्द, पीड़ा आदि कष्ट नहीं पहुँचा सकते। जहाँ रोग का आदर सत्कार नहीं होता, वहाँ रोग अधिक दिनों का मेहमान नहीं रह सकता। सभी रोगों का कारण पर्याप्तियों के असंयम से होने वाले प्राणों का असंतुलन ही होता है। पर्याप्तियों के संयम से शरीर में रोग उत्पन्न होने की संभावनाएँ कम हो जाती हैं और यदि रोग की स्थिति हो भी जाती है तो पर्याप्तियों के संयम से पुनः शीघ्र स्वास्थ्य को प्राप्त किया जा सकता है। यही महावीर के सिद्धान्तानुसार शरीर स्वास्थ्य का मूलाधार है।

महावीर का स्वास्थ्य चिन्तन पूर्णतः वैज्ञानिक

महावीर का चिन्तन सुना-सुनाया, रटा-रटाया अथवा चुराया हुआ चिन्तन नहीं है, परन्तु अनुभूति पूर्ण सत्य पर आधारित है, जिसका उन्होंने स्वयं साक्षात्कार कर प्रतिपादन किया। महावीर का स्वास्थ्य दर्शन पूर्ण रूप से मौलिक एवं वैज्ञानिक है। अहिंसा को आधार मानकर अनेकान्त दृष्टि से उसमें स्वास्थ्य का विवेक पूर्ण सनातन सिद्धान्तों को स्वीकारते हुए चिंतन किया गया है। महावीर ने जहां एक तरफ प्राण और पर्याप्तियों के संयम को स्वास्थ्य का आधार

कहा, वहीं दूसरी ओर अशुभ कर्मों एवं आस्रवों से बचने की स्पष्ट प्रेरणा दी तथा उन्हें ही रोग हेतु जिम्मेदार बतलाया। सम्यक् प्रवृत्ति एवं संवर युक्त जीवन शैली का कथन कर, महावीर ने जनमानस को स्वस्थ जीवन जीने का राजमार्ग बतलाया। पूर्व में उपार्जित अशुभ कर्मों के रूप में होने वाले रोग के कारणों के उपचार हेतु बारह प्रकार के तपों की सम्यक् आराधना का सुझाव दिया, जिससे न केवल आत्मशुद्धि ही होती है, अपितु अधिकांश पुराने शारीरिक एवं मानसिक रोगों से भी मुक्ति मिलती है।

शरीर एवं रोगों की अपेक्षा रोग के मूल कारणों को दूर करने पर उन्होंने जो जोर दिया वह आधुनिक स्वास्थ्य विज्ञान के लिये चिन्तनीय है। अत: उनके दर्शन पर जितनी अधिक शोध की जायेगी स्वास्थ्य के प्रति उतने-उतने नये आयाम सामने आते जायेंगे। महावीर का दर्शन अपने आप में परिपूर्ण है। अत: उसकी उपेक्षा करने वाला आधुनिक स्वास्थ्य विज्ञान अपने आपको पूर्ण वैज्ञानिक मानने का दावा नहीं कर सकता।

-चोरड़िया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.)
फोन: 0291-2621454, 94141-34606
E-mail: cmchordia.jodhpur@gmail.com,
Website: www.chordiahealthzone.com

बाल-स्तम्भ [जनवरी-2012] का परिणाम

जिनवाणी के जनवरी-2012 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'न्यायप्रिय राजा धर्मशील' आलेख के प्रश्नों के उत्तर 33 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है। पूर्णांक 30 में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-250/-	तनिष्क खिंवसरा-जोधपुर	30
द्वितीय पुरस्कार-200/-	नीति संघवी-बदनावर	27.5
तृतीय पुरस्कार- 150/-	बुद्धि प्रकाश जैन-मंदसौर	26
सान्त्वना पुरस्कार- 100/-	गजेन्द्र कुमार जैन-जयपुर	25
	आरती तातेड़-जोधपुर	24
	हर्ष कोठारी-जयपुर	24
	श्रेया मेहता-किशनगढ़	24
	भव्यता जैन-सांघीपुरम् (कच्छ)	23

बाल-स्तम्भ

जीओ और जीने दो

श्री धर्मचन्द लोढ़ा

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित आलेख को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 5 अप्रेल 2012 तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरूणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-250 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-200 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 150 रुपये तथा 100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

सोमवार का दिन था। सुबह के दस बजे थे। मैं ऑफिस जाकर बैठा ही था कि एक व्यक्ति अपने बेटे के साथ मेरे कमरे में आया। पूछने पर पता चला कि विद्यालय में पढ़ने वाले छात्र रहमान का वह पिता इकबाल था और बालक रहमान की टी.सी. लेने आया था। मैंने टी.सी. का शुल्क लेकर टी.सी. उसे थमा दी। वह धन्यवाद देकर जाने लगा।

अचानक मेरे मुख से निकल पड़ा-"भाई, क्या करते हो?"

"जी, मैं जाति का कसाई हूँ और भैंसे (पाड़े) काटने वाले कारखाने में काम करता हूँ।" सुनते ही मेरा शरीर सुन्न हो गया। मैं पछताने लगा कि यदि यह प्रश्न मैंने नहीं किया होता तो ठीक रहता। मुझे उससे नफ़रत होने लगी। फिर भी अन्तर्मन पूछ उठा-

"पाडों (पशुओं) को मारते हुए क्या तुम्हें हिचकिचाहट नहीं होती? यह काम तो बहुत बुरा है।"

"जी यह हमारा खानदानी धंधा है और पूर्वज भी यही काम करते आये हैं।" वह बोला।

"देखो भाई जैसे हमें अपना शरीर प्यारा है, वैसे ही सभी जीवों को भी अपने प्राण प्यारे हैं। जैसे किसी अंग को कोई अलग कर दे तो हमें कितना दर्द, दुःख होता है, वैसे ही सभी जीवों को भी होता है।

बेचारे मूक पशु दर्द से कितने छटपटाते होंगे?''

''जी, उन्हें दर्द भी होता है और छटपटाते भी हैं।'' वह हाथ जोड़कर बोला।

''तो, फिर ऐसे पाप के काम को क्यों करते हो? जीवन-यापन के और भी तो कई काम हैं।'' मैंने उसे समझाते हुए कहा।

मैंने उसे कहा-''कोई धर्म यह नहीं कहता कि तुम दूसरे जीवों को हानि पहुँचाओ, उन्हें मारो-काटो।''

वह कुछ सोचने लगा और सलाम बोलकर चल पड़ा।

दो दिन बीत गये। तीसरे दिन जैसे ही घर से ऑफिस को निकला, किसी ने पीछे से आवाज लगाई। मैंने मुड़कर देखा। इकबाल अपने बच्चे को गोद में लिए मेरी ओर आ रहा है। बच्चे की अंगुलि से खून बह रहा था और जोर से कराह रहा था।

इकबाल ने कहा- ''यह मेरे साथ काम कर रहा था। अचानक असावधानी से इसकी अंगुलि कट गई। खून बन्द नहीं हो रहा। अभी तो अस्पताल खुलने में समय है। आप ही कुछ कीजिये।''

मैं तुरन्त उन दोनों को मेरे पड़ौसी मित्र कम्पाउण्डर विनोद के घर ले गया। वह तुरन्त उसके इलाज में लग गया। टांकें लगते ही खून बन्द हो गया। दवा लगाकर पट्टी बांध दी गई। रोता हुआ रहमान चुप हो गया। इकबाल मेरे कम्पाउण्डर मित्र को फीस देने लगा। लेकिन उसने हाथ जोड़ लिये।

मैंने उन्हें अपने साथ गाड़ी में बैठाकर घर छोड़ते हुए सलाह दी- ''अब घर जाओ, दो दिन बाद वापस दिखा लाना, बच्चे का खयाल रखना।''

हाथ जोड़ते हुए इकबाल रो पड़ा। उसका गला रुंध गया। बड़ी मुश्किल से बोल पाया-''उस दिन की आपकी बात को मैं आज समझ पाया हूँ। छुरी से थोड़ी सी अंगुलि कट जाने पर इस बच्चे को जब इतना दर्द हुआ है तो उन जीवों को काटने पर तो कितना दर्द होता होगा, जिन्हें मैं कारखाने में काटता हूँ। अब मैं किसी जीव को नहीं मारूँगा। किसी की हत्या नहीं करूँगा।''

''तो फिर क्या करोगे?'' मैंने उसके मन की इच्छा जाने के लिए

प्रश्न किया।

"कुछ भी करूँगा? भूखा रह जाऊँगा, पर यह पाप का काम नहीं करूँगा।"

मैंने कहा– 'तुमने अहिंसा धर्म को अब समझा है। जीव दया सच्चा धर्म है। भगवान महावीर ने जीवों की करुणा पुकार सुनकर ही तो अहिंसा का सिद्धान्त बताया था, 'जीओ और जीने दो' का मूल मंत्र दिया था, हिंसा का विरोध किया था।"

शाम को इकबाल फिर आया। उसने बताया कि जीव हत्या की नौकरी को सदा के लिए छोड़ आया हूँ। मैं उसे अपने मित्र की फैक्ट्री में ले गया। मित्र से निवेदन करने पर उसने इकबाल को काम समझाते हुए नौकरी पर रख लिया। साथ ही बच्चे के पढ़ने के लिए भी आवश्यक मदद की।

आज इकबाल फैक्ट्री का पूरा काम सुपरवाइजर के रूप में संभाल रहा है। बच्चा जो बड़ा हो गया, अब जैन विद्यालय में शिक्षक की नौकरी कर रहा है। *-वरिष्ठ लिपिक, रा.उ.मा.विद्यालय. देवली (टोंक)*

प्रश्नः–

1. "सभी जीवों को अपने प्राण प्यारे हैं।" क्या आप इस कथन से सहमत हैं? यदि सहमत हैं तो क्यों?
2. इकबाल ने अपना खानदानी धंधा क्यों बदला?
3. अंहिसा को धर्म क्यों कहा गया है?
4. अर्थ समझाइए– कसाई, खानदानी, कम्पाउण्डर, सुपरवाइजर, कारखाना।
5. दूसरों के दुःख-दर्द का अनुमान कैसे सम्भव है?
6. लेखक के प्रयत्न से आपको क्या प्रेरणा मिलती है?

(माह-जनवरी-2012 का परिणाम पेज नं. 87 पर प्रकाशित किया गया है।)

सूचना

जिनवाणी के जिन आजीवन-सदस्यों का स्वर्गगमन हो जाता है, उनके नाम पर जिनवाणी भेजना कार्यालय द्वारा बन्द कर दिया जाता है। अतः जिनवाणी की पुनः सदस्यता किसी अन्य नाम से ग्रहण की जा सकती है।

-मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर (राज.)

आत्माभिव्यक्ति

गुरु में पाए भगवान के दर्शन

श्रीमती नीलू डागा

नागौर चातुर्मास के पश्चात् पूज्य उपाध्यायप्रवर श्री मानचंद्र जी म.सा., मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि संत बीकानेर संघ की आग्रहभरी भावभीनी विनति को स्वीकार कर उपाध्यायप्रवर वृद्धावस्था में लंबे विहार की अनुकूलता न होने पर भी बीकानेर पधारे। बीकानेर में उपाध्यायप्रवर का प्रवास विभिन्न क्षेत्रों में 11.12.2011 से 01.02.2012 तक रहा। बीकानेर की पावन धरा पर उपाध्यायप्रवर का यह प्रथम प्रवास था। इस प्रवास के दौरान भक्तों में एक अभूतपूर्व धर्म जागरणा दृष्टिगोचर हुई। प्रस्तुत है इसी संदर्भ में एक श्राविका की अनुभूति के स्वर। **-संपादक**

अपरिचित थी अनजान थी मैं, क्या होते हैं गुरु?
क्या होता है गुरु सानिध्य का एहसास?
धार्मिक परिवेश के सिंचित संस्कारों में,
कुछ देखा था, कुछ सुना भी था, पर आज हुआ है विश्वास।

मैं अपना सौभाग्य कहूँ या प्रारब्ध कि मेरे नसीब का सितारा मेरे ही घर आंगन में बुलंद होने लगा, जब-

बीकानेर की यह पुण्य धरती पर आया वह दिन पावन
जब उपाध्याय भगवन्त आदि संतों ने किया पदार्पण
मेरे घर आंगन पधारे गुरुवर, खिल गया मेरा यह उपवन
धन्य-धन्य हो गई मैं तो, धन्य हो गया मेरा जीवन
प्यासी यह धरा थी गुरुवर! ज्ञान व स्नेह से आपने किया सिंचन
देव गुरु धर्म को साकार किया, पूरा हुआ आज सबका स्वप्न

इन जैसे महान् संतों के समागम, दर्शन और वंदन से गुरु सान्निध्य के माहात्म्य का साक्षात्कार किया। लोगों में एक ऐसी नई उमंग, उत्साह व ऊर्जा का संचार हुआ जिसकी मैंने तो कल्पना भी नहीं की थी। प्रत्येक भक्त, संतों के दर्शन, वंदन, उनके प्रवचन-श्रवण और ज्ञानार्जन हेतु उनकी सेवा में रहने हेतु निरंतर लालायित रहता था। इस उल्लासमय धार्मिक वातावरण में, मैं अपने अठाई

तप की क्या बात करूं, यहां तो कंपकंपाती सर्दी में भी एक मासखमण और अनेक अठाइयां हो गई।

संतों के प्रवास के दौरान न तो लोगों को सर्दी का डर था, न स्वास्थ्य की परवाह, न व्यापार या घर -गृहस्थी की चिंता। बस एक ही धुन, एक ही लक्ष्य, एक ही लगन, एक ही संकल्प-

कोई मन में अधूरा न रह जाये अरमान,
चाहे वो प्रवचन श्रवण हो या करना हो सुपात्रदान,
चाहे वो सामायिक करनी हो या करना हो ज्ञान का पान,
तपस्या की तो झड़ी लगी, मिल गया कर्म-निर्जरा का समाधान
गुरु में पाये भगवान के दर्शन, करूँ सेवा जब तक हो तन में प्राण

पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में मुझे एक विलक्षण त्याग, वैराग्य और शील के पुण्य परमाणुओं का वलय साकार रूप में देखने को मिला। जीवन में पहली बार अनुभव किया- संयम-साधना का प्रभाव और संतों का अतिशय। गुरु भगवन्तों के प्रवास को यदि मैं पर्युषण और गुरु हस्ती- गुरु मान के जन्म-दिवस को संवत्सरी महापर्व की संज्ञा दूं तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। पूज्य उपाध्याय भगवन्त की शान्त मुख मुद्रा एवं मधुर मनोहारिणी मुस्कान, अगाध श्रद्धा का भाव भरती है, समभावों की सृष्टि करती है और एक अनिर्वचनीय आनन्द की छटा बिखेरती है। उनका वंदन कर सुख-साता की पृच्छा करने पर प्रत्युत्तर में उनकी वाणी से निःसृत "आनन्द है" की ध्वनि सुनते ही तन-मन खिल जाता है, रोम-रोम पुलकित हो जाता है, मानो हमें भी आनन्द की कोई अमूल्य निधि मिल गई हो। उनकी दिव्य आभा में मन के संशय तिरोहित हो जाते है और प्रश्न शांत हो जाते हैं- समाधान की मौन कुंजी पाकर। प्रतिदिन श्रद्धेय गौतम मुनि जी म.सा. के मधुर प्रभावशाली प्रवचन और अन्त में उपाध्याय भगवन्त का संक्षेप में उसी विषय पर गागर में सागर की तरह उपसंहार, एक नई दिशा देकर जीवन में रूपान्तरण की चेतना जगा देता है। मध्याह्न में उपाध्याय भगवन्त की सन्निधि में आगम वाचना और उसकी व्याख्या सुनना अनेक लोगों के लिए ज्ञानार्जन का अपूर्व अवसर होता था। नूतन ज्ञान अर्जन करने के लिए जिज्ञासु भाई-बहन नियमित रूप से गौतम मुनि जी म.सा. की सेवा में निर्धारित समय पर उपस्थित हो जाते। मैंने भी उसी ज्ञान गंगा में डुबकी लगाकर बहुत कुछ पाया। मेरे जीवन को नया प्रकाश मिला, सहज ही में, और यह भी पाया कि सद्ज्ञान जीवन की रोशनी है, आत्मा की खुराक है, विकासशील व्यक्तित्व का

आयाम है और याद आया प्रभु की अंतिम वाणी का अमूल्य सूत्र-

''नाणेण विणा न हुंति चरणगुणा''

बिना ज्ञान के चारित्रगुण की प्राप्ति नहीं होती।

यह गुरु भगवन्तों की महती कृपा का फल था, वरना मेरे में क्या पात्रता थी? उनकी सीख मेरे जीवन की अमूल्य निधि बन गई।

लघुवय के होनहार संत श्री लोकचन्द्र जी म.सा. के प्रवचन एवं शास्त्रज्ञान से एक ओर हम सभी अभिभूत थे तो दूसरी ओर नवदीक्षित सेवाभावी भजनानन्दी श्री दर्शनमुनि जी म.सा. और सेवाभावी श्री जितेन्द्र मुनि जी म.सा. की विनम्रता और आत्मीयता सभी को आकर्षित कर देती थी।

क्या कहूं मैं इन सबके बारे में, रत्न संघ के ये अनमोल रतन
महिमा जिनकी इतनी न्यारी कैसे करूं शब्दों का चयन।

एक दिन अपराह्न में शास्त्र-वाचना के पश्चात् जब श्री गौतममुनि जी म.सा. ने रत्नसंघ की उज्ज्वल परंपरा का प्रभावशाली वर्णन किया, तब हमें अपनी गौरवशाली परम्परा का भान हुआ। मैंने सोचा कि भले ही मैं पूज्य रत्नचन्द्र जी म.सा. के युग में तो नहीं हूँ, परन्तु गुरु हस्ती के युग में तो जन्म ले ही चुकी थी काश! मैंने उन महान गुरु हस्ती के दर्शन किये होते, उनकी शीतल छाँव में उनकी शिक्षाओं की सुवास पाई होती, उनकी संयम-साधना के पुण्य परमाणुओं से अपने को प्रदीप्त किया होता तो मैं भाग्यशाली होती। पर जब उन्हीं गुरु हस्ती के पट्टधर वर्तमान आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के जीवन की कहानी सुनी तो मुझे लगा कि गुरु हस्ती उन्हीं में प्रतिबिम्बित हो रहे हैं। जब गौतम मुनि म.सा. ने उनकी प्रभावशाली प्रवचन शैली, अगाध-आगम ज्ञान, सरलता, विनम्रता, संयम-साधना व शासन प्रभावना की गाथा सुनाई तो मन में आतुरता जागी-

अब और सब्र नहीं होता, गुरु दर्शन की है आस,
पंख होते तो तत्काल पहुँच, बुझा लेती यह प्यास।।

जहाँ उत्कंठा इतनी तीव्र हो जाती है, वहाँ बन्धन, बन्धन न रहकर पथ के पाथेय बन जाते हैं। तुरन्त हम सपरिवार आचार्य श्री के दर्शनार्थ बारनी ग्राम में पहुँच गये। गुरु व उनकी सेवा में उपस्थित संत और साध्वियों के दर्शन कर मैं धन्य हो गई। वन्दन के पश्चात् मैं गुरुदेव का तेजस्वी मुखमण्डल अपलक निहारती रही, तभी गुरुदेव की कृपा दृष्टि मुझ पर पड़ी और उनका वरदहस्त मुझे

आशीर्वाद देता हुआ उठ गया। दर्शन तो पहले भी कई बार हुए मगर इस बार नई उमड़ती श्रद्धा के साथ, एक नई अनुभूति, नया अंदाज, नये विश्वास, नई ऊर्जा के साथ दर्शन पाए। उनके सागरवर गंभीर व्यक्तित्व में एक कुशल अनुशास्ता के सभी गुण झलक रहे थे। इतनी भीड़ में भी गुरुवर से हमारे परिवार को पहचान मिली और प्रेरणा के दो शब्द भी। मैं धन्य हो गई! अन्य संतों-साध्वियों के सेवा भाव और विनम्रता ने दिल को छू लिया।

मैं सोचने लगी कि हमारे संघ की गौरवशाली परम्परा इस काल में भी अगाध गति से प्रवाहमान है और संतों की संयम और साधना की निर्मल सरिता संघ में प्राण भर रही है। जहाँ गुरु हीरा और गुरु मान जैसे तेजस्वी ज्योतिर्धर सूर्य और चाँद की तरह संघ को तेज और ऊर्जा प्रदान करने वाले हों, वह संघ नित नया इतिहास रचता हुआ अपनी गौरव गरिमा से यशस्विता के उत्तुंग शिखरों को छूता ही रहेगा।

धन्य है यह रत्नसंघ, धन्य है इसका इतिहास।
नित्य आगे बढ़ा रहे इसे, गुरु हीरा, गुरु मान के प्रयास।।

इसी संदर्भ में मुझ गौतममुनि जी म.सा. के संघ समुत्कीर्तन गीत का एक पद याद आ जाता है-

संख्या चाहे कम हो संघ में, फिर भी चलता जादू,
जहाँ विचरते सुयश पाते, क्या सतियाँ क्या साधु,
नजर लगे ना रत्न संघ को, डालो सब थुथकारा,
वो पावन संघ हमारा।।

पूज्य मान गुरु के बीकानेर में पावन प्रवास ने हम सब में संयम-साधना में गतिशील बनने के लिए एक अपूर्व ऊर्जा भर दी। धन्य हो गई बीकानेर धरा, धन्य हो गया सुराणा और ढड्ढा परिवार के साथ हमारा डागा परिवार। गुरुदेव अब बीकानेर की धरती से विहार कर रहे हैं। हमारी आँखे नम हैं, मन भारी है। गुरुदेव आपने बहुत कुछ दिया, हमने बहुत कुछ पाया, लेकिन इस उपवन को संभालने, हमें जागृत करने, हमारा प्रमाद दूर करने और जीवन में संयम और साधना के फूल खिलाने, बार-बार पधारते रहियेगा। इसी अभ्यर्थना के साथ गुरु चरणों में सविनय अनवरत वंदन।

-''सौभाग'', 7, सादुल गंज, बीकानेर (राज.)

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

भगवान महावीर की शिक्षाओं की आधुनिक सन्दर्भ में प्रासंगिकता- ***संपादक***- डॉ.पी.सी जैन, ***प्रकाशक***- जैन अनुशीलन केन्द्र, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.), ***पृष्ठ***- 10+386, ***मूल्य***-800 रुपये, ***सन्***- 2009

वर्ष 2002 में भगवान महावीर के 2600 वें जन्मकल्याणक महोत्सव के अवसर पर जैन अनुशीलन केन्द्र, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर द्वारा "भगवान महावीर की शिक्षाओं की आधुनिक सन्दर्भ में प्रासंगिकता" विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया था। संगोष्ठी में पठित एवं कुछ अन्य योजित 57 आलेखों को प्रस्तुत पुस्तक में निबृद्ध किया गया है। इन आलेखों में सामाजिकता, समानता, व्यक्ति-स्वातन्त्र्य, सर्वोदय, अर्थव्यवस्था, समन्वयवाद, मानवीय-मूल्य आदि विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला गया है। अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकान्तवाद आदि जैनधर्म के सिद्धान्तों की वर्तमान प्रसंग में उपयोगिता का अन्वेषण किया गया है। पुस्तक का प्रकाशन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अर्थसहयोग से हुआ है।

स्वाध्याय का स्वरूप- सचिन्द्र शास्त्री, ***प्रकाशक***-सरस्वती उच्चस्तरीय अध्ययन एवं अनुसंधान संस्थान, B-417 श्री सुखविलास, प्रधान मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर, ***अन्य प्राप्तिस्थान***- सचिन्द्र शास्त्री, सी-115, फ्लेट नं. 104, सावित्री पथ, बापू नगर, जयपुर-302015, मोबाइल-9460149511

स्वाध्याय मनुष्य के ज्ञानचक्षु को अनावृत्त करता है तथा उसे अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। यह एक परम तप है, जिससे कर्मों की भी निर्जरा होती है। प्रस्तुत पुस्तक में प्रथम अध्याय में प्रमुखतः षट्खण्डागम की धवला टीका के आधार पर श्रुतज्ञान के स्वरूप एवं भेदों की चर्चा की गई। द्वितीय अध्याय में आगमवर्णित स्वाध्याय के स्वरूप का निरूपण किया गया है। जिसके अन्तर्गत सम्यक्त्व-प्राप्ति में भी स्वाध्याय की भूमिका के महत्त्व का आकलन किया गया है एवं अनुयोग तथा षडावश्यक की चर्चा की गई है। तृतीय अध्याय में स्वाध्याय के अभ्यास की प्रक्रिया का विचार करते हुए वक्ता एवं श्रोता के स्वरूप, ज्ञान के आठ अंगों, स्वाध्याय के योग्य क्षेत्र, काल आदि का निरूपण किया गया है। चतुर्थ अध्याय में स्वाध्याय को परम तप के रूप में प्रतिपादित करते हुए स्वाध्याय के महत्त्व, जिनवाणी के रक्षणोपाय आदि पर विचार किया गया है। अन्त में पण्डित बनारसीदास द्वारा रचित 'सरस्वती पूजन' को स्थान दिया गया है।

IT IS POSSIBLE: Shrikant Gupta, **Publisher-** Indian map service 'G'Sector, Shastri Nagar, Jodhpur, Phone-0291-2612874, **Available also at-** SWASH Personality Development Pvt. Ltd., A-1, Daspa House, Old Loco Road, Jodhpur, Phone- 0291-3292735, Mob. 09928630402,**Pages:** 7+135, **Edition** December 2011, **Price:** Rs. 200/-.

"IT IS POSSIBLE" is a unique book about 100 inspirational stories and messages. The stories and messages in the book inspire the readers to take action to achieve their desired goals. This book helps to transform people's lives for an enlightened vision. This is the book which gives hope, courage and inspiration to transform our life. This helps us to think beyond our limitations. If we put our heart to this book, we shall realize our true potential.

The stories and messages in this book, which the author read from different sources, brought a transformation in him. So with a deep responsibility of contributing back to the society, he compiled these stories and messages in the form of his first book āIT IS POSSIBLEä.

This book has been dedicated to Acharya Shri Hirachad Ji Maharaj Saab and Upadhyaya Shri Maan Chandra Ji Maharaj Saab.

जिनवाणी का सच्चा उपासक सदैव....

श्री नितेश नागोता जैन

1. दूसरों के सद्गुणों को देखकर प्रमुदित होता है।
2. अहिंसा, यतना धर्म का दृढ़तापूर्वक पालन करता है।
3. कषायों का दमन करता है।
4. धर्म-साधना आत्म-आराधना में रमण करता है।
5. अपने नैतिक कर्तव्यों एवं दायित्वों का निष्ठापूर्वक पालन करता है।
6. स्वयं का आत्मिक एवं आगमिक ज्ञान बढ़ाता है।
7. पापभीरुता, विवेक, दूरदृष्टिता को अपनाता है।
8. स्वयं के वर्तमान एवं भविष्य को सफल बनाता है।
9. प्रमाद-आलस्य से दूर रहकर सतत सम्यक् पुरुषार्थ करता है।
10. प्रत्येक परिस्थिति में दृढ श्रद्धा-आस्था का आदर्श प्रस्तुत करता है।

-कर सलाहकार, जैन बोर्डिंग एरिया, भवानीमंडी-326502 (राज.)

श्राविका-मण्डल

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (24)

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा संचालित)

अ. भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) से प्रकाशित पुस्तक **जैन धर्म का मौलिक इतिहास (भाग दो-सामान्य पूर्वधर खण्ड)** के आधार पर संचालित मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता की यह बारहवीं किश्त है। प्रतियोगी के उत्तर लाइनदार पृष्ठ पर मय अपने नाम, पते (अंग्रेजी में), दूरभाष न. सहित Smt. Vajainti Ji Mehta, C/o Shri Anil Ji Mehta, 91, 5th main, 5th A cross, III Block, Tayagraj Nagar, Banglore-560028 (Karnataka) Mobile No. 09341552565 के पते पर 10 अप्रेल 2012 तक मिल जाने चाहिए।

सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतियोगियों को क्रमशः राशि 500, 300, 200 तथा 100-100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार दिए जायेंगे। इसके अतिरिक्त वर्ष के अन्त में 12 माह तक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले और सर्वश्रेष्ठ रहने वाले प्रतियोगी को विशेष पुरस्कार दिए जायेंगे। - *मधु सुराणा, अध्यक्ष*

जैनधर्म का मौलिक इतिहास (भाग-2)

(पृष्ठ 561 से 620 तक से प्रश्न)

इन प्रश्नों के उत्तर आगे दिये गये चतुर्भज के अक्षरों में ढूंढिए। उत्तर अलग से नहीं लिखना है, वही पर ढूंढ कर उसे दर्शाना है-

1. किसकी मृत्यु के पश्चात् श्वेतपट-श्वेताम्बर संघ की उत्पत्ति हुई?
2. परिव्राजक के ढिंढोरे को किसने रोका?
3. पूर्वकाल में तीसरा सम्प्रदाय कौनसा विद्यमान था?
4. धनपाल नामक व्यापारी किस नगर में रहता था?
5. आर्य वज्रसेन ने कितने वर्ष की उम्र में दीक्षा ग्रहण की?
6. किसके अन्तर्मन पर आया हुआ अज्ञान का काला पर्दा हट गया?
7. किस आचार्य ने तीन वर्ष तक युगप्रधानाचार्य पद से जिनशासन की सेवा की?
8. वज्रमुनि के बुद्धि कौशल को देखकर कौनसे देव चकित एवं प्रसन्न हुए?

9. किसने कहा–"पुत्र! तुमने हिंसावर्द्धक ग्रन्थ पढ़े हैं?"

10. जीव, अजीव और नोजीव इन तीन द्रव्यों को मंगाने के लिए किसने कहा?

11. वस्तुतः वे जन्मजात योगी थे।

12. निगोद–व्याख्याता के रूप में प्रशंसा सुनकर किसकी परीक्षा हेतु इन्द्र आये?

13. कौन बालक साध्वियों के मुख से शास्त्रों के श्रवण में बड़ी रुचि रखता था?

14. धर्मिष्ठे! लो मुनिदर्शन के तात्कालिक फल के रूप में हमको पुत्र मिल गया।

15. किसने वज्रमुनि को पूर्वज्ञान की वाचनाएँ देना प्रारम्भ किया?

तो	ता	न	सु	द्रा	आ	चा	र्य	व	ज्र	स्वा	मी	घी	सा	ज्र	हं
व	म	न्ति	से	न	भ	म	हा	वी	र	स्वा	मी	ल	व	त्र	त
उ	दे	हा	य	ज्र	मि	सु	तु	म्ब	व	न	सु	क	क्षे	क्षि	ती
पा	धा	क	वि	म	व	ऋ	ष	भ	दे	व	ल	त	र	स	आ
ध्या	त	र	भ	दे	द	रो	ह	गु	प्त	ना	र	र्य	ता	दे	र्चा
य	की	क्ष	सा	जृं	ह	ऐ	रा	व	त	भ	आ	सी	मा	व	र्य
मा	क्षे	क	णी	जी	स	न्त	ति	वि	ही	नो	सु	नौ	न	कु	ही
न	त्र	क्मि	थ	पु	मा	आ	म	या	ल	आ	वि	र	व	रु	रा
मु	रु	ना	रु	सो	च	र्य	ल्ली	प	व	चा	गौ	क्र	सु	र्ष	मु
नि	थु	षो	द्र	धि	न्द	भ	भ	नी	ण	र्य	त	मृ	मा	न्द	नि
कुं	त्त	रु	म	द	न	द्र	ग	य	स	श्री	म	गा	कौ	दि	री
म	ता	ल	ल	लो	बा	गु	व	सं	मु	गु	स्वा	व	शि	श	त्य
मा	नी	ला	श	का	ला	प्त	ती	घ	द्र	प्त	मी	ती	न	वा	ल्या

'ज' अक्षर से प्रारम्भ शब्द द्वारा रिक्त स्थान की पूर्ति करें:–

16. यतिसमूह का नाम ही....... द्वारा मत्थेण रख दिया गया।

17. इस...... मामले को निर्णय के लिए राजा के समक्ष रखा।

18. समस्त.......में उसके साथ वाद करने वाला कोई प्रतिवादी नहीं है।

19. सूर्य की प्रखर किरणें मुनि को आग की तरह.....लगी।

20. सुनन्दा की सखियों ने बड़े हर्षोल्लास से पुत्र का .... मनाया।
21. ओ मेरे मन को ......डालने वाले पाषाण हृदय मूर्ख वंचक!
22. शीतल ...... आदि के प्रयोग से पुनः लोहगोलक अग्निरहित हो जाता है।
23. ठीक उसी समय आर्य सिंहगिरि .... से लौटे।
24. आर्य रथ से ...... शाखा के प्रगट होने का उल्लेख उपलब्ध होता है।
25. ईरान की .... शकों की दासता से मुक्त होने के लिए छटपटाने लगी।

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (22) का परिणाम

जिनवाणी जनवरी, 2012 में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर 228 व्यक्तियों से प्राप्त हुए। 25 अंक प्राप्तकर्ता विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है।

प्रथम पुरस्कार- प्रिंयका चौपड़ा-इचलकरंजी

द्वितीय पुरस्कार- कमला मोदी-जोधपुर

तृतीय पुरस्कार- जौहरीमल छाजेड़-जोधपुर

सान्त्वना पुरस्कार-

1. निर्मला सुराणा-बीकानेर
2. संगीता अलिझाड़-जलगांव
3. विद्या संघवी-बदनवार
4. प्रकाशचन्द जैन-हैदराबाद
5. राजेश जैन-सवाईमाधोपुर

अन्य 25 अंक प्राप्तकर्ता-Abha Jain-Alwar, Akhilesh Jain-Jodhpur, Anil Kumar Jain-Kota, Anita Munote-Ichalkaranji, Anu Jain-Hoshiarpur, Anurag Surana-Ajmer, Aruna Jain-Hoshiarpur, Babita M Bafna-Jalgaon, Babula Jain-Jaipur, Basanta Sanklecha-Nardana Dhuliya, Bhagwan Raj-Pali, Bhagyawati Tater-Jodhpur, Bharti Surpuria-Ichalkaranji, Bhavana Bhansali-Dondilohara, Bhikamchand Kothari-Chennai, Chameli Jain-Dondilohara, Chandanmal Palrecha-Jodhpur, Chandni Jain-Indore, Chandra Bothra R-Chennai, Chandrakala Ranka-Bhadgaon, Chetna B.Bothra-Mumbai, Chinmay Jain-Dondilohara, Chirag Jain-Gangapur City, Deepmala Singhvi-Pali, Devendra nath Modi-Jodhpur, Dharmesh Punamia-Pali, Divya Daga-Jaipur, G C Kothari-Ajmer, Gunmala Jain-Chittorgarh, Hajarimal Jain-Dondilohara, Hansraj Jain-Jaipur, Heera Kamavat-Ahamadnagar, Hema Bagmar-Secundrabad, Hemlatha Jain-Beawar, Hemlatha Kherada-Jalgaon, Indu Jain-Mumbai, Jagdish prasad Jain-Kota, Javer Narendra Shah -Belgaum, Jaya Bhandari-Beawar, Jayamala Kankaria-Pali, Jayashri Chhoriya-Malegaon, Joharimal Chajjer-Jodhpur, Jyoti Jain-Baran, Kalpana Dhakad-Gurgaon, Kalpesh Dhariwal-Pali, Kamal Jain-Jind (H.R.), Kamala Chordia-Jaipur, Kamala Modi-Jodhpur, Kamala Singhvi-Jaipur, Kamala Surana-Jodhpur, Kamlesh Galada-Ajmer, Kanak Jain-Delhi, Kanchan

Lodha-Nasik, Kanhaiyalal Jain-Bhilwara, Kiran Jain-Hoshiarpur, Kiran Kothari-Jaipur, Kiran Kumbhat-Jodhpur, Komal Kothari-Baroda, Kuntal Jain-Jaipur, Kusum Punamia-Ichalkaranji, Kusum Sinhvi-Jodhpur, lalitha Guliya-Hyderabad, Laxmichand Chajjer-Balotra, Madanlal Sancheti, Madhubala Bohra-Ichalkaranji, Mamta Jain-Gangapur City, Manila Parakh-Jaipur, Manju Bhandari-Beawar, Manju Jain-Mumbai, Manju Kastiya-Kolkatta, Manjula Jain-Mumbai, Manjulatha Jamad-Jaipur, Maya Aliyar-Secundrabad, Meena Bohra-Mumbai, Monali Pipada-Ichalkaranji, Nandlalji Gugde-Ichalkaranji, Narendra Bumb-Mumbai, Nathmal Kothari-Balod, Neelam Chipad-Jaipur, Neelam Jain-Gurgaon, Neelima Chopda-Ichalkaranji, Neetu Golechha-Secundrabad, Nemchand Bafna-Jodhpur, Nirmala Kothari-Jaipur, Nutan Bhandari-Kolhapur, Padamchand Agarwal-Jaipur, Padma Bohra R-Raichur, Parasmal Bagmar-Pachpadra, Patram Jain-Jind (H.R.), Pista Golechha-Jaipur, Pooja Nitin Bohra-Kolhapur, Poonam Jain-Faridkot, Prakash Bai Bhurawat-Bhandara, Pramila Bohra-Jaitaran(Raj.), Pramila Kothari-Jodhpur, Pramila Mehta-Pune, Pramila Mehta-Bangalore, Prasan Kothari-Jodhpur, Prasanna Gang-Mumbai, Preeti Khincha-Jaipur, Prem Jain-Alwar, Premlata Sand-Pali, Premlatha Lodha-Jaipur, Priyanka Chopda-Ichalkaranji, Pushpa Jain-Jaipur, Pushpa Kankariya-Raichur, Pushpa Navlakha-Jaipur, Pushpa Pincha-Egatpuri, Rajendra kumar Chopda-Jabalpur, Rakhi Jain-Dooni, Ratanchand Mehta-Jodhpur, Reema Jain-Ludhiana, Rekha Kothari-Ajmer, Rikhab raj Bohra-Delhi, Rishabh Jain-Sumerganj Mandi, Sagarmal Nahar-Chittorgarh, Sangeeta Baid-Chennai, Sangita Singhvi-Nasik, Sarala Chajjed-Bhusaval, Sarala Golechha-Beawar, Sarita Babel-Ichalkaranji, Sarla Kankaria-Jalgaon, Saroj Nahar-Delhi, Sashikala Lunawat-Nasik, Savarna Bohra-Kolhapur, Seema Dhing-Udaipur, Shakuntala Bohra-Secundrabad, Shanta Pitaliya-Amravati, Shilpa Surana-Ajmer, Shobha Nahar-Secundrabad, Siddhi Bafna-Jodhpur, Smita Mulhiyan-Ichalkaranji, Smt Mohan Lodha-Ajmer, Smt Rajendramalji Mutha-Amravati, Subhash Dhariwal-Bhayander, Sudha Bhansali-Jodhpur, Sudha Daga-Bikaner, Sumitra Nandawat-Bangalore, Sunanya Gelra-Nagaur, Sunita Dusal-Jaipur, Sunita Singhvi-Chennai, Sunita Tater-Jodhpur, Suraj Runwal-Dhule, Suresh Kumar Shand-Pali, Sureshchand Jain-Kherli, Sushil Ranka-Jalgaon, Sushila Bhandari-Bangalore, Sushila Hirawat-Jaipur, Sushila Runwal-Egatpuri, Sushila S Surana-Nasik, Sushila Tater-Bhilwara, Sweta Jain-Dooni, Tara Bafna-Chennai, Trupti Bora-Ichalkaranji, Ugam Doshi-Secundrabad, Usha Lunawat-Ajmer, Usha. G. Surana-Jaipur, Vandana Punamia-Pali, Varsha Dosi-Merta city, Vijaya devi Bagmar-Gajendra Gadh, Vijaylakshmi-Ajmer, Vijaylakshmi Mohnot-Jaipur, Vikas Bumb-Mumbai, Vimala Bai Khivsara-Dhulia, Vimala Bohra-Jaipur, Vimala Mehta-Jodhpur, Yugal Rankaa-Ahmedabad.

24 अंक प्राप्तकर्ता– Abhilasha Hirawat-Mumbai, Aditya Jain-Nagpur, Asha Doshi-Jaipur, Balwant singh Chordia-Jhalara Patan, Bhawika M Shah-Belgaum, Chanchal Golechha-Jaipur, Chandra Munot-Mumbai, Chandrakala Mehta-Jaipur, Devilal Bhanavat-Udaipur, Dr Padamchand Munot-Jaipur, Hemraj Surana-Jaipur, Kamala Devi Satia-Ajmer, Madanlal Jain-Gajendragad, Meena Bai Nahar-Ichalkaranji, Munnalal Bhandari-Jodhpur, Navratanmal Chanaria-Ajmer, Nirmala Bohra-Ichalkaranji, Nirmala Gundecha-Ichalkaranji, Nirmala Hirawat-Jaipur, Nirmala Surana-Bikaner, Nita Kataria-Dodballapur, Prakashchand Jain-Hyderabad, R T Jain-Bhusaval, Rajendra Jain-Bhusaval, Rajesh Jain-Sawai Madhopur, Ranulal Kochar-Nasik, Ratan Karnavat-Jaipur, Rupa Jain-Sawai Madhopur, Sangeeta Chajjed-Jalgaon, Sangita Aliyad-Jalgaon, Smt Milap Lunawat-Ahmedabad, Smt Siromani Jain-Shajapur, Suganchand Chajjed-Jodhpur, Sunita Doshi-Beawar, Urmila Mehta-Jaipur, Vidhya Sanghvi-Badnavar (Dhar), Vimal Kochar-Nasik.

23 एवं उससे कम अंक प्राप्तकर्ता– Anjana-Dewas, Basanti Bhalawara-Dhulia, Krishna Agarwal-Jaipur, Lalita Surana-Solapur, Leena Jain-Kothekhazan Khend, Mahendra Bafna-Nasik, Manju Jain-Hindon City, Meena Chordia-Chennai, Neelam Jain-Ajmer, Pramila Mehta-Ajmer, Sadhana Gugale-Ichalkaranji, Shashikala Sukhlecha-Bangalore, Shobha Kothari-Dhule, Sushila Begani-Bikaner, Sushma Dhariwal-Jaipur, Tilak Manjari Mehta-Hospet, Alka Jain-Bhilwara, Kewalraj Mehta-Jodhpur, Ugma Devi Dugar-Bangalore, Ghevarchand Chajed-Bellary, Urmila Kankaria-Chennai, Manju Kataria-Bhilwara, Paras Kataria-Bhilwara, Kiran Tated-Dewas.

74 वें जन्म–दिवस पर

आचार्य हीरा को नमन

श्री नमन मेहता

आ– आपका जन्म शुभ पीपाड़ में, सींचा जिसे जयमल से हस्ती ने।
माँ मोहिनी की कुक्षि से, मोती गाँधी कुल की बस्ती में।।

चा– चाहा आपने गुरु हस्ती को, बालवय हो युवावय।
आज के दिन इस धरा पर पाया जन्म, साधने को अपना साध्य।।

र्य– आर्यभूमि के ओ वीर, शुद्ध ज्ञान क्रिया पालक तुम।
जिनशासन के सूर्य, रत्नसंघ के नायक तुम।।

श्री– श्रीगणेश हुआ पीपाड़ में, हस्ती साथ निभाया निमाज में।
जोधपुर में जुड़ा इतिहास, वीरशासन के ताज में।।

ही– हीरा गुरु ने विचरा, राजस्थान, एम.पी., गुजरात।
दिल्ली से तमिलनाडु तक, धर्म, ज्ञान, क्रिया के साथ।।

रा– रात्रि–भोजन त्याग की, पहल से की एक नई शुरुआत।
सामायिक–स्वाध्याय फैलाया, बनते–बनते बन गई बात।।

चन्द्र– चन्द्र सम शीतलताधारी, सूरज सा दिखता तेज योग।
ग्रहों सा है सुन्दर विचरण, ज्ञान–क्रिया करते तज भोग।।

जी– जीवन को तुमने चमकाया, आदि से लेकर अन्त तक।
पूरब घूमे पश्चिम घूमे, उत्तर से लेकर दक्षिण तक।।

म.– महान् कार्य धर्म–उद्योत का, हर क्षेत्र–दिशा में किया आपने।
उपाध्याय मान साध्वी मैना संग, शासन का गौरव बढ़ाया आपने।।

सा.– सार्थक किया है मानव जीवन, लेकर प्रव्रज्या सुखकार।
अपूर्व की है धर्म प्रभावना, नमन शतशः धरती के लाल।।

–सुपुत्र श्री सुमतिचन्द मेहता, पीपाड़, जिला–जोधपुर (राज.)

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड का परीक्षा परिणाम घोषित

अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा 15 जनवरी 2012 को आयोजित जैनागम स्तोक वारिधि परीक्षा का परिणाम घोषित कर दिया गया है। उत्तीर्ण परीक्षार्थियों के नामांक (रोल नं.) एवं अस्थाई वरीयता सूची प्रकाशित की जा रही है। जिन्होंने दोनों प्रश्न-पत्रों में मिलाकर सर्वाधिक अंक प्राप्त किये है, उन्हें वरीयता सूची में सम्मिलित किया गया है। उत्तीर्ण परीक्षार्थियों के रोल नं. प्रकाशन में यद्यपि सावधानी रखी गई है, तथापि सन्देह होने पर बोर्ड कार्यालय की सूचना को ही प्रमाण माना जाए।

यदि कोई परीक्षार्थी पुनर्मूल्यांकन कराना चाहे तो 25 रूपये का शुल्क M.O. द्वारा शिक्षण बोर्ड कार्यालय में दिनांक 25 मार्च 2012 तक भिजवा सकते हैं। विलम्ब से प्राप्त आवेदन-पत्र स्वीकार नहीं किये जायेंगे।

अस्थायी वरीयता सूची

विद्यार्थी का नाम	निवास स्थान	प्रथम प्रश्न-पत्र	द्वितीय प्रश्न-पत्र	कुल योग	स्थान
कुमकुम त्रिलोकचन्द जैन	महावीरनगर (स.मा.)	99.75	99.50	199.25	प्रथम
प्रभा नरेन्द्र मोहन जैन	बजरिया (स.मा.)	99.75	99.00	198.75	द्वितीय
अरूणा गौतम सिंघी	नागपुर	98.50	99.75	198.25	तृतीय

उत्तीर्ण परीक्षार्थी

ग्रुप A

(केवल प्रथम प्रश्न-पत्र देने वालों में से उत्तीर्ण परीक्षार्थी)

3, 39, 78, 108, 127, 182, 197, 224, 226, 227, 231, 232, 233, 321, 347, 380, 401, 404, 406, 422, 444, 447, 453, 491, 496, 511, 565, 567, 609, 610, 611, 615, 616, 617, 620, 621, 622, 624, 625, 626, 627, 635, 659, 661, 680, 687, 693, 695, 697, 698, 743, 785, 788, 790, 796, 798, 802, 803, 864, 865, 979, 998, 1001, 1003, 1042, 1045, 1046, 1047, 1053, 1054, 1072, 1078, 1113, 1127, 1131, 1158, 1159, 1160, 1161, 1162, 1165, 1176, 1186, 1191, 1195, 1207, 1211, 1212, 1214, 1215, 1227, 1249, 1250, 1255, 1259, 1262, 1263, 1264, 1267, 1270, 1274, 1281, 1283, 1284, 1286, 1287, 1302, 1306, 1308, 1311, 1318, 1320, 1322, 1330, 1341, 1354, 1411, 1412, 1425, 1429, 1431, 1433, 1469, 1485, 1487, 1488, 1490, 1496, 1497, 1499, 1502, 1504, 1507, 1508, 1512, 1517, 1518, 1519, 1562, 1563, 1588, 1589, 1591, 1593, 1594, 1595, 1596, 1597, 1598, 1599, 1600, 1602, 1654, 1659, 1660, 1664, 1682, 1693, 1708, 1712, 1713, 1715, 1774, 1782, 1785, 1790, 1796, 1800, 1802, 1804, 1805, 1808, 1811, 1812, 1814, 1815, 1816, 1817, 1821, 1822, 1823, 1828, 1829, 1832, 1833, 1834, 1835, 1841, 1842, 1843, 1905, 1909, 1938, 1940, 1988, 1989, 2017, 2021, 2028, 2041, 2042, 2061, 2063, 2065, 2068, 2069, 2071, 2110, 2182, 2188, 2193, 2200, 2201, 2257, 2277, 2280, 2282, 2284, 2311, 2312, 2313, 2336, 2369, 2391, 2392, 2398, 2438, 2441, 2446, 2458 (Total Student : **230**)

(केवल द्वितीय प्रश्न-पत्र देने वालों में से उत्तीर्ण परीक्षार्थी)

213, 303, 598, 947, 1139, 1225, 2046, 2322, 2323, 2353, 2365 (Total Student : **11**)

(प्रथम एवं द्वितीय दोनों प्रश्न-पत्र देने वालों में से उत्तीर्ण परीक्षार्थी)

केवल प्रथम प्रश्न-पत्र में उत्तीर्ण- 60, 169, 170, 171, 210, 225, 228, 285, 331, 372, 414, 460, 485, 487, 504, 577, 579, 650, 725, 827, 830, 831, 837, 856, 858, 873, 874, 877, 878, 879, 943, 1005, 1014, 1031, 1034, 1172, 1173, 1185, 1309, 1348, 1391, 1450, 1457, 1458, 1536, 1537, 1543, 1544, 1585, 1586, 1668, 1683, 1689, 1741, 1784, 1818, 1862, 1880, 2057, 2148, 2160, 2166, 2170, 2172, 2173, 2177, 2179, 2180, 2181, 2278, 2320,2337, 2411, 2419, 2421

(Total Student : **75**)

केवल द्वितीय प्रश्न-पत्र में उत्तीर्ण- 595, 933, 939, 1022, 1119, 1171, 1246, 1371, 1377, 1459, 1501, 1656, 1937, 1969, 2230, 2333, 2430

(Total Student: **17**)

प्रथम व द्वितीय दोनों प्रश्न-पत्रों में उत्तीर्ण- 1, 2, 5, 6, 7, 10, 12, 13, 15, 18, 20, 21, 22, 23, 24, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31, 33, 34, 35, 37, 41, 43, 45, 46, 49, 50, 51, 52, 55, 57, 59, 68, 71, 72, 73, 75, 76, 77, 79, 80, 81, 82, 83, 85, 86, 87, 93, 94, 96, 113, 114, 116, 117, 121, 125, 126, 129, 130, 131, 133, 134, 137, 138, 139, 141, 151, 152, 153, 154, 155, 156, 157, 158, 159, 160, 163, 165, 167, 168, 176, 177, 178, 179, 180, 181, 183, 184, 185, 188, 190, 191, 201, 202, 204, 206, 207, 215, 218, 221, 236, 239, 242, 243, 244, 246, 248, 249, 250, 251, 252, 253, 256, 257, 259, 260, 261, 262, 265, 268, 269, 273, 275, 276, 282, 288, 294, 296, 297, 299, 304, 309, 312, 313, 328, 336, 337, 342, 344, 345, 348, 349, 352, 356, 357, 358, 360, 362, 363, 365, 366, 368, 369, 370, 373, 374, 376, 377, 382, 383, 386, 387, 389, 390, 392, 393, 396, 397, 398, 399, 400, 402, 403, 405, 407, 409, 410, 411, 412, 413, 415, 416, 417, 418, 420, 421, 423, 424, 425, 426, 427, 428, 429, 430, 431, 432, 433, 434, 435, 436, 437, 438, 442, 443, 445, 449, 450, 455, 461, 462, 463, 464, 471, 472, 473, 474, 475, 477, 478, 479, **480**, 481, 482, 483, 489, 493, 494, 495, 503, 505, 506, 508, 510, 513, 515, 516, 517, 518, 521, 526, 530, 531, 532, 533, 534, 535, 537, 538, 540, 543, 545, 547, 557, 558, 559, 568, 569, 570, 574, 575, 576, 580, 581, 582, 583, 584, 585, 586, 587, 588, 589, 590, 591, 592, 593, 594, 601, 602, 603, 604, 605, 612, 619, 629, 632, 633, 634, 636, 637, 638, 639, 640, 641, 642, 643, 645, 665, 667, 668, 669, 670, 671, 674, 675, 677, 679, 681, 682, 683, 684, 685, 686, 696, 699, 706, 707, 708, 709, 710, 711, 712, 713, 714, 715, 720, 722, 723, 724, 727, 728, 729, 731, 734, 735, 736, 737, 748, 750, 752, 754, 759, 760, 761, 764, 765, 766, 775, 778, **780**, 781, 782, 783, 784, 786, 789, 792, 793, 794, 795, 797, 799, 800, 801, 805, 806, 807, 809, 810, 813, 814, 815, 817, 819, 822, 823, 824, 825, 826, 828, 829, 832, 834, 836, 838, 839, 840, 842, 843, 845, 846, 847, 848, 859, 860, 861, 863, 866, 867, 868, 869, 875, 880, 885, 888, 889, 891, 894, 896, 907, 912, 913, 914, 915, 917, 918, 920, 922, 924, 926, 927, 928, 929, 930, 932, 934, 937, 938, 940, 944, 946, 948, 950, 951, 953, 954, 955, 956, 957, 958, 959, 961, 962, 963, 965, 966, 969, 970, 973, 974, 975, 976, 977, 978, 980, 981, 982, 983, 985, 986, 987, 988, 989, 991, 992, 993, 996, 1004, 1010, 1011, 1015, 1016, 1017, 1018, 1019, 1020, 1021, 1025, 1026, 1032, 1035, 1067, 1073, 1075, 1076, 1077, 1079, 1080, 1082, 1085, 1086, 1089, 1092, 1094, 1095, 1099, 1100, 1101, 1102, 1103, 1104, 1107, 1108, 1109, 1112, 1115, 1117, 1123, 1124, 1125, 1126, 1129, 1130, 1137, 1138, 1141, 1142, 1143, 1144, 1146, 1148, 1150, 1151, 1152, 1153, 1167, 1168, 1170, 1181, 1182, 1183, 1184, 1189, 1190, 1192, 1194, 1196, 1198, 1201, 1202, 1205, 1206, 1208, 1209, 1210, 1213, 1218, 1228, 1254, 1260, 1273, 1275, 1277, 1278, 1279, 1282, 1290, 1292, 1295, 1297, 1303, 1310, 1313, 1316, 1317, 1334, 1336, 1338, 1340, 1342, 1344, 1346, 1347, 1349, 1350, 1351, 1352, 1353, 1355, 1356, 1357, 1358, 1359, 1360, 1362, 1363, 1364, 1365, 1366, 1367, 1368, 1369, 1370, 1372, 1373, 1375, 1376, 1378, 1379, 1382, 1383, 1384, 1389, 1392, 1399, 1401, 1402, 1403, 1404, 1405, 1407, 1420, 1426, 1434, 1435, 1436, 1438, 1439, 1440, 1446, 1448, 1452, 1453, 1454, 1455, 1456, 1461, 1462, 1463, 1464, 1468, 1471, 1472, 1473, 1475, 1476, 1478, 1479, 1480, 1481, 1482, 1483, 1484, 1491, 1492, 1493, 1494, 1495, 1498, 1500, 1506, 1520, 1521, 1523, 1524, 1525, 1527, 1530, 1531, 1532, 1533, 1534, 1535, 1539, 1540, 1541, 1542, 1545, 1546, 1548, 1549, 1550, 1551, 1552, 1553, 1554, 1555, 1556, 1557, 1558, 1559, 1560, 1564, 1565, 1566, 1568, 1570, 1574, 1575, 1576, 1577, 1578, 1579, 1580, 1582, 1583, 1642, 1643, 1644, 1645, 1649, 1652, 1653, 1661, 1662, 1669, 1671, 1675, 1676, 1678, 1680, 1684, 1685, 1687, 1691, 1694, 1695, 1703, 1705, 1706, 1707, 1709, 1710, 1711, 1714, 1716, 1722, 1723, 1734, 1735, 1739, 1740, 1743, 1746, 1747, 1754, 1755, 1756, 1757, 1761, 1762, 1763, 1764, 1767, 1768, 1769, 1770, 1771, 1772, 1773, 1781, 1783, 1789, 1791, 1792, 1793, 1801, 1803, 1809, 1810, 1813, 1824, 1825, 1827, 1830, 1831, 1838, 1847, 1856, 1857, 1861, 1870, 1874, 1876, 1879, 1881, 1893, 1901, 1907, 1911, 1914, 1946, 1961, 1963, 1990, 1991, 1992, 1993, 1994, 1995, 1997, 1998, 2001, 2002, 2007, 2008, 2009, 2012, 2014, 2015, 2016, 2018, 2019, 2020, 2025, 2026, **2035**, 2036, 2039, 2040, 2043, 2044, 2045, 2047, 2058, 2059, 2060, 2062, 2064, 2067,

2072, 2073, 2074, 2075, 2077, 2078, 2084, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2106, 2108, 2111, 2112, 2114, 2115, 2116, 2120, 2121, 2124, 2126, 2127, 2131, 2132, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2147, 2149, 2150, 2151, 2153, 2154, 2155, 2157, 2158, 2163, 2164, 2165, 2185, 2186, 2189, 2192, 2195, 2196, 2197, 2202, 2215, 2223, 2224, 2225, 2227, 2228, 2229, 2232, 2233, 2235, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2256, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2273, 2274, 2276, 2279, 2281, 2283, 2294, 2295, 2296, 2297, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2307, 2308, 2309, 2310, 2314, 2315, 2316, 2318, 2321, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2354, 2355, 2356, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2366, 2367, 2368, 2390, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2420, 2422, 2423, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2433, 2437, 2439, 2440, 2442, 2443, 2444, 2445, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2459, 2460 (Total Student : **1038**)

परिणाम रोका गया

2085, 2319, 2389, 2431, 2432.

आवेदक	उपस्थिति	उत्तीर्ण	उत्तीर्ण प्रतिशत	कुल केन्द्र
2457	1613	1279	79.26%	124

बोर्ड की आगामी परीक्षा 22 जुलाई, 2012 को

अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा कक्षा 1 से 12 तक की आगामी परीक्षा 22 जुलाई, 2012, रविवार को आयोजित की जायेगी। आवेदन-पत्र, सम्बन्धित कक्षा की पुस्तकें प्राप्ति हेतु तथा परीक्षा-सम्बन्धी अन्य जानकारी हेतु सम्पर्क करें:-

सुशीला बोहरा
संयोजक
9414133879

धर्मचन्द जैन
रजिस्ट्रार
9351589694

शिक्षण बोर्ड
कार्यालय
0291-2630490

सामायिक का महत्त्व

सौ. कमला सिंघवी

सामायिक व्रत का अर्थ है- प्राणिमात्र के प्रति समता का भाव। सामायिक का फल है- समभाव की प्राप्ति, सर्वत्र सुख-शान्ति का विस्तार, अशान्ति का नाश तथा कलह-प्रपंच का त्याग। यह उच्चकोटि की श्रेष्ठ साधना है। राग-द्वेष के प्रसंगों में विषम न होना अपने आत्म-स्वभाव में सम रहना ही सच्चा सामायिक व्रत है। जिस प्रकार पुष्प का सार गन्ध है, दुग्ध का सार घृत है एवं तिलों का सार तेल है, इसी प्रकार सामायिक-साधना का सार समभाव की प्राप्ति है। स्व-स्वरूप में रमण करना ही समता है। आत्मा का कषायों से अलग किया हुआ अपना शुद्ध-स्वरूप ही सामायिक का फल है। यह एक महती विशुद्ध साधना है और उस शुद्ध आत्म-स्वरूप को प्राप्त लेना ही सामायिक का फल है।

-अध्यापिका, जैन पाठशाला ज्ञानमंदिर, भडगांव (महा.)

आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की स्वर्ण जयन्ति दीक्षा वर्ष के उपलक्ष्य में

'हीरा प्रवचन-पीयूष' (भाग-1,2,3,4)

पर खुली पुस्तक प्रतियोगिता

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 50 वें दीक्षा-दिवस के उपलक्ष्य में श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जयपुर द्वारा धार्मिक ज्ञान में अभिवृद्धि हेतु सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर से प्रकाशित पुस्तक "हीरा प्रवचन पीयूष" भाग-1,2,3,4 पर खुली पुस्तक प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है जो कि दो खण्डों में आयोजित होगी। दोनों खण्डों की प्रतियोगिता पृथक् पृथक् दिनांक से प्रारम्भ होगी। इस प्रतियोगिता में सभी जैन-अजैन भाई-बहिन भाग ले सकते हैं। प्रतियोगी को दोनों खण्डों की परीक्षा देना अनिवार्य होगा।

प्रतियोगिता में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने पर प्रथम प्रवचन वारिधि सम्मान राशि 51,000/-(एक), द्वितीय प्रवचन कोविद सम्मान राशि 21,000/-(एक) , तृतीय प्रवचन विशारद सम्मान राशि 11,000/- (एक), सुपर टॉप टेन प्रवचन प्रभावक सम्मान राशि 1000/- (दस) व प्रोत्साहन प्रवचन वाचक सम्मान राशि 500/- (बीस) प्रदान किये जायेंगे।

प्रथम खण्ड की प्रश्न पुस्तिका वितरण तिथि 15 मार्च, 2012 (चैत्र कृष्णा 8 आचार्य-प्रवर का 74 वां जन्म-दिवस) से 14 मई, 2012 तक है तथा उत्तर पुस्तिका जमा कराने की अन्तिम तिथि 30 जून, 2012 रखी गयी है।

द्वितीय खण्ड की प्रश्न पुस्तिका वितरण तिथि 3 जुलाई, 2012 से 2 सितम्बर, 2012 तक है तथा उत्तर पुस्तिका जमा कराने की अन्तिम तिथि 3 अक्टूबर, 2012 रखी गयी है।

प्रश्न पुस्तिका मूल्य (प्रत्येक का) 30/-तथा डाक से मंगाने पर 40/- रखा गया है।

पुस्तक के प्रत्येक भाग का मूल्य 25/-निर्धारित है। जिसे डाक व्यय राशि 15/- सहित अग्रिम भिजवाकर निम्न स्थानों से प्राप्त किया जा सकता है।

प्रश्न पुस्तिका व पुस्तक प्राप्ति हेतु विशेष स्थान:-

(1) सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) फोन नं. 0141-2575997, 2570753

(2) श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोडों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) फोन नं. 0291-2624891

(3) श्रीमती रजनी जी जैन पत्नि श्री पदमचन्द जी जैन गोटेवाले, आर.पी. साड़ीज्, पुराना खण्डार रोड़, सवाई माधोपुर (राज.) फोन नं. 07462-233550, 09460230950

(4) Smt. Rupal R. Kankariya, 79, Audiappa Naicken Street, Sowcarpet, Chennai-600079, Ph. 044-42728067, 09789885148

(5) Shri M. Yaswantraj Ji Shankhala, 7-Wood Street, Shule, Ashok Nagar, Bangaluru-560025, Ph. 080-25543938, 09845019669

(6) श्रीमती शान्ता जी नाहर, ई-2, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-462001 (म.प्र.) फोन नं. 0755-2460965

(7) श्रीमती नयनतारा जी बाफणा, 'नयनतारा' सुभाष चौक, जलगांव-425001 (महा.) 0257-2225903

(8) श्री पारसमल जी चौरडिया, व्ही. पारस भैय्या, पुराने कैलाश टाकीज के सामने, उज्जैन (म.प्र) मो. 09827046567

(9) श्रीमती मंजू जी जैन, डी-19, काकड एस्टेट, पोद्दार हास्पिटल के सामने,वर्ली,सी-फेस रोड,मुम्बई-400018(महा.) फोन नं. 022-24223693, 09820388903

(10) श्री बसन्त जी जैन, ई-301, प्लेजेन्ट पार्क, मूवी टाइम सिनेमा के सामने, एवरशाइन नगर, मलाड (वेस्ट), मुम्बई (महा.), फोन नं. 022-28810702, 09820350814

उत्तर पुस्तिका जमा कराये जाने हेतु स्थान:-

(1) सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) फोन नं. 0141-2575997, 2570753

निवेदक:

(डॉ. मंजुला बम्ब) (उर्मिला बोथरा) (मीना गोलेछा) (पूर्णिमा लोढ़ा)

09314292229 09314501856 09314466039 09829019396

श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जयपुर

कार्यालय-501-502, रॉयल अबोर्ड,ए-7, विजय पथ

गुर्जर छात्रावास के सामने, तिलक नगर, जयपुर- 302004 (राज.)

समाचार-विविधा

विचरण-विहार एवं विहार दिशाएँ : एक नज़र में

(1 मार्च,2012)

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 11	: गोटन से विहार कर बिलावास, लाम्बा होते हुए 20 फरवरी को मेड़ता सिटी पधारे। अभी कुछ दिन यहाँ विराजने की संभावना है।
परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 5	: गंगाशहर से विहार कर देशनोक, नोखा, अलाय आदि क्षेत्रों को फरसते हुए बारानी पधारे हैं। गोगेलाव होते हुए नागौर की ओर विहार संभावित है।
साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा 4	: सामायिक-स्वाध्याय भवन, छठी गली, शक्तिनगर, जोधपुर विराज रहे हैं। उपनगरों में विचरण की संभावना है।
सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4	: भिनाय विराज रहे हैं। कुछ दिन यहाँ विराजने की सम्भावना है।
व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 9	: बागली में धर्म प्रभावना कर चापडा पधारे हैं। अग्र विहार इन्दौर की ओर संभावित है।
विदुषी महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4	: जोधपुर से विहार कर बुचेटी पधारे हैं। अग्र विहार गोटन की ओर चल रहा है।
विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5	: चौपड़ा भवन, सरदारपुरा जोधपुर विराज रहे हैं।
विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5	: नित्यानंद नगर विराज रहे हैं। जयपुर के उपनगरों को फरसने की संभावना

	है।
व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 7	: गोटन से विहार कर लाम्बा होते हुए मेड़ता सिटी पधारे। कुछ दिन यहां विराजने की संभावना है।
व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 3	: गोटन से विहार कर मेड़ता सिटी पधारे। कुछ दिन यहां विराजने की संभावना है।
सेवाभावी महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 9	: शक्तिनगर छठी गली स्थानक में सुख शांति पूर्वक विराज रहे हैं।
व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 7	: चेन्नई से विहार कर पेरंगल्लतुर पधारे हैं। चिंगलपेठ की ओर विहार सम्भावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा 4	: पल्लावरम से विहार कर आलन्दूर पधारे हैं। अग्र विहार किलपाक की ओर सम्भावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5	: शिरपुर से विहार कर होलनांथा होते हुए पींपरी पधारे हैं। जलगांव की ओर अग्र विहार संभावित है।
महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4	: हिण्डौन सिटी से विहार कर मध्यवर्ती क्षेत्रों को फरसते हुए गोपालगढ़, भरतपुर पधारे हैं।
महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4	: देवास से विहार कर सुभाषनगर-उज्जैन पधारे हैं। अग्र विहार कोटा की ओर सम्भावित है।
सेवाभावी महासती श्री शशिकला जी म.सा. आदि ठाणा 4	: मेड़ता सिटी से विहार कर बुचेटी पधारे हैं। अग्र विहार जोधपुर की ओर संभावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा 3	: रतन स्वाध्याय भवन, जयपुर विराज रहे हैं। जयपुर के उपनगरों को फरसने की सम्भावना है।

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर का मीरानगरी मेड़ता शहर में मंगलमय पदार्पण

महावीर जयन्ती अजमेर संघ को स्वीकृत

जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 6 नाडसर आदि ग्रामों से विचरण करते हुए 5 फरवरी 2012 को गोटन पधारे। पूज्य गुरुदेव के गोटन विराजने से गोटन श्रीसंघ को धर्माराधना का अपूर्व अवसर प्राप्त हुआ। गोटन में ही संत-सतीवृन्द का वीतराग ध्यान शिविर 6 से 15 फरवरी 2012 तक आयोजित किया गया। तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. के कुशल नेतृत्व में यह शिविर संचालित हुआ। संत-सतीवृन्द के साथ कुछ श्रावक-श्राविकाओं ने भी ध्यान शिविर का लाभ लिया। आचार्यप्रवर के गोटन प्रवास के समय अनेकानेक श्रीसंघ एवं श्रद्धालु भाई-बहिनों ने उपस्थित होकर सामायिक-स्वाध्याय एवं धर्माराधना का लाभ प्राप्त किया। बाहर गाँव से पधारने वाले दर्शनार्थी भाई-बहिनों की आतिथ्य सेवा का लाभ गोटन श्रीसंघ ने सोल्लास किया। गोटन से विहार कर आचार्यप्रवर बिलावास, लाम्बा होते हुए 19 फरवरी को कलरू पधारे। यहां पर सवाईमाधोपुर, अलीगढ़ रामपुरा एवं आलनपुर संघ के प्रतिनिधि दल चातुर्मास की विनतियां लेकर उपस्थित हुए। 20 फरवरी को आचार्यप्रवर का मेड़ता शहर में पदार्पण हुआ। उनके पूर्व सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. गोटन से विहार कर 16 फरवरी को मेड़तासिटी पधार गए थे। मेड़तासिटी में सन्त-सतीवृन्द को अध्ययन-अध्यापन कराने वाले विशिष्ट शिक्षकों का अध्यात्मिक प्रशिक्षण शिविर 17 से 25 फरवरी 2012 तक आयोजित किया गया। मेड़तासिटी में अनेकानेक श्रीसंघ एवं श्रद्धालु भाई-बहिनों ने उपस्थित होकर दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ प्राप्त किया। 26 फरवरी को जयपुर संघ ने मेड़ता में चातुर्मासार्थ भावभीनी विनति प्रस्तुत की। 28 फरवरी को अजमेर संघ की विनति को स्वीकार करते हुए आचार्यप्रवर ने महावीर जयन्ती पर साधु मर्यादा के अनुसार अजमेर पधारने की स्वीकृति प्रदान की है। आगत महानुभावों की आतिथ्य सेवा में मेड़ता श्रीसंघ आत्मीयता के साथ तत्पर है।

सन् 2012 के चातुर्मासार्थ निरन्तर विनतियाँ

परमाराध्य परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के यशस्वी जोधपुर चातुर्मासकाल से ही अनेकानेक ग्राम-नगरों की चातुर्मास हेतु

पुरजोर विनतियाँ चल रही हैं। फाल्गुनी चौमासी पक्खी पूर्व चातुर्मास घोषित नहीं किये जाते, इस परम्परा से विज्ञ श्री संघों ओर श्रद्धालुओं ने न केवल आचार्यप्रवर-उपाध्यायप्रवर अपितु महासतीवृन्द के चातुर्मास के लिए पुनः पुनः प्रार्थना पूज्य गुरुवर्य के पावन श्री चरणों में निरन्तर रखी है।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्र जी म.सा., परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के चातुर्मास के लिए जयपुर, सवाईमाधोपुर, कोसाना, पीपाड़शहर, भोपालगढ़, मेड़ता शहर, पाली-मारवाड़, दूदू, अजमेर जैसे श्रीसंघों की विनतियों के चलते दीर्घद्रष्टा आचार्यप्रवर ने अपने चातुर्मास की मारवाड़ क्षेत्र की विनतियों पर यह फरमाकर एक तरह से विराम लगा दिया कि इस बार मारवाड़ में चातुर्मास की संभावना नहीं है। आचार्यप्रवर ने समय रहते फाल्गुनी चौमासी मेड़ता और अक्षय तृतीया मदनगंज-किशनगढ़ घोषित कर आगे बढ़ने का संकेत पहले से ही कर दिया है, अतः जयपुर और सवाईमाधोपुर वाले चातुर्मास के लिए अपनी धर्म-ध्यान की रूपरेखा के साथ पूरा प्रयास कर रहे हैं। उपाध्यायप्रवर के चातुर्मास के लिए भी चातुर्मास-स्वीकृति तक प्रयास गतिमान रहने की संभावना है।

महासतीवृन्द के चातुर्मास के लिए उज्जैन, मूंदी, रामपुरा बाजार कोटा, विज्ञाननगर कोटा, कोयम्बटूर, तिरुवन्नामलई, विल्लपुरम्, कोप्पल, इरोड़, वडपल्ली, सेलम, कजगाँव, जायखेड़ा, बलकवाड़ा, धनोप, बांदनवाड़ा, आलनपुर, नदबई, अलीगढ़-रामपुरा, कंवलियास जैसे ग्राम-नगर प्रयासरत हैं।

अक्षय तृतीया हेतु मदनगंज के सम्पर्क सूत्र

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने अक्षय तृतीया (24 अप्रेल 2012) के पावन प्रसंग पर साधु मर्यादा के आगारों सहित मदनगंज-किशनगढ़ पधारने की स्वीकृति फरमायी है। तप एवं दान के इस विशिष्ट पर्व पर गुरु चरणों में नवीन व्रत-प्रत्याख्यान कर तथा तपस्वी साधकों की तप-साधना का अनुमोदन कर कर्म-निर्जरा का लाभ लिया जा सकता है। तपस्वी साधक अपने पहुँचने की सूचना निम्नांकित पते में से किसी एक पर अवश्य करें- 1. श्री सुरेन्द्र कुमार जी सकलेचा, अध्यक्ष- 99295-91180, 2. श्री भागचन्द जी कोचेटा, मंत्री-97992-99746, 3. श्री राजेन्द्र कुमार जी डांगी, ओसवाली मौहल्ला, मदनगंज-किशनगढ़, जिला-अजमेर-305801 (राज.) 01463-242086, 245523, 94140-12286, 4. जैन स्थानक भवन, ओसवाली

मौहल्ला, मदनगंज-किशनगढ़, जिला-अजमेर-305801 (राज.)

ध्यान-साधना शिविर 7 मई से मदनगंज में

भोपालगढ़ में 17 से 25 दिसम्बर 2011 तक आयोजित वीतराग ध्यान साधना शिविर में प्रतिभागियों के उत्साह एवं सफलता को देखकर एवं ध्यान-साधको की मांग को दृष्टिगत रखकर **मदनगंज** में द्वितीय वीतराग ध्यान-साधना शिविर का आयोजन **7 मई से 17 मई 2012** तक किया जा रहा है। जिनशासन गौरव परम श्रद्धेय **आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की सद्प्रेरणा** से प्रेरित होकर **सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल एवं वीतराग ध्यानसाधना केन्द्र के संयुक्त तत्त्वावधान में** आर.के.कम्युनिटी सेण्टर, मदनगंज-किशनगढ़ में **परम श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. के सान्निध्य में** आयोजित इस ध्यान शिविर में ग्रीष्मावकाश के कारण अधिक ध्यानार्थियों को लाभ मिल सकेगा। ध्यान शिविर में रुचि रखने वाले सभी भाई-बहिनों से विनम्र अनुरोध है कि उक्त ध्यान शिविर में पधारने की सूचना 15 दिन पूर्व निम्नलिखित पते पर दूरभाष से प्रेषित करने की कृपा करावें।-श्री राजेन्द्र कुमार डांगी, ओसवाली मोहल्ला, मदनगंज-किशनगढ़, जिला-अजमेर(राज.),फोनः01463-242086,245523, मो. 9414012286, श्रीमती शान्ता मोदी, संयोजक, वीतराग ध्यान साधना केन्द्र, फोनः 0141-2710077, मोबाइल- 9314470972

संक्षिप्त-समाचार

मुम्बई- आचार्य भगवन्त, सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक श्री हस्तीमल जी म.सा. का 102 वां जन्म-दिवस 8 जनवरी 2012 को मुम्बई के दहिसर जैन स्थानक में चम्पक गच्छ नायक तपस्वीराज पूज्य पारसमुनि जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में सामायिक दिवस के रूप में तप-त्याग प्रत्याख्यान के साथ मनाया गया। कार्यक्रम प्रातः 9.30 बजे से दोपहर 3 बजे पश्चात् तक चला लगभग 300-350 श्रावक श्राविकाओं की उपस्थिति रही। अधिकतर ने 3-3 एवं 5-5 सामायिक व्रत के साथ उपवास, एकासना के प्रत्याख्यान लिए। प्रवचन में तपस्वीराज ने आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के गुणों, उनके जीवन चारित्र एवं कृतित्व पर भावपूर्ण प्रकाश डालते हुए अपने आपको एवं सभी श्रावक-श्राविकाओं को सौभाग्यशाली बताया कि ऐसे महान् विरले सन्त का जन्म-

दिवस मनाने का सुअवसर मिल रहा है। श्री पारसमुनि जी म.सा. ने अपने जीवन में पूज्य गुरुदेव के दर्शनों के अविस्मरणीय अनुभव प्रवचन-सभा में बताये। अन्त में पारसमुनि जी म.सा. ने सभी से जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में आगम सीखने का आह्वान किया और अधिकतर ने आगम सीखने की स्वीकृति दी।

मुम्बई- पूज्य गुरुदेव आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की प्रेरणा को साकार रूप देते हुए युवक परिषद्, मुम्बई ने महीने के एक रविवार को सामूहिक सामायिक करने का आयोजन 04 जुलाई, 2010 से प्रारम्भ किया था। महीने के प्रथम रविवार को बारी-बारी से अलग-अलग क्षेत्रों में सामूहिक सामायिक का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें अनेक युवक भाग लेते हैं। अब तक सामूहिक सामायिक का आयोजन इन क्षेत्रों में हो चुका है- विले पारले, भायन्दर, मलाड, बोरीवली, बालकेश्वर, जे.सी.नगर (अंधेरी), एलफिन्स्टन हॉस्टल, वरली (कल्पतरू होराइजन), विक्रोली, गोरेगांव, कान्दीवली, सामूहिक सामायिक पिछले दो वर्षों से निरन्तर चल रही है। साथ ही आचार्य प्रवर की प्रेरणा से महीने के बाकी तीन रविवार को क्षेत्रिय सामायिक का आयोजन किया जाता है, जिसमें उस क्षेत्र के श्रावक-श्राविकाएँ एक नियत स्थान पर सामायिक के लिए एकत्र होते हैं। हर क्षेत्र में संख्या करीब 25 से 30 के बीच रहती है। निम्न क्षेत्रों में क्षेत्रीय सामायिक निरन्तर प्रत्येक रविवार को चल रही है- मलाड, बोरीवली, जे.बी. नगर (अंधेरी), वरली, एलफिन्सटन हॉस्टल, विले-पारले, थाना एवं पंचरत्न आपेरा हाउस। *-बसन्त जैन, प्रमुख, जैन रत्न युवक परिषद्, मुम्बई*

खेरली- श्री जैन रत्न युवक परिषद् शाखा, खेरली द्वारा 18 दिसम्बर, 2011 को संतोकबा दुर्लभ जी ब्लड बैंक, जयपुर के सहयोग से श्री पल्लीवाल जैन धर्मशाला में विशाल तृतीय रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर के उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि श्री बृजेश कुमार, मजिस्ट्रेट तथा विशिष्ट अतिथि श्री क्रांति मेहता, पूर्व प्रांतपाल रोटरी क्लब, अलवर एवं श्री अनिल जैन वरिष्ठ अनुभाग अधिकारी रेलवे, जयपुर थे। समारोह की अध्यक्षता समाजसेवी श्री रामबाबू जी जैन दांतिया ने की। शिविर में 300 यूनिट रक्तदान हुआ। युवक परिषद् के कार्यकर्ताओं ने भी रक्तदान किया। *-मनीष जैन*

जयपुर- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जयपुर द्वारा 19 फरवरी, 2012 को एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। सुबोध एम.बी.ए. इंस्टीट्यट के सभागार में आयोजित कार्यक्रम में पारिवारिक अशान्ति एवं सामाजिक विघटन की समस्याओं पर विचार-मंथन किया गया। ललित जी लोढ़ा ने कार्यशाला का

संचालन किया।

हैदराबाद- आचार्य हस्ती फाउण्डेशन, हैदराबाद द्वारा 15 जनवरी को आयोजित समारोह में 'स्वतंत्र वार्ता' के संपादक डॉ. राधेश्याम शुक्ल को द्वितीय 'आचार्य हस्ती सेवा सम्मान' प्रदान कर सम्मानित किया गया। यह सम्मान साहित्य, कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में समर्पित विशिष्ट सेवाओं के लिए प्रदान किया जाता है। इस सम्मान में माला, शॉल, प्रशस्ति-पत्र, साहित्य एवं 11 हजार रुपये की धनराशि प्रदान की जाती है। समारोह में अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री बुधमल जी बोहरा 'मुख्य अतिथि' थे। दक्षिण भारतीय हिंदी प्रचार सभा के अध्यक्ष डॉ. ऋषभदेव शर्मा एवं श्री व.स्था.जैन श्रावक संघ, हैदराबाद के अध्यक्ष श्री स्वरूपचंद जी कोठारी विशिष्ट अतिथि थे। कार्यक्रम का संचालन श्री श्रीपाल देशलहरा ने किया।

जयपुर-अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ की वेबसाइट www.jainsampadaksangh.org को नियमित अपडेट किया जा रहा है। इसमें एक कॉलम प्रेस रिलीज का भी रखा गया है, जिसमें समाज से प्राप्त ताजा समाचारों व लेख आदि को अपलोड किया जाता है। समाचार-पत्रों के संपादक प्रेस रिलीज को क्लिक करके प्रकाशन योग्य सामग्री नियमित प्राप्त कर सकते हैं। समाज के कार्यकर्ताओं से निवेदन है कि वे अपने प्रेस मेटर को अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ को भेज कर देश भर के समाचार-पत्रों में प्रचारित व प्रसारित कर सकते हैं। हमारा ई-मेल- info@jainsampadaksangh.org है।- अखिल बंसल, महामंत्री, अखिल भारतीय जैन पत्र संपादक संघ, 129, जादौन नगर बी, स्टेशन रोड़, दुर्गापुरा, जयपुर-302018 (राज.)

पुणे- भारतीय जैन संघटना का राष्ट्रीय अधिवेशन 5 व 6 मई, 2012 को पुणे में सम्पन्न होगा। आपसे विनम्र निवेदन है कि व्यवस्था हेतु अपनी यात्रा का विवरण निम्न व्यक्तियों को देने की कृपा करें- (1) श्री शशिकांत मुणोत- 09420477052, ईमेल- 1. shashimunot@gmail.com, 2. smunot@bjsindia.org, (2) डॉ. सुनील भूतड़ा-09421018554, ईमेल- 1.drsunilbhutada@gmail.com, 2. sbhutada@bjsindia.org

इन्दौर- भारत के 229 सिद्धक्षेत्रों, निर्वाण भूमियों, कल्याणक क्षेत्रों, अतिशय क्षेत्रों, कला एवं इतिहास क्षेत्रों का संक्षिप्त परिचय, आवागमन के साधनों, आवास, भोजन एवं संचार सुविधाओं की विस्तृत जानकारी देने वाली दिगम्बर जैन तीर्थ निर्देशिका का नवीन संस्करण प्रकाशित हो चुका है। यह निर्देशिका 95

रु. के रियायती मूल्य पर इन्दौर कार्यालय के अतिरिक्त दिल्ली, मुम्बई, सोलापुर, भोपाल, श्री महावीर जी, तिजारा, हस्तिनापुर, कुण्डलपुर (नालन्दा), सिद्धवरकूट, खजुराहो आदि अनेक स्थानों पर उपलब्ध है। सम्पर्क सूत्र- श्री हसमुख जैन गाँधी, 211, देवधर कॉम्प्लेक्स, छावनी, इन्दौर-452001 (मध्यप्रदेश) फोनः-0731-2700109

विराट् नगर, नेपाल- आचार्य श्री रामेश की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री आदर्शप्रभा जी म.सा. की निश्रा में साध्वी गुञ्जन श्रीजी की बड़ी दीक्षा सम्पन्न हुई।

बधाई/चुनाव

जोधपुर- श्री सुमित भंसाली सुपुत्र श्री प्रमोद जी एवं श्रीमती कल्पनाजी भंसाली

(सुपौत्र श्री शान्तिलाल जी एवं श्रीमती कमला जी भंसाली) ने कॉमन प्रोफिसिएन्सी टेस्ट में 80 प्रतिशत अंक के साथ जोधपुर में चौथा स्थान प्राप्त किया है। सुमित वर्तमान में आई.आई.टी. (बी.एच.यू.) में अध्ययनरत है।

उदयपुर- श्रीमती चेतना मेनारिया ने ''उपाध्याय पुष्कर मुनि के साहित्य में प्रतिपादित समाज'' विषय पर डॉ. हुकमचन्द जैन, आचार्य, जैन विद्या एवं प्राकृत विभाग के निर्देशन में शोधकार्य पूर्ण किया। उन्हें मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर द्वारा पी.एच्.डी की उपाधि प्रदान की गई।

हिण्डौन सिटी- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, वर्धमान नगर, हिण्डौन सिटी के चुनाव में निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये- 1. श्री दिनेश चन्द जी जैन'भरतपुर वाले'-अध्यक्ष, 2. श्री श्रीयांस कुमार जैन 'कर्मपुरा वाले'-मंत्री, 3. श्री त्रिलोकचन्द जी जैन 'कंजौली वाले'- उपाध्यक्ष, 4. श्री पूरनचंद जी जैन 'शेरपुर वाले'- कोषाध्यक्ष।

चेन्नई- श्री एस.एस. जैन संघ, साहुकारपेठ की कार्यकारिणी सभा ने सर्व-सहमति से श्री जे. महावीरचन्द जी कोठारी को द्वितीय बार अध्यक्ष पद के लिए मनोनीत किया। अन्य पदाधिकारी हैं- श्री अनोपचंद जी भिड़क्चा और श्री माणकचंद जी खाबिया-उपाध्यक्ष, श्री मनोहरमल जी कोठारी-मंत्री, श्री हस्तीमल जी खटोड़-सहमंत्री, श्री सुरेशचन्द जी डुंगरवाल और श्री सुरेशचन्द जी कांकलीया-कोषाध्यक्ष।

दिल्ली- प्रो. रतन जैन को भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अन्तर्गत उच्च शिक्षा विभाग की भाषा समिति की गोलमेज में सम्मिलित किया गया है।

जोधपुर- प्रो. (डॉ.) सोहनराज तातेड़, पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान को सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, वेरावल (गुजरात) के छठे दीक्षान्त समारोह एवं अखिल भारतीय दर्शन परिषद् के 56 वें वार्षिक अधिवेशन के संयुक्त समारोह में 6 फरवरी 2012 को शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र में राष्ट्रीय सेवा के लिए महामहिम राज्यपाल, गुजरात सरकार के कर कमलों द्वारा सम्मानित किया गया।

सी.ए. उत्तीर्ण छात्र

ललित श्रीमाल

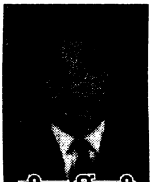
नीरज सिंघवी

जोधपुर- श्री ललित श्रीमाल सुपुत्र श्रीमती मोहिनी-स्व. श्री मदनलाल श्रीमाल (सुपौत्र स्व. श्रीमती फूलीदेवी-स्व.श्री प्रतापमल जी श्रीमाल)।

जोधपुर- श्री नीरज सिंघवी सुपुत्र श्रीमती सुमन-श्री महेन्द्र सा सिंघवी

श्रद्धाञ्जलि

जोधपुर- धर्मनिष्ठ, कर्तव्यनिष्ठ, संघनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती चम्पादेवी जी चौपड़ा धर्मपत्नी संघ-संरक्षक श्रावकरत्न श्री रावलचन्द जी चौपड़ा का 11 फरवरी, 2012 को संथारापूर्वक समाधिमरण हो गया। आपने तप चन्द्रिका महासती श्री विमलवती जी म.सा. के मुखारविन्द से प्रत्याख्यान कर संथारा ग्रहण किया। आपका जीवन सहज, सरल, शांतिमय था। प्रायः आप प्रतिवर्ष परिवार सहित गुरु भगवन्तों के दर्शनार्थ उपस्थित होती थीं। गुरु हस्ती के सामायिक-स्वाध्याय के उद्घोष का स्वयं पालन करती तथा पारिवारिकजनों को भी प्रेरणा करती थी। आपने पुत्र-पुत्रियों, पुत्रवधुओं व पोते-पोतियों को भी अच्छे धार्मिक संस्कार दिये। जिसके फलस्वरूप सम्पूर्ण चौपड़ा परिवार धार्मिक संस्कारों के साथ जीवन निर्माण रूप सामायिक-स्वाध्याय से जुड़ा हुआ है। संघ द्वारा संचालित सभी प्रवृत्तियों में आपका एवं आपके परिवार का सक्रिय सहयोग रहता है। आप संत-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहती थीं। आपके जीवन पर आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल

जी म.सा. का विशेष प्रभाव रहा। आप अपने पीछे धर्मनिष्ठ पतिदेव श्री रावलचन्द जी चौपड़ा के साथ पुत्र श्री भंवरलाल जी, स्वरूप जी, सतीश जी, चेतन जी का भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

जोधपुर- अनन्य गुरुभक्त संघ-सेवी, संत-सेवी वीरपिता श्रावकरत्न श्री

पारसमल जी लोढ़ा का 92 वर्ष की वय में 17 फरवरी, 2012 को संथारे के साथ स्वर्गगमन हो गया। आप श्रद्धानिष्ठ-धर्मनिष्ठ-कर्त्तव्यनिष्ठ श्रावक थे। आपकी आचार्य श्री हस्तीमल म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि संत-सतीवृन्द के प्रति अटूट श्रद्धा-भक्ति थी। आपका जीवन धार्मिक संस्कारों से पूरित था। सम्प्रति रत्नसंघ के ज्येष्ठ सन्तरत्न महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. के आप पिताश्री थे। आप प्रतिदिन सामायिक व्रत की आराधना करते थे। महामन्दिर में संत-सतियों के पदार्पण पर आप सेवा का पूरा लाभ लेते थे। आप संघ, समाज एवं धार्मिक कार्यों में सदैव समर्पित रहे। आप श्री ओसवाल समाज-महामंदिर के दो बार अध्यक्ष रह चके थे। आपका जीवन संघ व समाज के लिए प्रेरणादायी था। आपके दोनों सुपुत्रों श्री जतनराज जी एवं उम्मेदराज जी का सम्पूर्ण परिवार सामायिक-स्वाध्याय से जुड़ा हुआ है।

जोधपुर- धर्मनिष्ठ सुश्रावक गुरुभक्त श्री लालचन्द जी बाफना पुत्र स्व. श्री मिश्रीलाल जी बाफना का 75 वर्ष की उम्र में 28 जनवरी, 2012 को देहावसान हो गया। आप धर्मपरायण, हसमुंख रहने वाले व्यक्ति थे। आप धार्मिक कार्यों में सदा अग्रणी रहते थे। आप उपाध्यायप्रवर पूज्य श्री पुष्कर मुनि जी म.सा. तथा आचार्य श्री देवेन्द्रमुनि जी म.सा. के अनन्य भक्त थे तथा कई धार्मिक संस्थाओं से जुड़े हुए थे। आपने मरणोपरान्त नेत्रदान कर नेत्रहीनों को ज्योति प्रदान की।

जोधपुर- संत-सेवी, घोर तपस्विनी, श्रीमती विशनकंवर जी भंडारी धर्मपत्नी स्व.

श्री प्रेमराज जी भण्डारी का संथारापूर्वक पंडितमरण 88 वर्ष की आयु में 10 फरवरी 2012 को हो गया। आपने अपने जीवनकाल में 35 उपवास, मासखमण, 21 उपवास, आठ बार ग्यारह उपवास, वर्षीतप, लगभग प्रतिवर्ष अठाई आदि तपस्याएँ की। आपके जीवन-पर्यन्त हरी सब्जियों, जमीकंद एवं रात्रि भोजन का त्याग था। आप प्रतिदिन चार-पांच सामायिक एवं प्रतिक्रमण करती थीं। उनकी

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा, उपाध्याप्रवर एवं समस्त संत-सतीवृन्द के प्रति अनन्य श्रद्धा भक्ति थी। आप अपने पीछे पुत्र श्री मदनराज भंडारी, पौत्र श्री गौतमचन्द एवं राजीव का भरापूरा परिवार छोड़ कर गई हैं।

जोधपुर- सुश्राविका श्रीमती पुष्पा जी सुराणा धर्मपत्नी गुरुभक्त श्री सिद्धराज जी

सुराणा का 68 वर्ष की आयु में 13 फरवरी 2012 को प्रत्याख्यान पूर्वक स्वर्गप्रयाण हो गया। आपकी आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर एवं सन्त-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा थी। मरणोपरांत श्राविका के नेत्र दान किये गए। तप, धर्माराधना, स्वधर्मि-वात्सलय एवं आतिथ्य-सत्कार में सुराणा परिवार सदैव अग्रणी रहा है।

जयपुर- धर्माराधिका श्रीमती निशा जी मेहता धर्मपत्नी श्री भास्कर चटर्जी का आकस्मिक स्वर्गवास 08 फरवरी, 2012 को हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। आपका पीहरपक्ष रत्नसंघ के आचार्यों के प्रति श्रद्धावान है। श्री सुरेन्द्रराज जी मेहता की आप सुपुत्री थी।

सिरसा- सुश्रावक वयोवृद्ध धर्मनिष्ठ श्री राजेन्द्र कुमार जी जैन का 29 नवम्बर 2011 को 82 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप मिलनसार, दयालु एवं उदार प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। परिवार जनों द्वारा उनकी दोनों आखें भी मरणोपरान्त दान कर दी गईं।

पाली- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री सम्पतराज जी रेड का 80 वर्ष की आयु में 24

फरवरी, 2012 को देहावसान हो गया। आप नित्य सामायिक करते थे एवं कई नियमों का पालन करते थे। आप सहृदय, मिलनसार, उदार, निष्ठावान धार्मिक संस्कारों से ओतप्रोत थे। आप आचार्यप्रवर व उपाध्याप्रवर के परम भक्त थे।

बैंगलोर- डॉ. शम्भुचन्द जी सिंघवी सुपुत्र श्री शीतलचन्द जी सिंघवी का 31 जनवरी 2012 को स्वर्गवास हो गया। आप सरल स्वभावी थे। आप श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के सक्रिय कार्यकर्ता थे।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

4000/- मण्डल से प्रकाशित साहित्य की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

737 श्री भीनासर नागरिक परिषद् सार्वजनिक वाचनालय, भीनासर-बीकानेर

500/- जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

13328 श्री महावीर राज जी सुराणा, प्लॉट नं. 7, महावीर नगर, जोधपुर (राजस्थान)
13329 श्री प्रदीप जी पारख, मीरा रोड़ (ईस्ट), थाने, मुम्बई (महाराष्ट्र)
13330 सुश्री प्रिया जी संचेती, पोस्ट-हीरापुर, जिला-जलगाँव (महाराष्ट्र)
13331 श्री संजय कुमार जी ढढ्ढा, 1-त-12, जवाहर नगर, जयपुर (राजस्थान)
13332 श्री आशीष जी जैन, सदर पुलिस स्टेशन के सामने, गुड़गाँव (हरियाणा)
13333 श्री विकास जी जैन, फायर बिग्रेड स्टेशन के सामने, कोटा (राजस्थान)
13334 श्री लल्लूलाल जी जैन, 163, जवाहर मार्ग, इन्दौर (मध्यप्रदेश)
13335 Shri Satish Chand ji Jain, , Sikandara, Agra (UP)
13336 Shri Mukesh ji Jain, Ring Road, Surat (Gujarat)
13337 श्री निर्मल जी जैन, पोस्ट-चौथका बरवाडा, जिला-सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
13338 Shri Rajat ji Nagori, Motera, Ahmedabad (Gujarat)
13339 श्री सुधेन्द्र जी बाफणा, सी-216, विवेक विहार, फेस-1, दिल्ली
13340 श्री निर्भय जी जैन, टीचर्स कॉलोनी, केशवपुरा, कोटा (राजस्थान)
13341 श्री चन्द्रेश कुमार जी छाजेड़, 199, उषा नगर एक्सटेंशन, इन्दौर (मध्यप्रदेश)
13342 श्रीमती रेणुका जी जैन, 35, उषा नगर एक्सटेंशन, इन्दौर (मध्यप्रदेश)
13343 श्रीमती सुनीता जी बाफणा, 16/2, साउथ तुकोगंज, इन्दौर (मध्यप्रदेश)
13344 श्री दीपक जी जैन, आदिनाथ नगर, नई अनाज मंडी रोड़, सवाईमाधोपुर (राज.)
13345 Shri Jitendra ji Surana, Vardi, Baroda (Gujarat)
13346 Smt. Usha ji Modi, Malad West, Mumbai (M.H.)
13347 Smt. Kusum ji Jain, Kandivali East, Mumbai (M.H.)
13348 श्री गौतम चन्द जी कोठारी, खण्डेलवाल कॉलोनी, दुर्ग (छत्तीसगढ़)
13349 श्री ऋषभ जी कर्णावट, 3/153, जवाहर नगर, जयपुर (राजस्थान)
13350 श्री बाबूलाल जी जैन, 763, श्रीनाथपुरम्, सेक्टर-बी, कोटा (राजस्थान)
13351 Smt. Komal ji Khariwal, Secunderabad (A.P.)
13352 श्री दिनेश जी जैन (रांका), कन्नोद मिर्जी, जिला-सिहोर (मध्यप्रदेश)

जिनवाणी हेतु साभार-प्राप्त

5100/- श्री प्रकाशचन्द जी, शांतिलाल जी, महावीरचन्द जी लोढ़ा, नाड़सर, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के नाड़सर धरा पर पधारने व विराजने तथा पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. के 92वें दीक्षा दिवस का लाभ नाड़सर संघ को प्रदान करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

3200/- श्रीमती आयचुकी जी धर्मपत्नी स्व. सेठ श्री माणकचन्द जी लोढ़ा, नाड़सर,

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के नाड़सर पधारने पर सुपुत्र श्री प्रकाशचन्द जी के अठाई की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2101/- श्री गौतमचन्द जी जैन 'डी.एस.ओ.' एवं श्रीमती विमला जैन, जयपुर, अपने सुपुत्र आदित्य संग सौ. कां. नेहा सुपुत्री श्री अशोक कुमार जी जैन, छबड़ा-कोटा का शुभ विवाह 12 फरवरी 2012 को सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

2100/- श्रीमती अरुणा जी-संजीव जी एवं समस्त परिवार, होशियारपुर, सप्रेम भेंट।

2100/- श्री सुगनचन्द जी, कांतीलाल जी, महेन्द्र कुमार जी छल्लानी (असावरी वाले), चेन्नई, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा., श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा., सांसारिक ननिहाल पक्षीय श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा. प्रभृति सन्त, सतीवृन्द के असवारी की धरा पर पधारने एवं विराजने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री हस्तीमल जी, महेन्द्र कुमार जी, ललितकुमार जी, यशवन्त कुमार जी, ऋषभ कुमार जी, मनीष कुमार जी गोलेच्छा (गिरी वाले), ब्यावर, सौ.कां. स्वीटी सुपुत्री श्रीमती पुष्पा जी-महेन्द्र कुमार जी गोलेच्छा संग चि. पीयूष जी सुपुत्र श्रीमती चन्दू जी-प्रेमचन्द जी बोथरा-जोधपुर के साथ शुभविवाह सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री हस्तीमल जी, महेन्द्र कुमार जी, ललितकुमार जी, यशवन्त कुमार जी, ऋषभ कुमार जी, मनीष कुमार जी गोलेच्छा (गिरी वाले), ब्यावर, पूजनीया श्रीमती चूंकीकँवर जी धर्मपत्नी स्व. श्री माँगीलाल जी गोलेच्छा का पण्डित मरण होने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

2100/- श्री उम्मेदराज जी, दिनेशकुमार जी, अभयकुमार जी लोढ़ा, जोधपुर, पूजनीय श्रीमान पारसमल जी लोढ़ा के समाधिमरण एवं 21 फरवरी,2012 को सपरिवार मेड़ता सिटी में पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा., प्रभृति संत-सतीवृन्द के दर्शन लाभ के उपलक्ष्य में भेंट।

2100/- श्री हुक्मीचन्द जी, विकास कुमार जी रेड, पाली, अपने पिताजी श्री सम्पतराज जी रेड के स्वर्गगमन पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

2100/- श्री गौतमचन्द जी जैन 'डी.एस.ओ.' एवं श्रीमती विमला जैन, जयपुर, अपने नवविवाहित सुपुत्र श्री आदित्य जैन एवं पुत्रवधू नेहा के साथ आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं संत-सतीवृन्द के 25 फरवरी, 2012 को मेड़ता में दर्शन करने एवं नवदम्पती द्वारा आम्नाय ग्रहण करने के उपलक्ष्य में भेंट।

1111/- श्री विकास जी, निताशा जी मेहता, मानसरोवर-जयपुर, पूज्य पिताश्री श्री रोशनराज जी मेहता के सहायक लेखाधिकारी डाकलेखा, जयपुर के पद से दिनांक 31 जनवरी, 2012 को सेवानिवृत्ति होने एवं पूज्या महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन, वन्दन करने के उपलक्ष्य में सप्रेम

भेंट।

1101/- श्री रामदयाल जी, उम्मेदमल जी जैन (सर्राफ), बजरिया-सवाईमाधोपुर चि. कनिष्क जी सुपुत्र श्री नमोकार जी जैन संग सौ.कां. कृति (रीना) जी, सुपुत्री श्री धर्मचन्द जी जैन (बून्दी वाले), अलीगढ़ के शुभ-विवाह सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री एस. एस. जैन सभा, सिरसा, सुश्रावक श्री गजेन्द्र कुमार जी जैन का दिनांक 29 नवम्बर, 2011 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री प्रसन्नचन्द जी, सुभाषचन्द जी कोठारी (गोटन वाले), कालीकट-चेन्नई, श्री रतनलाल जी कोठारी को उनके सामाजिक व धार्मिक कार्यों में उल्लेखनीय योगदान के लिए हाल ही में आयोजित गोटन के नवनिर्मित स्थानक भवन के उद्घाटन के अवसर पर प्रवर्त्तक श्री रूपमुनि जी म.सा. द्वारा मारवाड़ रत्न की उपाधि से अलंकृत करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री लक्ष्मीचन्द जी जैन, मौहल्ला गोपालगढ़-भरतपुर, श्री मनीष कुमार जी जैन की नौकरी लगने के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्री सिद्धराज जी सुराणा, जोधपुर, अपनी धर्मपत्नी सुश्राविका श्रीमती पुष्पा जी सुराणा की पावन स्मृति में भेंट।

1100/- श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, पावटा, जोधपुर, साध्वीप्रमुखा, शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के 66वें दीक्षा-दिवस के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्री नवरतन जी-सुमन जी डागा, जोधपुर, अपनी सुपौत्री प्रियल (सुपुत्री श्री पुनीत-खुशबू डागा) के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1000/- श्री राजेन्द्र कुमार जी, राहुल जी जैन 'कचौरी वाले', गुलाब बाड़ी, कोटा, अपनी सुपुत्री सौ. कां. प्रियंका जैन का शुभ विवाह चि. मानव जैन के साथ 10 फरवरी, 2012 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

511/- श्री रमेशचन्द जी जैन, नवसारी (गुजरात), अपने सुपुत्र कुलदीप कुमार जैन की रिलायंस केमिकल इण्डस्ट्रिज लि., सेलवांज में नियुक्ति होने के उपलक्ष्य में।

501/- श्री अजीत कुमार जी, आदेश जी, विवेक जी भण्डारी, गाँधीवाडा-नागौर, श्रीमती पुष्पादेवी जी धर्मपत्नी स्व. श्री जेठमल जी भण्डारी का दिनांक 24 जनवरी, 2012 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

501/- श्री सौभागमल जी, हरकचन्द जी, हनुमानप्रसाद जी, महावीर प्रसाद जी, कपूरचन्द जी जैन, बिलोता वाले, पूज्य मातुश्री की पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्री सुभाष जी भण्डारी, जोधपुर, अपने सुपुत्र प्राणेश भण्डारी सुपौत्र स्व. श्री सुगनचन्द जी भण्डारी के सी.ए. एवं सी.एस. बनने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्रीमती सुमन-महेन्द्र जी सिंघवी, जोधपुर, अपने सुपुत्र श्री नीरज जी सिंघवी के सी.ए. उत्तीर्ण करने की खुशी में भेंट।

500/- श्रीमती नलिनी जी एवं सत्येन्द्र जी कुम्भट, पाली, एडवोकेट चि. मोहित कुमार जी सुपौत्र स्व. श्री आनन्दमल जी कुम्भट का शुभ विवाह 6 नवम्बर, 2011 को

सौ.कां. खुशबु के संग सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

500/- श्री जीतमल जी, नीरज कुमार जी जैन (एण्डवा वाले), सवाईमाधोपुर, चि. आशीष का शुभ-विवाह सौ.कां. सीमा जी सुपुत्री श्री पारसचन्द जी जैन-कुश्तला से 16 जनवरी 2012 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री महेश कुमार जी, विपुल कुमार जी मेहता, चेन्नई, परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के हरसोलाव में व शासनप्रभाविका, साध्वी-प्रमुखा विदुषी महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. व महासती श्री शांतिप्रभा जी म.सा. के जोधपुर में सपरिवार दर्शन, वन्दन करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री नेहनूलाल जी, जिनेन्द्र जी, डॉ. महेन्द्र जी, हितेन्द्र जी जैन, बजरिया-सवाईमाधोपुर, स्व. श्रीमती गुणमाला जी जैन की 06 फरवरी 2012 को प्रथम पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री मदनराज जी, गौतमचन्द जी, राजीव जी, श्रेय एवं हर्षित जी भण्डारी, जोधपुर, स्व. श्रीमती बिशनकंवर जी धर्मपत्नी स्व. श्री प्रेमराज जी भण्डारी का संथारापूर्वक 10 फरवरी को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्री पारसमल जी, हेमन्तकुमार जी, मनोजकुमार जी ओस्तवाल, बैंगलोर, पूज्य पिताजी स्व. श्री चम्पालाल जी ओस्तवाल की पुण्य-स्मृति में भेंट।

अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर को प्राप्त साभार

12000/- श्रीमती कंचन जी बाफना धर्मपत्नी श्री रतनलाल जी बाफना, 7, शंभुनाथ पंडित स्ट्रीट, अंजन एपार्टमेन्ट, कोलकाता (पं.बंगाल), छात्रवृत्ति हेतु।

1100/- श्री नवरतन जी-सुमन जी डागा, जोधपुर, अपनी सुपौत्री प्रियल (सुपुत्री श्री पुनीत-खुशबू डागा) के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1000/- श्री गजेन्द्र जी दुधेड़िया, मेड़तासिटी (राज.), संघ सहायतार्थ।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

2101/- श्री गौतमचन्द जी जैन 'डी.एस.ओ.' एवं श्रीमती विमला जैन, जयपुर, अपने सुपुत्र आदित्य संग सौ. कां. नेहा सुपुत्री श्री अशोक कुमार जी जैन, छबड़ा-कोटा का शुभ विवाह 12 फरवरी 2012 को सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

1101- श्री रामदयाल जी, उम्मेदचन्द जी जैन, बजरिया, सवाईमाधोपुर, चि. कनिष्क (निक्की) सुपुत्र श्री नमोकार जी जैन संग सौ.कां. कृति (रीना) सुपुत्री श्री धर्मचन्द जी जैन 'बूंदी वाले' निवासी अलीगढ़ के शुभ विवाहोपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्री नवरतन जी-सुमन जी डागा, जोधपुर, अपनी सुपौत्री प्रियल (सुपुत्री श्री पुनीत-खुशबू डागा) के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री रघुनाथ जी, महावीर प्रसाद जी जैन, जयपुर, चि. हेमन्त सुपुत्र श्री महावीर प्रसाद जी जैन संग सौ.कां. अंशिमा (बिट्टू) सुपुत्री श्री महेन्द्र कुमार जी जैन, अलीगढ़ के शुभ विवाहोपलक्ष्य में सादर भेंट।

500/- श्री जीतमल जी, नीरज कुमार जी जैन (एण्डवा वाले), सवाईमाधोपुर, चि.

आशीष का शुभ-विवाह सौ.कां. सीमा जी सुपुत्री श्री पारसचन्द जी जैन-कुश्तला से 16 जनवरी 2012 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री चंदनमल जी, सतीश कुमार जी पालरेचा-सी.ए., मुम्बई, सतीश जी के वैवाहिक जीवन के 23 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में उनके परिवार की तरफ से भेंट।

अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड को प्राप्त साभार

1100/- श्री नवरतन जी-सुमन जी डागा, जोधपुर, अपनी सुपौत्री प्रियल (सुपुत्री श्री पुनीत-खुशबू डागा) के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना
(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)
दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

120000/- श्री प्रेमचन्द जी हीरावत एवं परिवार, जयपुर।

12000/- डॉ. मंजुला जी जैन, जबलपुर।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलर शिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- ***श्री अशोक जी कवाड़,*** 33, *Montieth Road, Egmore, Chennai-600008 (Mob. 9381041097)*

आगामी पर्व

चैत्र कृष्णा 8	गुरुवार	15.03.2012	अष्टमी, भगवान आदिनाथ कल्याणक एवं आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 74 वां जन्म-दिवस
चैत्र कृष्णा 14	बुधवार	21.03.2012	चतुर्दशी
चैत्र कृष्णा 30	गुरुवार	22.03.2012	पक्खी
चैत्र शुक्ला 6	गुरुवार	29.03.2012	आयम्बिल ओली प्रारम्भ
चैत्र शुक्ला 8	शनिवार	31.03.2012	अष्टमी
चैत्र शुक्ला 13 एवं 14	गुरुवार	05.04.2012	भगवान महावीर जन्म-कल्याणक एवं चतुर्दशी
चैत्र शुक्ला 15	शुक्रवार	06.04.2012	पक्खी, आयम्बिल ओली पूर्ण
वैशाख कृष्णा 8	शुक्रवार	13.04.2012	अष्टमी
वैशाख कृष्णा 14	शुक्रवार	20.04.2012	चतुर्दशी, पक्खी
वैशाख शुक्ला 3	मंगलवार	24.04.2012	अक्षय तृतीया, आचार्य श्री कजोड़ीमल जी म.सा. की 133 वीं पुण्य तिथि

ईस्वी सन् 2012 के घोषित अहिंसक अगते

(जो प्रतिवर्ष प्रभावी है)

राजस्थान सरकार स्वायत्त शासन विभाग के नोटिफिकेशन संख्या एफ. 1/609/एल.ए.जी./49 दिनांक 14.01.50, 20.11.67, 12.09.74, 29.09.88 एवं एफ.-29/विविध/डी.एल.बी./2000/1394-1617 दिनांक 18.5.2000 एवं स्थानीय शासन विभाग 2001/7740 दिनाँक 28.08.02 के अनुसार ईस्वी सन् 2012 वर्ष में राज्य के घोषित अहिंसक अगताओं की माहवार सूची नीचे दी जा रही है। इन दिनों बूचड़खाने, कसाई खाने व पशुओं को कत्ल कर मांसादि का विक्रय करना कानूनन बंद है।

क्र.सं.	दिनांक	नाम अगता	वार	घोषित तिथि / दिनांक
1.	26 जनवरी	गणतन्त्र दिवस	गुरुवार	26 जनवरी
2.	30 जनवरी	गांधी निर्वाण दिवस	सोमवार	30 जनवरी
3.	20 फरवरी	महाशिवरात्रि	सोमवार	फाल्गुन कृ. 14
4.	01 अप्रेल	स्था. महा.ज्योतिराव जयंती	रविवार	चैत्र शु. 9
5.	01 अप्रेल	रामनवमी	रविवार	चैत्र शु. 9
6.	05 अप्रेल	भ.महावीर जयंती	गुरुवार	चैत्र शु. 13
7.	14 अप्रेल	स्था. अगता अम्बेडकर ज.	शनिवार	14 अप्रेल
8.	02 मई	आ.देवेन्द्रमुनि निर्वाण दिवस	बुधवार	वैशाख शु. 11
9.	06 मई	बुद्ध पूर्णिमा	रविवार	वैशाख शु. 15
10.	10 अगस्त	श्री कृष्ण जन्माष्टमी	शुक्रवार	भादवा कृष्णा 8
11.	15 अगस्त	स्वतन्त्रता दिवस	बुधवार	15 अगस्त
12.	19 सितम्बर	गणेश चतुर्थी	बुधवार	द्वि.भादवा शु. 4
13.	20 सितम्बर	ऋषि पंचमी	गुरुवार	द्वि.भादवा शु. 5
14.	29 सितम्बर	अनंत चतुर्दशी	शनिवार	द्वि.भादवा शु. 14
15.	02 अक्टूबर	गाँधी जयंती	मंगलवार	2 अक्टूबर
16.	16 अक्टूबर	स्था. अग्रसेन जयंती	मंगलवार	आसोज शु. 1
17.	10 नवम्बर	पेडा ग्यारस	शनिवार	कार्तिक कृ. 11
18.	12 नवम्बर	छोटी दीपावली	सोमवार	कार्तिक कृ. 13
19.	13 नवम्बर	दीपावली	मंगलवार	कार्तिक कृ.30
20.	28 नवम्बर	कार्तिक पूर्णिमा	बुधवार	कार्तिक शु. 15

नोट- 1. राजस्थान उच्च न्यायालय, जयपुर खण्डपीठ के निर्णय रिट याचिका सं. 1170/88 दिनांक 26.07.88 तथा श्रम विभाग के आदेश सं. एफ.11/9/श्रम/86 दिनांक 22.12.88 के अनुसार **प्रत्येक शुक्रवार को भी अहिंसक अगता घोषित** है।

2. अगतों की पालनार्थ कृपया संबंधित पालिकाधिकारी व जिला कलेक्टर, उपखण्ड अधिकारी, तहसीलदार व पुलिस अधीक्षक, थानाधिकारी व श्रम विभाग अधिकारी से सम्पर्क करें।

-अध्यक्ष/मंत्री, जीव दया मण्डल ट्रस्ट (रजि.),

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

क्रोध पर विजय प्राप्त करनी हो तो क्षमा से प्रतिकार करें।

– आचार्यश्री हस्ती

जोधपुर में प्लॉट, मकान, जमीन, फार्म हाउस
खरीदनें व बेचने हेतु सम्पर्क करें।

पद्मावती
डेवलोपर्स एण्ड प्रोपर्टीज

महावीर बोथरा
09828582391

नरेश बोथरा
09414100257

292, सनसिटी हॉस्पिटल के पीछे, पावटा, जोधपुर 342001 (राज.)
फोन नं. : 0291-2556767

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

जो संघ में भक्ति रखता है और शासन की उन्नति करता है, वह प्रभावक श्रावक है।

Opening Ceremony

of

BAGHMAR TOWER

C/o CHANARMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIER'S
S. RAJAN FINANCIERS

BAGHMAR TOWER
218, Ashoka Road 1, Mohalla, Mysore-570001
(Karanataka)

With Best Compliments from :
C. Sohanlal Budhraj Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurav, Akhilesh Baghmar
Tel. : 4265431 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

देने वाले निरभिमानी, पाने वाले हैं आभारी।
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति में, ज्ञानदान की महिमा न्यारी।।

With Best Compliments From :

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

23, Vada malai Street, Sowcarpet
Chennai-600079 (T.N.) Ph. 044-25292727
M. 9841091508

BRANCHES :

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph. 26251960

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph. 26243455/56

Balalji Motors
Chennai-50, Ph. 26247077

Padmavati Motors
Jafar Khan Peth, Chennai, Ph. 24854526

Gurudev

SURANA™
yes, the best TMT

DRI Plant

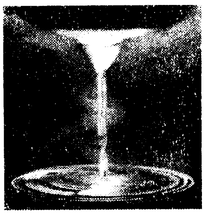
Electric Arc Furnace

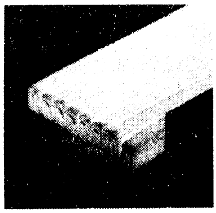
Billets

Rolling Mill

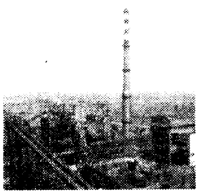
Captive Power Plant

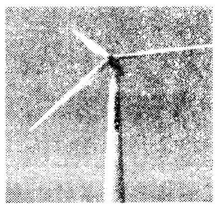
Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजानें के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त
रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल
के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHIVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

आओ प्रत्याख्यान करें

जीवन को निरन्तर उत्कर्ष की ओर ले जाने और गतिशील बनानें के लिए व्रत नियम का पालन अत्यन्त आवश्यक है। मन को वश में करने का एकमात्र उपाय है - **व्रत नियम**। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में छोटे-छोटे व्रत नियम को ग्रहण कर सफल बना सकें, इस उद्देश्य के लिए ही अ. भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद द्वारा "आओ प्रत्याख्यान करें" पुस्तक का प्रकाशन विगत वर्षों से किया जा रहा है। इस वर्ष भी किया गया है। आप अपने क्षेत्र में आओ प्रत्याख्यान करें पुस्तक मंगवाने के लिए सम्पर्क करें -
राजकुमार गोलेच्छा, पाली (9829020742), **मनोज कांकरिया,** जोधपुर (9414563597), **मनीष जैन,** चैन्नई (09543068382/044-42728476)

ज्ञान का दीया जलाइये, सहयोग के लिए आगे आइये
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति योजना का लाभ उठाकर आनन्द पाइये

आदरणीय रत्न बंधुवर

छात्रवृत्ति योजना में एक छात्र के लिए रू. 12000 के गुणक में दान राशि "Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund" योजना के नाम चैक/डापट (Donation to Gajendra Nidhi are Exempt u/s 80G of Income Tax Act, 1961) देने के लिए **निम्नांकित व्यक्तियों से सम्पर्क करें** –

1. अशोक कवाड़, चैन्नई (9381041097),
2. सुमतिचन्द मेहता पीपाड़ (9414462729),
3. महेन्द्र सुराणा, जोधपुर (9414921164),
4. बुधमल बोहरा,चैन्नई (9444235065),
5. राजकुमार गोलेच्छा,पाली (9829020742)
6. मनोज कांकरिया, जोधपुर (9414563597),
7. कुशलचन्द जैन, सवाई माधोपुर (9460441570)
8. प्रवीण कर्णावट, मुम्बई (9821055932),
9. जितेन्द्र डागा, जयपुर (9829011589)
10. महेन्द्र बाफना,जलगांव (9422773411),
11. हरीश कवाड़,चैन्नई (9500114455)

सहयोग राशि भेजने,योजना संबंधी अन्य जानकारी एवं आवेदन पत्र प्रेषित करने के लिए निम्न पत्ते पर सम्पर्क करें–

B.BUDHMAL BOHRA
No.-53,Erullappan street, Sowcarpet, Chennai - 600079 (T.N.)
Telefax No - 044-42728476

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये फिर क्यों न अपनायें धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)
098407 18382
2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
वर्ष : 69 ★ अंक : 03 ★ मूल्य : 10 रु.
10 मार्च, 2012 ★ चैत्र, 2068

Kalpataru
AURA

• Awarded Best Architecture (Multiple Units) at Asia Pacific Property Awards 2010 • A complex of multi-storeyed buildings • Luxurious 2 BHK & E3 homes • Two clubhouses with gymnasium, squash, half-basketball and tennis courts • Mini-theatre • Yoga room • Swimming pool • Multi-functional room • Spa • Landscaped garden and children's play area • Safety and security features

KALPA-TARU®

Site Address: LBS Marg, Ghatkopar (West), Mumbai - 400 086.
Head Office: 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East), Mumbai - 400 055.
Tel.: 022-3064 3065 • **Fax:** 022-3064 3131
Email: sales@kalpataru.com • **Visit:** www.kalpataru.com

All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. All project elevations are an artistic design. Conditions apply.

Kalpataru Limited is proposing, subject to market conditions and other considerations, to make a public issue of securities and has filed a Draft Red Herring Prospectus ("DRHP") with the Securities and Exchange Board of India (SEBI). The DRHP is available on the website of SEBI at www.sebi.gov.in and the respective websites of the Book Running Lead Managers at www.morganstanley.com/indiaofferdocuments, www.online.citibank.co.in/rhtm/citigroupglobalscreen1.htm, www.csinga.com, www.icicisecurities.com, www.nomura.com/asia/services/capital_raising/equity.shtml, www.idfccapital.com. Investors should note that investment in equity shares involves a high degree of risk and for details relating to the same, see 'Risk Factors' in the aforementioned offer documents. This communication is not for publication or distribution to persons in the United States, and is not an offer for sale within the United States of any equity shares or any other security of Kalpataru Limited. Securities of Kalpataru Limited, including its equity shares, may not be offered or sold in the United States absent registration under U.S. securities laws or unless exempt from registration under such laws.

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक – विरदराज सुराणा द्वारा दी डामयण्ड प्रिंटिंग प्रेस, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित व सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर – 302003 से प्रकाशित । सम्पादक – डॉ. धर्मचन्द जैन